SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

श्रुति

भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग

महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), केरल का कार्यालय, तिरुवनंतपुरम – 695001

कोवलम बीच, तिरुवनंतपुरम

जटायु अर्थ सेंटर, कोल्लम

हाउस बोट, आलप्पुषा

अटवि, कोन्नी ईको टूरिजम, पत्तनमतिट्टा

कुमरकम, कोट्टयम

पेरियार टाइगर रिज़र्व, तेक्कडी , इडुक्की

चीनी फिशिंग नेट, फोर्ट कोच्ची, एरणाकुलम

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा

Dedicated to Truth in Public Interest

श्रुति

हिंदी गृह पत्रिका

(33वां अंक)

(01 अप्रैल 2023 से 30 सितंबर 2023 तक)

भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग

महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), केरल का कार्यालय, तिरुवनंतपुरम – 695001

भारत सरकार

गृह मंत्रालय

राजभाषा विभाग

(सदैव ऊर्जावान : निरंतर प्रयासरत)

राजभाषा प्रतिज्ञा

भारतीय संविधान के अनुच्छेद 343 और 351 तथा राजभाषा संकल्प 1968 के आलोक में हम, केंद्र सरकार के कार्मिक यह प्रतिज्ञा करते हैं कि अपने उदाहरणमय नेतृत्व और निरंतर निगरानी से अपनी प्रतिबद्धता और प्रयासों से प्रशिक्षण और प्राइज़से अपने साथियों में राजभाषा प्रेम की ज्योति जलाये रखेंगे, उन्हें प्रेरित और प्रोत्साहित करेंगे; अपने अधीनस्थ के हितों का ध्यान रखते हुए अपने प्रबंधन को और अधिक कुशल और प्रभावशाली बनाते हुए राजभाषा हिंदी का प्रयोग, प्रचार और प्रसार बढ़ाएंगे। हम राजभाषा के संवर्द्धन के प्रति सदैव ऊर्जावान और निरंतर प्रयासरत रहेंगे।

जय राजभाषा !

जय हिंद !

पत्रिका परिवार

मुख्य संरक्षक
सुश्री अतूर्वा सिन्हा
महालेखाकार

मुख्य संपादक
श्री बाषा मोहम्मद बी
उप महालेखाकार (प्रशासन)

परामर्शदात्री समिति

श्री बिजू जोसफ
वरिष्ठ उप महालेखाकार

श्री एन दिनकरन
वरिष्ठ उप महालेखाकार

सुश्री सबिता बालकृष्णन
वरिष्ठ उप महालेखाकार

सुश्री उषा एस पिल्लई
उप महालेखाकार

संपादक मंडल

सुश्री राजेश्वरी के पी
वरिष्ठ लेखा अधिकारी

सुश्री के आर रोहिणी
हिंदी अधिकारी, संपादक

संपादन सहयोग

सुश्री एस संध्या
हिंदी अधिकारी

सुश्री गेलीकृष्णा सी जी
हिंदी अधिकारी

सुश्री निधि लक्ष्मी
वरिष्ठ हिंदी अनुवादक

श्री अंकित पाल
कनिष्ठ हिंदी अनुवादक

सुश्री प्रज्ञा मौर्या
कनिष्ठ हिंदी अनुवादक

रचनाकारों के विचारों से संपादक मंडल का सहमत होना आवश्यक नहीं है । रचनाओं की मौलिकता के लिए रचनाकार स्वयं उत्तरदायी होंगे ।

संपादक मंडल

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	रचना	रचनाकार
1.	हिंदी दिवस 2023 के अवसर पर माननीय गृह मंत्री जी का संदेश	
2.	संरक्षक की कलम से......	
3.	मुख्य संपादक की कलम से.......	
4.	संपादक मंडल की ओर से	
5.	ईंट का तकिया	श्री पारस कुमार शिवा, सहायक लेखा अधिकारी
6.	मून्नार की मोटर साइकिल यात्रा	श्री शाश्वत सागर, लेखाकार
7.	भारत आनंद की भूमि	सुश्री मंजू मोनिषा, सुपुत्री श्री एन दिनकरन
8.	धन्य है यह जीवन	सुश्री प्रभा एल, सहायक लेखा अधिकारी
9.	पर्यावरण दिवस	सुश्री श्रुति शर्मा, सहायक लेखा अधिकारी
10.	अरस्तू का तर्कशास्त्र	श्री पारस कुमार शिवा, सहायक लेखा अधिकारी
11.	चक्रवृद्धि	श्री अम्लान नसकर, सहायक लेखा अधिकारी
12.	एक अज्ञात द्वीप की यात्रा	सुश्री राजी राजन, सहायक लेखा अधिकारी
13.	एक छोटा कदम, बड़ा बदलाव	सुश्री श्रुति शर्मा, सहायक लेखा अधिकारी
14.	लत	सुश्री राजी राजन, सहायक लेखा अधिकारी
15.	भारत वर्ष में हिंदी भाषा का महत्व	सुश्री रेणुका जोशी, कनिष्ठ हिंदी अनुवादक
16.	दुनिया और भूमंडलीय तापन	श्री एम टी विजयन, सहायक लेखा अधिकारी
17.	मिठास कुछ अनमोल लमहों की कहानी	श्री एन दिनकरन, वरिष्ठ उप महालेखाकार
18.	बच्चों द्वारा मोबाइल फोन इस्तेमाल करने के नकारात्मक प्रभाव	सुश्री प्रीता वी एस, सहायक लेखा अधिकारी
19.	नई दिल्ली से केरल	श्री छोटूलाल मीणा, सहायक लेखा अधिकारी
20.	जीवन एक दौड है	सुश्री आरती कुमारी, सहायक लेखा अधिकारी
21.	संध्या का समय	सुश्री लक्ष्मिप्रिया टी जी, सहायक लेखा अधिकारी
22.	एक दोस्त के बिछडने का दर्द	सुश्री नलिनी मेनोन, सहायक लेखा अधिकारी
23.	रात एक सफर	श्री जिनू अब्रहाम, वरिष्ठ लेखाकार
24.	चटोरन	श्री आकाश मिश्रा, कनिष्ठ हिंदी अनुवादक
25.	हिंदी को मातृभाषा बनाएं	सुश्री रेणुका जोशी, कनिष्ठ हिंदी अनुवादक
26.	पदोन्नति और लक्ष्य	श्री जयकुमार भास्करन, व. लेखा अधिकारी
27.	सुवर्ण यादें	सुश्री जेसिंथा मोरिस, सहायक पर्यवेक्षक

हिंदी दिवस 2023

के अवसर पर

माननीय गृह मंत्री जी

का संदेश

राजभाषा विभाग

गृह मंत्रालय, भारत सरकार

सत्यमेव जयते

अमित शाह
गृह मंत्री एवं सहकारिता मंत्री
भारत सरकार

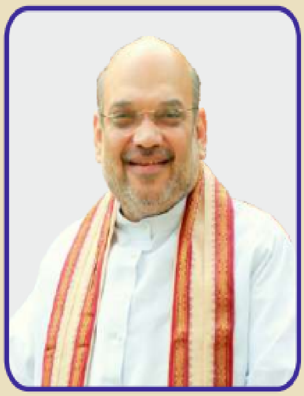

प्रिय देशवासियो!

आप सब को हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ।

भारत भाषिक विविधता का देश रहा है। दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र की भाषिक विविधता को एकता के सूत्र में पिरोने का नाम **'हिंदी'** है। हिंदी भाषा अपनी प्रवृत्ति से ही इतनी जनतांत्रिक रही है कि इसने भारतीय भाषाओं और बोलियों के साथ–साथ कई वैश्विक भाषाओं को यथोचित सम्मान देते हुए उनकी शब्दावलियों, पदों, वाक्य विन्यासों और वैयाकरणिक नियमों को आत्मसात किया है।

हिंदी भाषा ने स्वतंत्रता आन्दोलन के मुश्किल दिनों में देश को एकता के सूत्र में बाँधने का अभूतपूर्व कार्य किया। अनेक भाषाओं और बोलियों में बँटे देश में ऐक्य भावना से पूरब से पश्चिम और उत्तर से दक्षिण तक स्वतंत्रता की लड़ाई को आगे बढ़ाने में संवाद भाषा हिंदी की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही। इसीलिए, लोकमान्य तिलक हों, महात्मा गांधी हों, लाला लाजपत राय हों, नेताजी सुभाषचंद्र बोस हों, राजगोपालाचारी हों; हिंदी के शुरुआती पैरवीकारों में बहुसंख्यक उन प्रदेशों के लोग थे, जिनकी मातृभाषाएँ हिंदी नहीं थीं।

किसी भी देश की मौलिक सोच और सृजनात्मक अभिव्यक्ति सही मायनों में सिर्फ उस देश की अपनी भाषा में ही की जा सकती है। प्रसिद्ध साहित्यकार भारतेंदु हरिश्चन्द्र ने लिखा है कि, **"निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति कौ मूल।"** यानि कि, अपनी भाषा की उन्नति ही सभी प्रकार की उन्नति का मूल है। राष्ट्र की पहचान इस बात से भी होती है कि उसने अपनी भाषा को किस सीमा तक मजबूत, व्यापक एवं समृद्ध बनाया है। यही कारण है कि स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद संविधान निर्माताओं ने अनुच्छेद 343 द्वारा संघ की राजभाषा के रूप में हिंदी और लिपि के रूप में देवनागरी को अपनाया।

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में भारतीय भाषाओं को राष्ट्रीय से वैश्विक मंचों तक यथोचित सम्मान मिला है। हमारी सभी भारतीय भाषाएँ और बोलियाँ हमारी सांस्कृतिक धरोहर हैं।

अपनी भाषा में सुनी हुई अवांछनीय बातें भी बहुत बुरी नहीं लगती। कवि **विद्यापति** की शब्दावली में कहूँ तो **'देसिल बयना सब जन मिट्ठा'** यानि देशी भाषा सभी जनों को मीठी लगती है। गृह मंत्रालय का राजभाषा विभाग निरंतर प्रयत्नशील है कि शहद सामान मीठी भारतीय भाषाओं को आधुनिक तकनीक के माध्यम से अत्याधुनिक और वैज्ञानिक प्रयोग के अनुकूल उपयोगी बनाया जा सके।

सरकार और जनता के बीच भारतीय भाषाओं में संवाद स्थापित कर जनकल्याणकारी योजनाओं को प्रभावी तौर पर लागू किया जा सकता है। दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र जन–जन तक उनकी ही भाषा में उनके हित की बात पहुँचाकर आदर्श लोकतंत्र के निर्माण का सबसे अच्छा उदाहरण हो सकता है। राजभाषा विभाग ने इसी उद्देश्य से राजभाषा हिंदी के प्रयोग को सूचना प्रौद्योगिकी के माध्यम से सहज बनाने की दिशा में काम करते हुए स्मृति आधारित अनुवाद प्रणाली **'कंठस्थ'** का निर्माण और विकास किया है। फिजी में संपन्न 'विश्व हिंदी सम्मेलन' में **'न्यूरल मशीन ट्रांसलेशन'** के साथ इसके नए वर्जन (कंठस्थ 2.0) के मोबाइल ऐप का भी लोकार्पण भी किया गया है।

राजभाषा विभाग की एक नई पहल **'हिंदी शब्द सिंधु'** शब्दकोश का निर्माण है। इस शब्दकोश में संविधान की 8वीं अनुसूची में अधिसूचित भारतीय भाषाओं के शब्दों को शामिल कर इसे निरंतर समृद्ध किया जा रहा है। साथ ही, विभाग ने **'लीला हिंदी प्रवाह'** मोबाइल ऐप भी तैयार किया है, जिसे अपनाकर विभिन्न भाषा–भाषी 14 भारतीय भाषाओं के माध्यम से अपनी–अपनी मातृभाषाओं से स्तरीय हिंदी निःशुल्क सीख सकते हैं।

भाषा परिवर्तन का सिद्धांत यह कहता है कि भाषा जटिलता से सरलता की ओर जाती है। मेरे विचार से हिंदी के सरल और सुस्पष्ट शब्दों को कार्यालयी कामकाज में प्रयोग में लाना चाहिए। टिप्पणी, पत्राचार, ई–मेल, विज्ञप्ति आदि के लिए आम बोलचाल के शब्दों व वाक्यों के प्रयोग से हिंदी के प्रयोग का चलन बढ़ेगा।

हमारे लिए हिंदी का प्रश्न सिर्फ एक भाषा का प्रश्न नहीं, बल्कि राष्ट्रीय स्वाभिमान व सांस्कृतिक गौरव का विषय है। मुझे विश्वास है कि राजभाषा विभाग के उपरोक्त प्रयासों से सभी मातृभाषाओं को आत्मसात करते हुए लोकसम्मत भाषा हिंदी विज्ञानसम्मत व तकनीकसम्मत होकर संपन्न राजभाषा के रूप में स्थापित होगी।

पुनश्च, आप सब को हिंदी दिवस की अनंत शुभकामनाएं।

(अमित शाह)

नई दिल्ली,
14 सितंबर, 2023

आज़ादी का अमृत महोत्सव

G20
भारत 2023 INDIA
वसुधैव कुटुम्बकम्
ONE EARTH • ONE FAMILY • ONE FUTURE

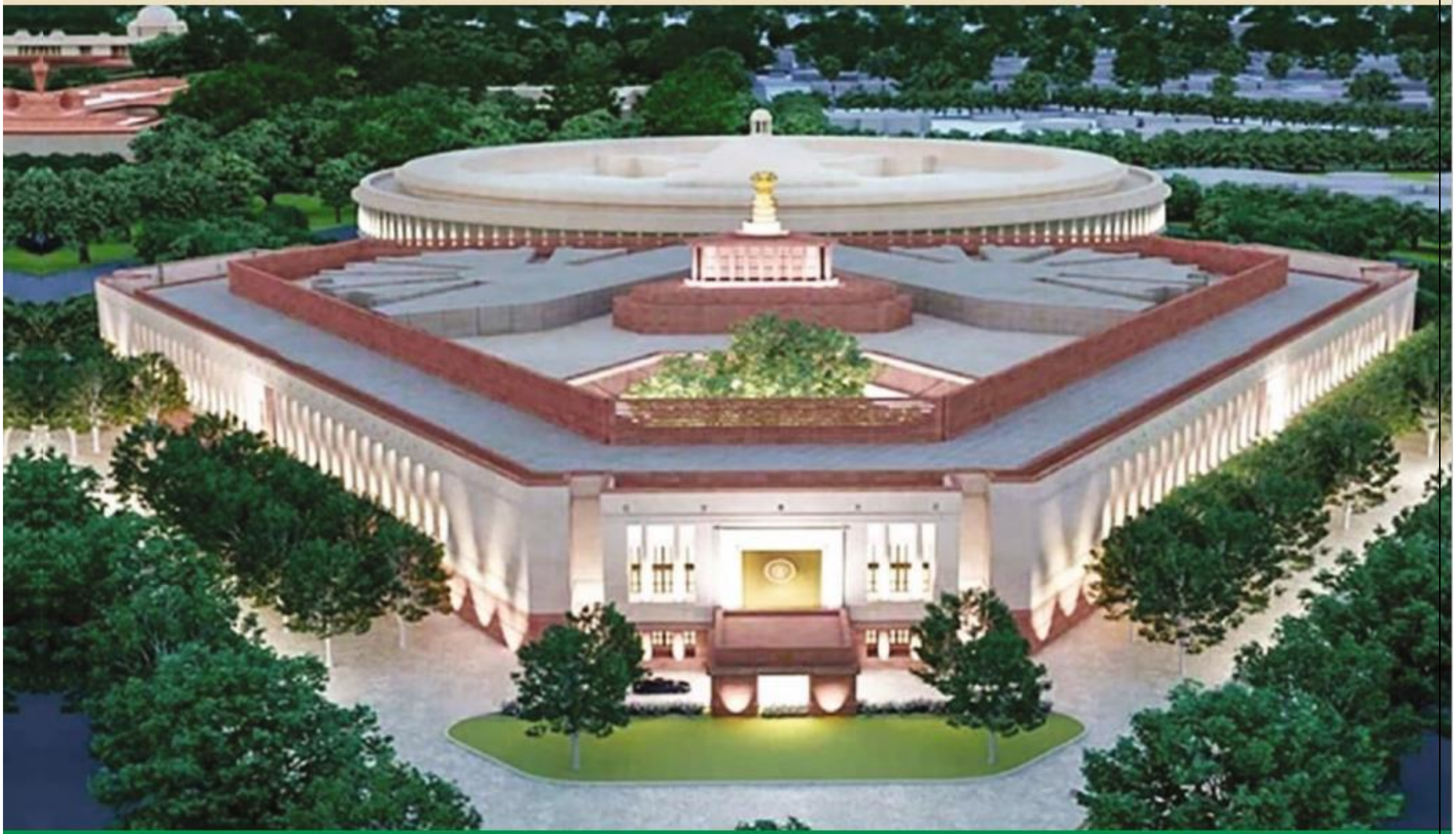

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

अतूर्वा सिन्हा
महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), केरल

संरक्षक की कलम से.................

कार्यालयीन हिंदी गृह पत्रिका 'श्रुति' के 33वें अंक का ई-प्रकाशन अत्यंत हर्ष का विषय है। राजभाषा नीति के अनुरूप राजभाषा हिंदी के प्रगामी प्रयोग व प्रसार को बढ़ावा देने के क्रम में यह पत्रिका एक महत्त्वपूर्ण प्रयास है। 'श्रुति' न केवल कार्मिकों की रचनात्मक अभिव्यक्ति को औपचारिक मंच प्रदान करने हेतु प्रतिबद्ध है, बल्कि इसके माध्यम से उन्हें अपनी उस सृजनात्मक क्षमता को विकसित करने का अवसर भी मिलता है जो कि दैनिक जीवन व विभागीय कामकाज़ की व्यस्तताओं के चलते शिथिल पड़ने लगती है। पत्रिका में प्रकाशित तमाम रचनाओं यथा लेखों, कहानियों व कविताओं आदि के माध्यम से सुधी पाठक न केवल लाभान्वित होंगे अपितु सहज भाव से हिंदी की ओर आकर्षित भी होंगे।

पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए संपादक मंडल व सभी रचनाकारों को अशेष शुभकामनाएँ।

(अतूर्वा सिन्हा)
महालेखाकार

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

बाषा मोहम्मद बी
उप महालेखाकार (प्रशासन)

मुख्य संपादक की कलम से.................

'श्रुति' के नवीनतम अंक के ई-प्रकाशन से मैं अत्यंत उत्साहित हूँ। कार्यालय में राजभाषा हिंदी के लिए अनुकूल वातावरण तैयार करने में पत्रिका की महती भूमिका है । उल्लेखनीय है कि हमारा कार्यालय 'ग' क्षेत्र में स्थित है, बावजूद इसके 'श्रुति' का प्रकाशन कोरोना काल जैसी विषम परिस्थितियों में भी अनवरत जारी रहा और आज यह 33वाँ अंक पाठकों के सम्मुख है। पत्रिका में हिंदी भाषी कार्मिकों के साथ ही हिंदीतर भाषी कार्मिकों की रचनाओं को पढ़कर हिंदी भाषा के प्रति बढ़ती सहजता व आकर्षण का ही बोध होता है।

पाठकों से आशा है कि वे न केवल पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं का आस्वादन करेंगे वरन् अपनी प्रतिक्रियाओं व सुझावों आदि से भी हमें अवगत कराएंगे।

पत्रिका के निरंतर व सफल प्रकाशन के लिए प्रयासरत सभी कार्मिकों को हार्दिक शुभकामनाएँ।

(बाषा मोहम्मद बी)
उप महालेखाकार (प्रशासन)

संपादक मंडल की ओर से ....

"न चाहूँ मान दुनिया में, न चाहूँ स्वर्ग को जाना
मुझे वर दे यही माता, रहूँ भारत पे दीवाना
करुँ मैं कौम की सेवा, पड़े चाहे करोड़ों दुख
अगर फ़िर जन्म लूँ आकर, तो भारत में ही हो आना
लगा रहे प्रेम हिंदी में, पढ़ूँ हिंदी लिखूँ हिंदी
चलन हिंदी चलूँ, हिंदी पहनना, ओढना, खाना
भवन में रोशनी मेरे रहे हिंदी चिरागों की
स्वदेशी ही रहे बाजा, बजाना, राग का गाना
लगें इस देश के ही अर्थ मेरे धर्म, विद्या, धन
करुँ मैं प्राण तक अर्पण यही प्रण सत्य है ठाना
नहीं कुछ गैर-मुमकिन है जो चाहो दिल से "बिस्मिल" तुम
उठा लो देश हाथों पर न समझो अपना बेगाना"

(राम प्रसाद बिस्मिल)

*महान स्वतंत्रता सेनानी, कवि, शायर और सर्वोपरि देश की आज़ादी के लिए अपने प्राणों की आहुति देने वाले महापुरुष श्री रामप्रसाद बिस्मिल जी की उपर्युक्त पंक्तियाँ देश के प्रति दीवानगी, हिंदी भाषा से प्रेम एवं स्वदेशी की भावना से ओतप्रोत है। ये पंक्तियाँ हर एक देश प्रेमी एवं हिंदी प्रेमी के लिए प्रेरणादायक हैं। हमारी भी यही आशा है कि हर बार भारत भूमि में ही जन्म लें और हिंदी से प्रेम सदैव बना रहे। इसी संकल्प के साथ हिंदी गृह पत्रिका **"श्रुति"** का यह नवीनतम अंक आप सभी सुधी पाठकों को सादर समर्पित है।*

हमें अत्यंत खुशी है कि हमारा कार्यालय लगातार पत्रिका के माध्यम से राजभाषा हिंदी की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए प्रयासरत है। पत्रिका के इस अंक में विविधता पूर्ण विषयों पर हिंदी भाषी एवं हिंदीतर भाषी लेखकों की रचनाएँ शामिल की गई हैं। इस पत्रिका ने हमारे कार्यालय में राजभाषा हिंदी के प्रचार प्रसार के साथ-साथ कार्मिकों को रचनात्मक मंच प्रदान करने में भी अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। पत्रिका के इस अंक को सफल बनाने में सहयोग करने वाले समस्त रचनाकारों को धन्यवाद।

*हम आशा करते हैं कि **"श्रुति"** का यह अंक आप सभी को पसंद आएगा तथा इसे पढ़ने के पश्चात् अपनी प्रतिक्रियाओं से आप हमारा उत्साह बढाएंगे तथा मार्गदर्शन करेंगे।*

संपादक मंडल

ईंट का तकिया

श्री पारस कुमार शिवा
सहायक लेखा अधिकारी

सूरज की पहली किरण पड़ते ही बोध हुआ कि रात का परदा हट गया है और एक नयी सुबह की शुरुआत हुई है। पक्षियों की चहचहाहट सुनकर नींद खराब हो जाती है, सुना है अमीर लोग इसे मधुर कहते हैं, शायद वे लोग कभी-कभार इन्हें सुनते होंगे वरना रोज सुबह यही सुनने को मिले तो शायद उनकी राय बदल जाए। नई सुबह, नया कचरा.... आज हो सकता है कोई सिक्का हाथ लग जाए या फिर कोई दबा कुचला नोट या पहनने लायक कोई मोजा......, एक मोजा तो कुछ दिनों पहले मिल गया था, वह मैंने अपने दाएं पैर में पहन लिया था ,दाएं पैर में ज्यादा ठंड लगती है, लोग अंगूठे से फटा मोजा अक्सर फेंक देते हैं।

कचरे के ढेर शहर में कई जगह है आज पूर्वी ढेर की तरफ जाने को जी चाहता है, वहां के रास्ते में एक इमारत है जहाँ मेरी उम्र के बच्चे अपने बोरे में किताबें भरकर ले जाते हैं। बोरा तो मेरे पास भी है पर इसमें किताबें नहीं हैं। वहाँ वे पढ़ना सीखते हैं मुझे पढ़ना तो नहीं आता पर मैं लिखे हुए का रंग बता सकता हूँ वह भैंस के रंग से मिलता है। जब भी मैं कुछ लिखा हुआ देखता हूँ मुझे रास्ते में आने वाले तबेले की याद आती है जहाँ भैंसे दूध के लिए हैं पर कूड़े के ढेरों पर भैंसों को नहीं देखा वहाँ तो सिर्फ गायें ही होती हैं।

अभी कल ही एक सज्जन ने आधा खाना खाकर बचा हुआ डब्बे में डाल दिया, उससे मेरे रात का काम हो गया। भला हो उस आदमी का। इसी तरह पिछली गर्मियों एक भले पुरुष ने अपने दस्ताने मुझे दिये थे पर दस्ताने गर्मी में भी काम आते हैं शायद उसे यह पता नहीं था, कचरा कुरेदते समय हाथ में काँच लगने से बचा लेते हैं। मुझे स्पष्ट रूप से याद है उसने क्या कहा था भगवान तुम्हारा भला करे। पर मेरा भगवान कौन है?..... मुझे कैसे पता चलेगा कौन अपना है और कौन पराया.... उसने मुझसे मेरा नाम भी पूछा तो मैंने बता

दिया.... गुलाब। उसने मुझे थोड़ा अजीब ढंग से देखा और कुछ सोच में पड़ गया। शायद मेरी प्रार्थना शैली पर विचार कर रहा था कि मैं हाथों को किस तरह रखकर अपने बनाने वाले को याद करता हूँ। मुझे तो जब कोई सिक्का मिलता है तो आसमान की तरफ देख लेता हूँ इस उम्मीद में कि फिर दोबारा कुछ मिल जाएगा।

गुलाब नाम के पीछे भी एक सज्जन का हाथ है, कुछ वर्ष पहले मेरे गालों को देखकर उन्होंने मुझे इस नाम से बुलाया मेरे दोस्त भी वहीं थे, तब से मेरा नाम गुलाब पड़ गया। नाम गुलाब है तो कुछ कांटे होना तो आम बात है। कुछ दिनों पहले मैं समोसे की खुशबू से खिंचा एक दुकान पर जा पहुँचा। मैं अपनी जेब से सिक्के निकालने ही वाला था उससे पहले ही एक चांटा मुझे मुफ्त में मिल गया उससे मेरा गाल और गुलाबी हो गया, शायद दुकानदार ने मुझमें ग्राहक नहीं देखा वरना वह ऐसा न करता।

आज पूर्वी कचरे के ढेर से मुझे बिंदू की याद आ गयी। वह यहीं रहती थी पर कुछ महीने पहले कुछ लोग उसे उठा कर ले गये। सुनने में आया है कि उसे अच्छा खाना पहनना और छत भी मिल रही है और साथ में नाचना और लाली पाउडर भी लगाना सिखा दिया। हमेशा की तरह यहाँ निम्मो पहले से ही अपना खाना ढूँढ़ रही है। वह बूढ़ी हो गयी है दूध नहीं देती तो शायद उसके मालिक ने उसे यहाँ छोड़ दिया। आज कचरे में कुछ खास नहीं मिला। फफूँद वाली ब्रेड, थोड़ा प्लास्टिक, कुछ पन्नियां.....इसे ही बेच दूंगा। ब्रेड से पेट भर जाता है मैंने थोड़ी ब्रेड निम्मो को भी दी। बड़े चाव से वह खा गयी। जब भी मुझे सड़क पर पड़ी कोई सब्जी या फल मिलता है तो अपने झोले में रख लेता हूँ। आज एक नई चीज हाथ लगी विद्यालय में किसी बच्चे का फटा बस्ता। अगर मैं इसे लेकर कल विद्यालय गया तो क्या मुझे वे अंदर जाने देंगें ?

लगता है जाने देंगे। जाते हुए सभी बच्चों के पास यह होता है तभी उन्हे अंदर प्रवेश मिलता है, उनके माँ-बाप के पास यह नहीं होता तो वह अंदर नहीं जा पाते। यह तो कल ही पता चलेगा। प्रवेश मिला तो सही नहीं तो सुबह-सुबह गाल और गुलाबी हो जाएगा। रात को सोते समय कहते हैं तकिये से अच्छी नींद आती है, अच्छा है मेरे पास भी तकिया है, थोड़ा सख्त है पर मेरा काम चल जाता है।

श्री शाश्वत सागर
लेखाकार

युगल या एकल के रूप में सवारी करने का यह उत्तम समय है -

एक आम कहावत है कि यात्रा से आपका दिमाग खुलता है। साल 2012 से ही मोटरसाइकिल टूरर होने के नाते मैंने यह कहावत अच्छी तरह परख ली है और मुझे इस पर पूरा विश्वास भी है। मैं आमतौर पर दोस्तों के समूह में या अपने राइडिंग ग्रुप के भाइयों के साथ मोटरसाइकिल टूर पर जाना पसंद करता हूं। ग्रुप के साथ सवारी करना मजेदार है, सुरक्षित है, कोई कभी ऊब नहीं सकता और बिल्कुल भी एकरसता नहीं होती। प्रत्येक पड़ाव एक मित्र से मुलाकात की तरह होती है, जहां परिचित लोग और करीबी हो जाते हैं और कभी-कभी एक बिल्कुल अजनबी, जिसे आप आज तक नहीं जानते थे, एक बेहद खास दोस्त बन जाता है। अब बात करते हैं ग्रुप राइडिंग के नुकसान के बारे में, जितना बड़ा ग्रुप होगा सफर की चाल उतनी ही धीमी होगी। मौज-मस्ती से भरे पड़ावों पर ठहराव लंबे हो जाते हैं और इसकी संभावना बहुत बढ़ जाती है कि आप कभी भी निर्धारित समय में गंतव्य तक नहीं पहुंच पाएंगे, चीजें तब और भी बदल जाएंगी जब आपको असल परेशानी का सामना करना पड़ेगा यानी जब किसी की मोटरसाइकिल की सर्विसिंग ठीक से न हुई हो और इस वजह से एक बिल्कुल अनजान इलाके में उसमें परेशानियाँ आने लगे और आश्चर्यजनक रूप से ग्रुप का एक बड़ा हिस्सा सोशल मीडिया के लिए फोटोशूट करने में व्यस्त हो, जबकि केवल कुछ ही लोग मोटरसाइकिल को ठीक करने में लगे हों। ऐसे में ग्रुप के लीडर और टेल राइडर को कठोर निर्णय लेने पड़ते हैं। जबकि अगर आप डूओ के रूप में सवारी कर रहे हैं तो सटीक रूप से चलना आसान हो जाता है, त्वरित निर्णय, कम स्टॉप और एक-दूसरे की मोटरसाइकिल की स्थिति पर नजर रखना और साथ ही साथ स्वास्थ्य की निगरानी करना भी आसान हो जाता है (हां, सोशल मीडिया के लिए कुछ तस्वीरें क्लिक करना अनिवार्य है, इसलिए एक पोज़ बनायें)। डूओ के नकारात्मक पहलू न के बराबर हैं क्योंकि आप जानते हैं कि दो एक कंपनी है।

अब बात करते हैं सोलो राइडिंग की। पेशेवर - आप अपने मालिक स्वयं हैं, अपनी समय-सीमा, गंतव्य, पड़ाव और ठहराव स्वयं तय करें। नकारात्मक पहलू - कम सुरक्षित, अपनी मोटरसाइकिल के बारे में कुछ यांत्रिक ज्ञान होना चाहिए और स्पेयर और आवश्यक उपकरण अपने साथ रखना चाहिए, यदि आप किसी अज्ञात इलाके में फंस गए हैं तो आप अपने दम पर हैं, अनुकूलन का कौशल होना चाहिए क्योंकि आप अपने सुविधा क्षेत्र से बाहर हैं।

मैं एक ऐसे राइडर की तलाश में था जिसकी वेवलेंथ मेरी जैसी ही हो और साथ में सफर करना मजेदार हो। फिर मेरे दोस्त प्रतीक कुमार हमारे कार्यालय में शामिल हो गए और 'द गॉड्स ओन कंट्री' केरल में मोटरसाइकिल चलाना मेरा एक उल्लेखनीय अनुभव बन गया।

योजना (यदि आप इसे कहते हैं, तो ठीक है) -

प्रतीक कुमार और शाश्वत सागर

23 दिसंबर 2020 को कार्यालय का एक नियमित दिन समाप्त होने वाला था, जब घड़ी में 5:30 बज रहे थे और मैं पार्किंग से अपनी मोटरसाइकिल पर अपने कमरे की ओर जा रहा था, प्रतीक ने मुझे रोका और घर जाते समय चाय की पेशकश की, बाद में चाय की दुकान पर उन्होंने मुझसे पूछा कि क्या 25 दिसंबर को मोटरसाइकिल की सवारी की जा सकती है। मैंने उनसे कहा कि पोनमुडी और वर्कला के अलावा किसी भी जगह मैं उनके साथ जुड़ूंगा। वह उस समय योजनाओं से बाहर था; हम 2018 में एक साथ गुरुडोंगमार झील उत्तर सिक्किम गए थे। मैंने सुझाव दिया कि चलो किसी हिल स्टेशन पर चलते हैं। केरल के इडुक्की जिले में वागमन और मून्नार नामक दो खूबसूरत जगहें हैं, हरी-भरी चाय और कॉफी के बागान वाली सड़कें, हेयरपिन मोड़ों से भरी हुई, सुंदर इडुक्की बांध और सर्दियों का मौसम जिसे हम त्रिवेन्द्रम में मिस कर रहे हैं। हम तैयार चाय के गिलास हाथ में लेकर उस चाय की दुकान की बेंच पर बैठे ये सब सपना देख रहे थे। इस बार प्रतीक खेल में आगे है, अचानक उसने अपना सेल फोन निकाला और वागमन और मून्नार में होटल खोजना शुरू कर दिया क्योंकि कल 24 तारीख है और परसों 25 तारीख है, पूरा केरल और भारत के कई हिस्सों से लोग मून्नार और वागमन का दौरा करेंगे। सर्वशक्तिमान ने हमें आशीर्वाद दिया और हमें दोनों स्थानों पर होटलों पर वास्तव में अच्छा सौदा मिला और आश्चर्यजनक रूप से हम दोनों ने पिछले सप्ताह अपनी मोटरसाइकिल की सर्विसिंग कराई, इसलिए धातु के घोड़े किसी भी समय दौड़ने के लिए तैयार हैं। घड़ी टिक-टिक कर रही है, रात के आठ बज चुके हैं और हमने कुछ भी पैक नहीं किया है। हमें सर्दियों के कपड़े, वर्षारोधी सूट, आवश्यक दवाएं और कुछ अन्य आवश्यक चीजें चाहिए। हम अपने कमरे में गए और अपने परिवारों को सूचित किया और रात का खाना खाने के बाद पैकिंग शुरू की जो मेरे मामले में 11:30 बजे समाप्त हुई और प्रतीक ने 1:00 बजे अपनी पैकिंग समाप्त की। मैंने उससे थोड़ी नींद लेने के लिए कहा क्योंकि सूर्यास्त से पहले वागमन पहुंचने के लिए हमें लगभग 200 कि.मी. की यात्रा करनी होती है, हमें

कुछ व्यस्त शहर के ट्रैफिक से गुजरना पड़ता है क्योंकि 24 तारीख को छुट्टी नहीं थी और 2018 के बाद से हम कभी भी मोटरसाइकिल की लंबी सवारी पर नहीं गए, इसलिए यह थकाने वाला होगा।

शुरुआत (दिन-1)

हम थके हुए थे और सोये हुए थे और यात्रा में डेढ़ घंटे की देरी हो गई है। सूरज पहले से ही चमकने लगा है और निश्चित रूप से यातायात व्यस्त हो गया है। हम अपनी मोटरसाइकिल में ईंधन भरवाने और टायर का दबाव जांचने के बाद सुबह 8:00 बजे चल पड़े। कषकूट्टम से हम दाहिनी ओर मुड़े और वेंजारामूडु की ओर बढ़े, रास्ते में हमने जटायु अर्थ कन्वेन्शन सेंटर देखा जो अभी भी निर्माणाधीन था और जनता के लिए खोला नहीं गया था। हमने सड़क किनारे एक ढाबे पर नाश्ता किया। लगभग 11:30 बजे हम गवी के वन चेक पोस्ट पर पहुँचे और गार्ड ने वन क्षेत्र में प्रवेश करने के हमारे अनुरोध को विनम्रतापूर्वक अस्वीकार कर दिया क्योंकि सुरक्षा कारणों से उस जंगल में दोपहिया वाहनों की अनुमति नहीं है। अब हम परेशानी में थे क्योंकि जिस जंक्शन से हम गावी वन चेकपोस्ट की ओर दाहिनी ओर मुड़े थे, वह वागमन की मुख्य सड़क की ओर लगभग 10 कि.मी. पीछे है। हमारे पास का पुलिस स्टेशन हमें जंगल के माध्यम से एक कम लोकप्रिय मार्ग से जाने का सुझाव देता है जहां सड़क का काम चल रहा था ताकि हमें जाने की अनुमति मिल सके। सड़क दो अवरोधों के बीच एक प्लास्टिक की कुर्सी से अवरुद्ध थी और कोई यह पूछने वाला नहीं था कि हमें प्रवेश करना चाहिए या नहीं, इसलिए मैंने कुर्सी हटा दी, और साहसिक कार्य जारी है। मुझे अपने कृत्य पर कभी पछतावा नहीं होगा क्योंकि सड़क उबड़-खाबड़, पथरीली, कहीं-कहीं खड़ी थी और पूरे 8 कि.मी. के डरावने सुंदर हिस्से में रोमांच के लिए बिल्कुल उपयुक्त थी और हमने इस मार्ग से लगभग 22 कि.मी. की दूरी बचा ली। फिर पहाड़ी सड़क शुरू होती है, हम उत्साह में अपने हेलमेट के अंदर चिल्ला रहे थे और एक-दूसरे के साथ मजाक कर रहे थे। मौसम बदल रहा था, आसमान में काले बादल छाने लगे थे। हम वागमन पहुँचने ही वाले थे और इसलिए निश्चिंत थे और सोचा कि इससे पहले कि बारिश आ जाए हम होटल पहुँच जाएँगे। ठीक है, मनुष्य इच्छाएँ करता है और भगवान निस्तारण करता है। मूसलाधार बारिश ऐसे ही शुरू हो गई, लगभग 30 सेकंड में प्रतीक भीग गया, मैंने बारिश को झेलने के लिए अपनी राइडिंग जैकेट को थोड़ा मजबूत कर लिया, लेकिन कवच टूटने वाला था। तभी चमत्कारिक ढंग से सड़क के अगले मोड़ पर चमत्कारी क्रॉस आध्यात्मिकता केंद्र और एक छोटा चैपल दिखाई दिया। हम वहां 15 मिनट के लिए रुके और बारिश से पूरा परिदृश्य धुल रहा था। हमने रेन गियर पहन लिए, जूते पहले से ही भीगे हुए हैं, दस्ताने पानी से भरे हुए हैं। कुछ अन्य व्यक्ति जो दोपहिया वाहन

पर यात्रा कर रहे थे, वे भी वहां रुक गए। आख़िरकार बारिश रुक गई, और हमारी सांसें अचानक थम गई, नहीं, यह ऊंचाई या पहाड़ की बीमारी नहीं थी, बहुत पहले किसी ने मुझसे कहा था कि अगर आप बारिश के बाद इडुक्की यात्रा कर रहे हों तो प्रकृति और अधिक सुंदर हो जाती है। सचमुच, परिदृश्य, चाय के बागानों और घाटी की सुंदरता को देखकर हम दोनों की सांसें थम गई थीं। हमने ढेर सारी तस्वीरें खींचीं और मेरे जैसा खाने का शौकीन भी दोपहर का खाना खाना भूल गया। हम चाय के लिए रुके और साथ में कुछ नाश्ता भी किया, फिर हम आधे घंटे की सवारी करके वागमन के प्रसिद्ध देवदार के जंगल तक पहुँचे। शांत और स्थिर वातावरण का हमने भरपूर आनंद लिया। फिर हमारे द्वारा बुक किए गए निर्दिष्ट होटल की ओर बढ़े। होटल पहुँचकर हमने सबसे पहला काम यह किया कि अपने गीले कपड़े बदले और चप्पलें पहनीं और बाहर घूमने निकल पड़े। वागमन एक छोटा सा गाँव है जिसे हम पैदल चलकर तय कर सकते हैं। वहां क्रिसमस की पूर्वसंध्या मनाई जा रही थी, हमने जुलूस देखा, घर गए, खाना खाया, अपने द्वारा खींची गई तस्वीरें साझा की और फिर सो गए।

वागमन मेडोज़ (दिन-2)

हालाँकि हम कल रात बहुत थके हुए थे, आश्चर्य की बात यह है कि मैं सुबह 5:30 बजे जल्दी उठ गया। हम तैयार हुए और अपनी मोटरसाइकिलें स्टार्ट करने के लिए नीचे गए, हम चिंतित थे क्योंकि वे बाहर खड़ी थीं लेकिन वे सुरक्षित थीं और निश्चित रूप से ठंडी थीं। मैंने पहले कभी फ्यूल इंजेक्शन्ड मोटरसाइकिल नहीं चलाई थी और मेरी कार्बोरेटेड होंडा यूनिकॉर्न के साथ हर सर्दियों की सवारी में कोल्ड स्टार्ट की समस्या का सामना करना पड़ता था। हालांकि, एक्सपल्स 200 एक अलग नस्ल साबित हुई, पहली बार स्टार्टर पर क्लिक किया और मोटरसाइकिल में जान आ गई। हम प्रसिद्ध वागमन घास के मैदानों की ओर चल पड़े, इतनी जल्दी वहाँ पहुँचना एक प्लस पॉइंट था क्योंकि वहाँ बिल्कुल भी भीड़ नहीं थी। हम प्रकृति की सुंदरता का आनंद लेते हुए, तस्वीरें खींचते हुए और यहां तक कि उन हरे-भरे घास के मैदानों पर अपनी पीठ के बल लेटकर समय बिताते हैं। यह एक अद्भुत अनुभव था। हम जल्दी से होटल वापस आये क्योंकि आज भी हमें मून्नार पहुंचना है और रास्ते में हमारी योजना प्रसिद्ध इडुक्की आर्क बांध देखने की थी। मैंने बांध को केवल चित्र में देखा है और यह सुंदर लग रहा है। होटल कैलाश में चाय और नाश्ता करने के बाद हमने इडुक्की बांध की ओर यात्रा शुरू की। सड़क खूबसूरत थी, 25 दिसंबर को कम ट्रैफिक था। लोग उत्सव के मूड में हैं और हमें दिशा के लिए गूगल मैप और रोड साइन पर विश्वास करना होगा। पहाड़ी रास्ते पर एक तरफ की 54 कि.मी. की यात्रा को तय करने में लगभग 2 घंटे लगे। हम खो गए थे और हमें लगभग 15 कि.मी. वापस जाना पड़ा। बांध का दृश्य अद्भुत था, सेल फोन की अनुमति नहीं थी और बांध क्षेत्र के अंदर तस्वीरें लेने की अनुमति नहीं थी, इसलिए हमने उन खूबसूरत तस्वीरों को जीवन भर के लिए अपनी स्मृति में अंकित कर

लिया। सूरज उग आया है, सुबह के 11 बजे हैं और हम सवारी कर रहे थे। जैसे-जैसे हम मून्नार के करीब पहुंचते हैं, ट्रैफिक भीड़भाड़ वाला हो जाता है, हमें ट्रैफिक साफ़ होने तक इंतज़ार करना पड़ता है। दोपहर 2:00 बजे हम मून्नार बस स्टैंड पहुँचे और वहाँ से हम लगभग 1 घंटे बाद होटल पहुँच पाए, सड़कें भीड़भाड़ वाली थीं और ट्रैफिक बहुत बढ़िया था, हम भूखे थे और शरीर को कुछ आराम की ज़रूरत थी। होटल पहुंचने के बाद मैं आश्चर्यचकित हो गया क्योंकि हमें दोनों तरफ कांच की दीवारों वाला पहाड़ी दृश्य दिखाता एक कमरा मिला (भगवान फिर से मुस्कुरा रहे थे), हमने दोपहर का भोजन करने का फैसला किया और मून्नार में घूमने से पहले कुछ आराम किया। पर्यटन स्थल भीड़ से भरे हुए हैं इसलिए वे उस दिन हमारे लिए वर्जित थे। क्रिसमस अद्भुत था लेकिन रात भयानक थी क्योंकि हमारे होटल के कमरों की कांच की दीवार में कुछ रिक्तता थी इसलिए हमें सुबह 2 बजे उन्हें ठीक करना पड़ा अन्यथा सोना लगभग असंभव था। तापमान 7 डिग्री था और हवा चल रही थी इसलिए ठंड अधिक महसूस हुई। थके शरीर को आरामदायक ठंडी नींद मिली।

मून्नार टॉप स्टेशन और दृश्य बिंदु (दिन-03)

चाय और हल्के नाश्ते के बाद हम जल्दी चल पड़े। मार्ग सुंदर था और मौसम वास्तव में ठंडा लग रहा था, पहाड़ की छाया ठंडे दर्रे की तरह महसूस हो रही थी जबकि धूप से ढकी सड़क हमें गरमाहट भरा आलिंगन दे रही थी। हम लगभग 45 मिनट में टोप स्टेशन पर पहुंच गए, रास्ते में हमने मट्टुपेट्टी बांध, इको प्वाइंट मून्नार, कुंडला बांध और कुंडला झील, येलापेट्टी व्यू प्वाइंट और चाय बागान व्यू प्वाइंट का दौरा किया। वहां लगभग 1 घंटा बिताया और फिर हम दोपहर का भोजन करने के लिए मून्नार शहर वापस आ गए और फिर हमने आनमुडी व्यू प्वाइंट, इरविकुलम राष्ट्रीय उद्यान और लक्कोम झरने मार्ग पर जाने की योजना बनाई, लेकिन उस दिन इस मार्ग पर एक भयानक ट्रैफिक जाम था, वाहन एक इंच भी आगे नहीं बढ़ रहे थे, पुलिस कर्मियों ने हमें बताया कि उस मार्ग पर कहीं एक दुर्घटना हुई थी और हम शहर वापस नहीं जा पा रहे थे, इसलिए हमने वह काम किया जो हमने उस दिन तक अपने जीवन में कभी नहीं किया था, हमने हमारी मोटरसाइकिलें सड़क के किनारे पार्क कर दी और उनके किनारे बैठ गये। हमें इस तरह सड़क के किनारे बेपरवाह बैठे देखकर पर्यटक आश्चर्यचकित रह गये। लगभग एक घंटे के बाद यातायात साफ़ हो गया और हम चाय संग्रहालय देखने के लिए मून्नार शहर वापस आ गए। संग्रहालय का अनुभव अद्भुत था। हमने शाम का समय शहर में घर के लिए चॉकलेट और मसाले खरीदने में बिताया। एक शानदार रात्रिभोज किया, हमारी पिछली यात्राओं के बारे में एक-दूसरे के साथ लंबी बातचीत की और शायद वह प्रतीक के साथ आखिरी यात्रा थी क्योंकि उसका स्थानांतरण कुछ महीनों में होने वाला था, भारी मन से सोया कि अगले दिन हमें

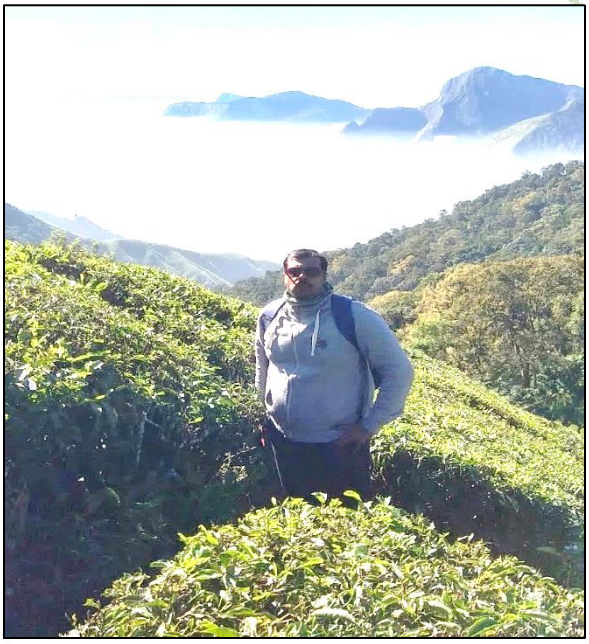

वापस अपने रास्ते त्रिवेन्द्रम के लिए निकलना होगा।

तिरुवनंतपुरम वापसी के रास्ते में (दिन-4)

हमारी मोटरसाइकिल यात्रा का आखिरी दिन पैकिंग और लंबी यात्रा के लिए तैयार होने के साथ शुरू हुआ। हम नाश्ता करने के बाद सुबह 8 बजे मून्नार से निकले, वापसी में हमने तोडुपुषा-पाला मार्ग लिया, दोपहर का भोजन पत्तनमतिट्टा में किया और शाम की चाय कोल्लम में ली। वापसी की यात्रा उबाऊ, थका देने वाली और नीरस थी क्योंकि यातायात बहुत बढ़ गया था, तापमान गर्म हो गया था और हम उदास थे। हम शाम 7:30 बजे घर पहुँचे।

इसके बाद से प्रत्येक मोटरसाइकिल टूर एक नई टूर योजना के साथ समाप्त होता है क्योंकि प्रत्येक टूर समाप्त होने पर हम दुखी हो जाते हैं। हिंदी में एक प्रसिद्ध गीत पंक्ति है, "सफ़र ख़ूबसूरत है मंजिल से भी"।

भारत, आनंद की भूमि

सुश्री मंजू मोनिषा
सुपुत्री श्री एन दिनकरन
वरिष्ठ उप महालेखाकार

भारत कई धर्मों का घर है, जिनमें हिंदू धर्म, इस्लाम धर्म, ईसाई धर्म, सिख धर्म, बौद्ध धर्म, जैन धर्म और कई अन्य शामिल हैं। प्रत्येक धार्मिक समुदाय अपने स्वयं के त्योहारों का जश्न मनाता है, जो उनसे संबंधित विश्वासों और सांस्कृतिक विरासत में गहराई से निहित हैं। भारत, जिसे अक्सर "त्योहारों की भूमि" कहा जाता है, एक ऐसा देश है जो संस्कृतियों, परंपराओं और धर्मों की समृद्ध विरासत का दावा करता है। यह विविधता वर्ष भर मनाए जाने वाले असंख्य त्योहारों के माध्यम से स्पष्ट रूप से व्यक्त होती है। प्रत्येक त्योहार अपने अनूठे रीति-रिवाजों, मान्यताओं और रीति-रिवाजों को साथ लेकर चलता है, जो भारतीय समाज की बहुलवादी और समावेशी प्रकृति को दर्शाते हैं। हिंदू धर्म, भारत में प्रमुख धर्म होने के कारण, बहुत सारे त्योहारों को जन्म देता है। यह निबंध भारत की जीवंत त्योहार संस्कृति पर प्रकाश डालेगा और यह देश कैसे विविधता में एकता के प्रमाण के रूप में कार्य करता है।

भारत के त्योहारों में संस्कृति की सुंदरता विभिन्न धार्मिक और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के लोगों को एक साथ लाने की क्षमता में निहित है। विविधता के बावजूद, त्योहार अक्सर विभिन्न समुदायों के बीच एकता और समझ को बढ़ावा देने वाले पुल के रूप में काम करते हैं। यह सांप्रदायिक सद्भाव प्रमुख त्योहारों के दौरान सबसे अधिक स्पष्ट होता है, जब घर सजावट से जगमगाते हैं और लोग बधाइयां और मिठाइयां साझा करते हैं। त्योहार सांस्कृतिक आदान-प्रदान और आपसी सम्मान के लिए भी एक मंच प्रदान करते हैं। त्योहार सांस्कृतिक परंपराओं को संरक्षित करने और उन्हें भावी पीढ़ियों तक पहुँचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। वे भारत की समृद्ध विरासत और इतिहास के जीवंत प्रमाण के रूप में काम करते हैं। त्योहारों के माध्यम से, बच्चे अपनी जड़ों, अपने पूर्वजों की कहानियों और सदियों से संजोए गए मूल्यों के बारे में सीखते हैं।

दिवाली: रोशनी और खुशियों का त्योहार

दिवाली, जिसे रोशनी के त्योहार के रूप में भी जाना जाता है, हिंदू धर्म में सबसे महत्वपूर्ण और पसंदीदा त्योहारों में से एक है। यह पूरे भारत में अत्यधिक उत्साह और उमंग के साथ मनाया जाता है। यह त्योहार अंधकार पर प्रकाश, बुराई पर अच्छाई और अज्ञान पर ज्ञान की विजय का प्रतीक है। दिवाली की उत्पत्ति का पता हजारों साल प्राचीन भारत में लगाया जा सकता है। इस त्योहार की जड़ें विभिन्न पौराणिक और

ऐतिहासिक घटनाओं में हैं, लेकिन सबसे प्रमुख कहानियों में से एक भगवान राम की अपनी पत्नी सीता और भाई लक्ष्मण के साथ राक्षस राजा रावण को हराने के बाद अयोध्या राज्य में वापसी की है। अयोध्या के लोगों ने उनके मार्ग को रोशन करने और उनकी सुरक्षित वापसी का जश्न मनाने के लिए तेल के दीपक जलाकर उनका स्वागत किया। यह घटना धर्म और सदाचार की जीत का प्रतीक है। दिवाली में घरों, सड़कों और सार्वजनिक स्थानों को चमकदार रोशनी, लालटेन और मोमबत्तियों से रोशन करते हैं। यह परंपरा अंधकार को दूर करने और सकारात्मकता, समृद्धि और आशा की शुरुआत का प्रतीक है। घरों को सजाते अनगिनत दीयों को देखना एक अद्भुत माहौल बनाता है, जिससे समुदायों के भीतर गर्मजोशी और एकता की भावनाएं पैदा होती हैं। दिवाली का एक और अभिन्न पहलू उत्सव के दौरान व्यक्तियों द्वारा पहनी जाने वाली जीवंत और रंगीन पोशाक है। पारंपरिक भारतीय कपड़े जैसे महिलाओं के लिए साड़ी और पुरुषों के लिए कुर्ता-पायजामा या धोती, अक्सर लाल, पीले और हरे जैसे चमकीले और शुभ रंगों में ये पोशाकें न केवल उत्सव के दृश्य को बढ़ाती हैं बल्कि गहरा सांस्कृतिक महत्व भी रखती हैं।

छोटे बच्चों के लिए, दिवाली उत्साह और आश्चर्य की भावना से भरा एक जादुई समय है। पटाखे फोड़ने, घरों को सजाने और बड़ों से उपहार प्राप्त करने की आशा उनके दिलों को असीम खुशी से भर देती है। दिवाली से पहले के दो से तीन दिनों में बहुत सारी गतिविधियाँ होती हैं, जिसमें परिवार साफ-सफाई, सजावट और विशेष भोजन तैयार करने के लिए एक साथ आते हैं। जो लोग 90 के दशक में बड़े हुए, उनके दिलों में दिवाली एक खास जगह रखती है। यह वह समय था जब टेलीविजन चैनल युवा दर्शकों के लिए फिल्मों और कार्यक्रमों की एक विशेष शृंखला तैयार करते थे। अक्सर प्रिय पात्रों और दिल को छू लेने वाली कहानियों वाली ये फिल्में उत्सव में उत्साह की एक अतिरिक्त परत जोड़ देती है। टेलीविजन के आसपास एकत्रित परिवारों को हँसी-खुशी साझा करते हुए देखने से कई लोगों के लिए स्थायी यादें बन गईं। उन लोगों के लिए जिन्होंने 90 के दशक के बच्चे के रूप में दिवाली का अनुभव किया था, त्योहार से जुड़ी पुरानी यादें जादू की एक अतिरिक्त परत जोड़ती हैं। जैसा कि हम साल-दर-साल दिवाली मनाते रहते हैं, आइए हम उन मूल्यों को याद रखें जो इसका प्रतिनिधित्व करते हैं और उन यादों को संजोते हैं जो यह पैदा करती है।

पोंगल: कृतज्ञता और उत्सव की फसल

पोंगल, दक्षिण भारतीय राज्य तमिलनाडु में मनाया जाने वाला एक पारंपरिक त्योहार है, जो चार दिवसीय फसल उत्सव है। यह त्योहार अत्यधिक सांस्कृतिक और कृषि संबंधी महत्व रखता है। यह वह समय है जब परिवार प्रकृति के तत्वों, विशेषकर सूर्य, गायों और किसानों के प्रति आभार व्यक्त करने के लिए एक साथ आते हैं। पहला दिन, जिसे भोगी के नाम से जाना जाता है, सफाई और नवीनीकरण का दिन है। पोंगल का त्योहार भोगी से शुरू होता है, जो सफाई और शुद्धि के लिए समर्पित है। परिवार अपने घरों को साफ करने और पुराने और अप्रयुक्त सामानों को त्यागने के लिए एक साथ आते हैं। भोगी का मुख्य आकर्षण अतीत को त्यागने और नए का स्वागत करने के प्रतीकात्मक संकेत में त्याग दी गई

वस्तुओं को जलाने की परंपरा है। ऐसा माना जाता है कि यह कार्य घर से नकारात्मकता को दूर करता है और सकारात्मक ऊर्जा लाता है, जिससे एक नई शुरुआत के लिए मंच तैयार होता है। दूसरा दिन तैपोंगल है। यह कृषि समृद्धि में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले सूर्य देव के प्रति आभार व्यक्त करने का दिन है और यह त्योहार का मुख्य दिन है। परिवार अपने आंगनों में इकट्ठा होते हैं और एक विशेष पकवान तैयार करते हैं जिसे "पोंगल" भी कहा जाता है, जो गुड़, घी काजू के साथ पकाया जाने वाला एक मीठा चावल का व्यंजन है। भरपूर फसल और आने वाले समृद्ध वर्ष की प्रार्थना के साथ यह व्यंजन सूर्य देव को अर्पित किया जाता है।

तीसरा दिन माट्टुपोंगल के नाम से जाना जाता है, जो मवेशियों और किसानों के सम्मान का दिन है। यह दिन कृषि में अभिन्न भूमिका निभाने वाले मवेशियों की सराहना दिखाने के लिए समर्पित है। गायों, बैलों और अन्य पशुओं को सजावटी सामानों से सजाया जाता है और विशेष भोजन दिया जाता है। किसान कृषि प्रक्रिया में अपने अमूल्य योगदान के लिए अपने पशुधन के प्रति आभार व्यक्त करते हैं। यह दिन उन मेहनती किसानों को श्रद्धांजलि के रूप में भी कार्य करता है जो सफल फसल सुनिश्चित करने के लिए अथक परिश्रम करते हैं। 'जल्लिक्कट्टु' माट्टु पोंगल के एक भाग के रूप में आयोजित किया जाने वाला खेल है। 'जल्लिक्कट्टु' शब्द 'कैली' (सिक्के) और 'कट्टु' (टाई) से बना है जिसका अर्थ है कि बैल के सींगों पर सिक्कों का एक बंडल बांधा जाता है। कई मानव प्रतिभागी, बैल की पीठ पर बड़े कूबड़ को दोनों हाथों से पकड़ने का प्रयास करते हैं और उस पर लटक जाते हैं जबकि बैल भागने का प्रयास करता है। प्रतिभागी बैल को रोकने का प्रयास करते हुए यथासंभव लंबे समय तक कूबड़ को पकड़कर रखते हैं। कुछ मामलों में, प्रतिभागियों को बैल के सींगों पर लगे झंडे हटाने के लिए काफी लंबी सवारी करनी होगी। 'जल्लिक्कट्टु' आम तौर पर भारतीय राज्य तमिलनाडु में प्रचलित है। मूलतः यह कृषक समुदाय के लिए अपने शुद्ध नस्ल के देशी बैलों को संरक्षित करने का एक पारंपरिक तरीका बन गया है, जिनका उपयोग अन्यथा केवल मांस व खेतों की जुताई के लिए किया जाता है।

चौथा दिन, कानुम पोंगल, पोंगल त्योहार का अंतिम दिन है, जिसका उद्देश्य परिवारों को पुनर्मिलन के लिए एक साथ लाना, खुशियों का आदान- प्रदान करना और शानदार दावतों का आनंद लेना है। यह वह समय है जब लोग रिश्तेदारों से मिलते हैं, बड़ों से आशीर्वाद लेते हैं और विभिन्न मनोरंजक गतिविधियों में शामिल होते हैं। यह दिन उन संबंधों को मजबूत करता है जो परिवारों और समुदायों को बांधते हैं, एकता और अपनेपन की भावना को बढ़ावा देते हैं। पारिवारिक बंधन और सामुदायिक उत्सव पोंगल का गहरा सांस्कृतिक और कृषि संबंधी महत्व है। यह पृथ्वी की उदारता का उत्सव है, मेहनतकश किसानों को श्रद्धांजलि है, और जीवन को बनाए रखने वाले प्रकृति के तत्वों के प्रति आभार व्यक्त करता है। यह त्योहार एकता, समुदाय जीवन और

फसल की चक्रीय प्रकृति की भावना का प्रतीक है। जैसे-जैसे परिवार एक साथ आते हैं, वे न केवल प्रकृति की प्रचुरता का आनंद लेते हैं बल्कि उन बंधनों को भी मजबूत करते हैं जो उन्हें एक साथ रखते हैं।

गणेश चतुर्थी: बाधाओं को दूर करने वाला उत्सव

गणेश चतुर्थी, जिसे विनायक चतुर्थी के नाम से भी जाना जाता है, एक हिंदू त्योहार है, जो पूरे भारत में बड़े उत्साह और भक्ति के साथ मनाया जाता है। यह हाथी के सिर वाले पूज्य देवता भगवान गणेश के जन्म का प्रतीक है, जिन्हें बाधाओं को दूर करने वाला और सौभाग्य का अग्रदूत माना जाता है। गणेश चतुर्थी हिंदुओं के लिए अत्यधिक आध्यात्मिक और सांस्कृतिक महत्व रखती है। भगवान गणेश को ज्ञान, बुद्धि और समृद्धि का अवतार माना जाता है। उन्हें कला और विज्ञान के संरक्षक और जीवन की बाधाओं के माध्यम से व्यक्तियों का मार्गदर्शन करने वाली दिव्य शक्ति के रूप में पूजा जाता है। यह त्योहार विपरीत परिस्थितियों पर ज्ञान और सद्गुण की विजय का प्रतीक है। उत्सव घरों, मंदिरों और सामुदायिक पंडालों में खूबसूरती से तैयार की गई गणेश मूर्तियों की स्थापना के साथ शुरू होता है। जटिल सजावट से गढ़ी गई ये मूर्तियाँ विभिन्न सामग्रियों जैसे मिट्टी, प्लास्टर ऑफ पेरिस, या हल्दी और चंदन जैसी पर्यावरण अनुकूल सामग्री से बनाई जाती हैं। एक बार स्थापित होने के बाद, मूर्ति को प्रार्थना, भजन और प्रसाद के साथ पवित्र किया जाता है। भक्त ज्ञान, सफलता और अपने प्रयासों में बाधाओं को दूर करने के लिए भगवान गणेश का आशीर्वाद मांगते हैं। पूरे त्योहार के दौरान, भक्त भगवान गणेश का सम्मान करने के लिए दैनिक आरती और पूजा करते हैं। मोदक, फल और फूलों का प्रसाद अत्यंत भक्तिभाव से चढ़ाया जाता है। हाल के वर्षों में, मूर्तियों के लिए गैर-बायोडिग्रेडेबल सामग्रियों के उपयोग के पर्यावरणीय प्रभाव के बारे में जागरूकता बढ़ रही है। कई समुदायों ने पारिस्थितिक क्षति कम करने के लिए मिट्टी की मूर्तियों और प्राकृतिक रंगों का चयन करते हुए पर्यावरण-अनुकूल उत्सवों का चयन किया है। यह एक ऐसा त्योहार है जो भौगोलिक सीमाओं से परे, सभी उम्र के लोगों को प्रभावित करता है। गणेश चतुर्थी के उत्सव पर भक्त न केवल भगवान गणेश का आशीर्वाद चाहते हैं, बल्कि इस विश्वास में भी सांत्वना पाते हैं कि विश्वास, दृढ़ता और एकता से बाधाओं को दूर किया जा सकता है।

क्रिसमस: खुशी, विश्वास और एकजुटता का उत्सव

क्रिसमस विश्व स्तर पर मनाया जाने वाला एक त्योहार है जो अपार सांस्कृतिक, धार्मिक और सामाजिक मान्यताओं से जुड़ा है। यह ईसा मसीह के जन्म की याद दिलाता है, जो ईसाई धर्म का केंद्र है, और विभिन्न पृष्ठभूमि के लोगों द्वारा मनाए जाने वाले एक उत्सव के अवसर के रूप में विकसित हुआ है। क्रिसमस मुख्य रूप से ईसा मसीह का जन्म है, जिन्हें ईसाई ईश्वर का पुत्र और मानवता के रक्षक मानते हैं, अपनी धार्मिक जड़ों से परे, क्रिसमस प्रेम, करुणा और निस्वार्थता के सार्वभौमिक मूल्यों का प्रतीक है। यह यीशु की शिक्षाओं को प्रतिबिंबित करते हुए, दूसरों के प्रति दयालुता और उदारता बढ़ाने के लिए एक अनुस्मारक के रूप में कार्य

करता है। क्रिसमस का मौसम आगमन के साथ शुरू होता है, जो चार सप्ताह की अवधि 25 दिसंबर तक चलता है। यह यीशु के जन्म के प्रति चिंतन, तैयारी और प्रत्याशा का समय है। आगमन कैलेंडर और पुष्पांजलि लोकप्रिय प्रतीक हैं जिनका उपयोग दिनों को चिह्नित करने के लिए किया जाता है। उपहारों का आदान-प्रदान एक पोषित परंपरा है यह परिवार और दोस्तों के लिए प्यार और प्रशंसा का संकेत है। सांता क्लॉज़, एक प्रसिद्ध व्यक्ति, उपहार देने से जुड़े हैं और ऐसा माना जाता है कि बच्चे क्रिसमस की पूर्व संध्या पर उपहार वितरित करते हैं।

दशहरा: बुराई पर अच्छाई की जीत

दशहरा, जिसे विजयादशमी के नाम से भी जाना जाता है, एक महत्वपूर्ण हिंदू त्योहार है, जो पूरे भारत में बड़े उत्साह के साथ मनाया जाता है। कुछ क्षेत्रों में, दशहरा देवी दुर्गा को समर्पित नौ रातों के त्योहार, नवरात्रि के अंत का भी प्रतीक है। ऐसा माना जाता है कि यह वह समय था जब देवी ने भैंसे राक्षस महिषासुर के खिलाफ युद्ध छेड़ा था और अंततः उसे परास्त किया था। यह विजय दुष्टता, छल और बुराई पर धार्मिकता, सदाचार और सत्य की अंतिम विजय का प्रतीक है। दशहरे के पहले नौ दिनों को नवरात्रि के रूप में मनाया जाता है, जिसके दौरान भक्त देवी दुर्गा के विभिन्न रूपों की पूजा करते हैं। प्रत्येक दिन विशेष प्रार्थनाओं और अनुष्ठानों के साथ देवी की एक विशिष्ट अभिव्यक्ति को समर्पित है।

कुछ लोगों का यह भी मानना है कि नवरात्रि भगवान राम के बारे में है, जिन्होंने हनुमान और वानर सेना सहित अपने वफादार सहयोगियों की सहायता से शक्तिशाली और अत्याचारी राक्षस राजा रावण को हराया था। इसलिए, उत्तरी राज्यों में समुदाय नाट्य प्रदर्शन करते हैं जिन्हें रामलीला के नाम से जाना जाता है। ये नाटक भगवान राम के जीवन की कहानी बताते हैं, जिसका समापन दसवें दिन रावण के साथ उनके युद्ध के नाटकीय चित्रण में होता है। विजयादशमी की शाम को, सार्वजनिक समारोहों में रावण, उसके भाईयों मेघनाद और कुंभकर्ण के पुतलों को आग लगा दी जाती है। यह अनुष्ठान बुरी शक्तियों के विनाश और अच्छाई की जीत का प्रतीक है।

कुछ क्षेत्रों में, विशेष रूप से दक्षिण भारत में, दशहरे का नौवां दिन औजारों, उपकरणों और वाहनों के सम्मान के लिए समर्पित है। इसे आयुध पूजा के नाम से जाना जाता है। श्रमिक अपनी आजीविका में उनके योगदान के सम्मान के संकेत के रूप में अपने औजारों की पूजा करते हैं। नौ दिनों को 3 भागों में विभाजित किया गया है और पहले तीन दिन शक्ति और ऊर्जा की देवी दुर्गा को समर्पित हैं। अगले तीन दिन, हम लक्ष्मी या सूर्य की पूजा करते हैं, जो हमें धन, जुनून या भौतिक उपहार देती हैं और अंतिम तीन दिन सरस्वती को समर्पित हैं, जिनकी पूजा ज्ञान प्राप्त करने के लिए की जाती है। उत्तर भारत में, अधिकांश लोग तीन देवियों अर्थात् माँ दुर्गा, लक्ष्मी और सरस्वती के प्रति अपनी कृतज्ञता व्यक्त करने के लिए पूरे नौ दिनों तक उपवास करते हैं।

जन्माष्टमी, कृष्ण का जन्मदिन

जन्माष्टमी, जिसे कृष्ण जन्माष्टमी या गोकुलाष्टमी के नाम से भी जाना जाता है, एक हिंदू त्योहार है जो हिंदू धर्म में सबसे प्रतिष्ठित देवताओं में से एक, भगवान कृष्ण के जन्म का जश्न मनाता है। पूरे भारत में बड़ी श्रद्धा और उत्साह के साथ मनाई जाती है, जन्माष्टमी। भगवान कृष्ण, ब्रह्मांड के संरक्षक भगवान विष्णु के आठवें अवतार माने जाते हैं। भगवान कृष्ण का जीवन और उनकी शिक्षाएँ हिंदू धर्मग्रंथ भगवद्गीता में निहित हैं, जो उन्हें हिंदू धर्म में एक केंद्रीय व्यक्ति बनाता है। भगवान कृष्ण के बचपन और युवावस्था को उनके चंचल और शरारती स्वभाव के लिए जाना जाता है। मक्खन चुराना (माखन चोर) और बांसुरी बजाना (मुरलीधर) सहित उनकी मनमोहक हरकतें, दिव्य प्रेम और भक्ति के अवतार का प्रतिनिधित्व करती हैं। जन्माष्टमी भगवान कृष्ण की दार्शनिक शिक्षाओं पर भी जोर देती है, विशेष रूप से जो भगवद्गीता में बताया गया है। कुरुक्षेत्र के युद्ध के मैदान में अर्जुन को दिए गए उनके प्रवचन गहन ज्ञान का स्रोत हैं, जो व्यक्तियों का, उनकी आध्यात्मिक यात्राओं पर मार्गदर्शन करते हैं।

मंदिरों को खूबसूरती से सजाया जाता है, और भक्त भगवान को विभिन्न प्रकार की मिठाइयां और फल चढ़ाते हैं। माना जाता है कि भगवान कृष्ण का जन्म आधी रात को हुआ था इसलिए मुख्य उत्सव दिन के शुरुआती घंटों के दौरान होता है। भक्त भजन गाने और भगवद्गीता के अंश पढ़ने के लिए मंदिरों, घरों और सामुदायिक हॉलों में इकट्ठा होते हैं। आधी रात के समय, भगवान कृष्ण के जन्म के क्षण को बहुत खुशी और भक्ति के साथ मनाया जाता है। कुछ क्षेत्रों में, विशेष रूप से महाराष्ट्र में, एक लोकप्रिय परंपरा होती है जिसे "दही हांडी" के नाम से जाना जाता है। दही, मक्खन और अन्य मिठाइयों से भरा मिट्टी का बर्तन जमीन से ऊपर लटकाया जाता है। युवाओं के समूह, जिन्हें "गोविंदा" कहा जाता है, बर्तन तक पहुंचने और उसे तोड़ने के लिए मानव पिरामिड बनाते हैं। यह जीवंत गतिविधि एक बच्चे के रूप में भगवान कृष्ण के चंचल स्वभाव की पुनरावृत्ति है। भक्त अक्सर शिशु कृष्ण की मूर्ति के लिए पालना बनाते हैं और उसे धीरे से झुलाते हैं, जो उनके जन्म की खुशी का प्रतीक है।

कार्तिगई दीपम, भक्ति के मार्ग को रोशन करने वाला

कार्तिगई दीपम, जिसे कार्तिकाई विलक्कू के नाम से भी जाना जाता है, एक हिंदू त्योहार है जो मुख्य रूप से दक्षिण भारतीय राज्य तमिलनाडु में मनाया जाता है। यह रोशनी का त्योहार है। कार्तिगई दीपम दिव्य प्रकाश को समर्पित है जो पवित्र लौ के रूप में भगवान शिव की दिव्य उपस्थिति का प्रतिनिधित्व करता है। यह अंधकार पर प्रकाश की, अज्ञान पर ज्ञान की और आत्मज्ञान की ओर आंतरिक आध्यात्मिक यात्रा की जीत का प्रतीक है। यह त्योहार तमिल महीने कार्तिगई (नवंबर-दिसंबर) की पूर्णिमा के दिन मनाया जाता है। कार्तिगई दीपम पर, घरों और मंदिरों को जलते हुए तेल के दीपकों की पंक्तियों से सजाया जाता है। "अगल विलाक्कु" नामक विशेष लैंप भी प्रमुखता से प्रदर्शित किए जाते हैं। भक्त भगवान शिव और भगवान मुरुगन की प्रार्थना करते हैं और विशेष अनुष्ठान करते हैं। आध्यात्मिक विकास, समृद्धि और सुरक्षा के लिए उनका आशीर्वाद मांगते हैं। प्रसाद में फल, फूल, धूप और पारंपरिक मिठाइयाँ शामिल हैं। तमिलनाडु के एक शहर तिरुवन्नामलाई में, यह त्योहार बड़े पैमाने पर मनाया जाता है। एक विशाल दीपक, जिसे "महा दीपम" के नाम से जाना जाता है, अन्नामलाई पहाड़ी के ऊपर जलाया जाता है, जिसे भगवान शिव का पवित्र प्रतिनिधित्व माना जाता है। यह अनुष्ठान पूरे भारत से तीर्थयात्रियों और भक्तों को आकर्षित करता है। संगीत और नृत्य प्रदर्शन के साथ, देवताओं की मूर्तियों के साथ जुलूस आयोजित किए जाते हैं। ये जुलूस समृद्ध सांस्कृतिक विरासत का प्रदर्शन करते हैं।

नया साल, नई शुरुआत और नवीनीकृत आशा को गले लगाते हुए

नए साल का जश्न एक वैश्विक परंपरा है जो एक नए साल की शुरुआत का प्रतीक है। यह आगे आने वाले अवसरों और अनुभवों की प्रत्याशा का समय है। नया साल व्यक्तियों को परिवर्तन अपनाने, लक्ष्य निर्धारित करने और आने वाले वर्ष में आने वाली अनंत संभावनाओं की आशा करने के लिए प्रेरित करता है। नए साल की पूर्व संध्या के सबसे प्रतिष्ठित पहलुओं में से एक आधी रात की उल्टी गिनती है। आतिशबाजी का प्रदर्शन, विश्व स्तर पर शहरों में रात के आकाश को रोशन करता है, जो नए साल की भव्यता और उत्साह का प्रतीक है। नए साल की पूर्व संध्या अक्सर परिवार और दोस्तों के साथ या बड़े सामाजिक समारोहों में बिताई जाती है। लोग जश्न मनाने, हँसी-मजाक करने और विशेष भोजन का आनंद लेने के लिए एक साथ आते हैं। विभिन्न संस्कृतियों की अपनी अनूठी नववर्ष परंपराएँ हैं। इस पर कई देशों में सार्वजनिक अवकाश होता है, जिससे लोगों को आराम करने और प्रियजनों के साथ गुणवत्तापूर्ण समय बिताने का मौका मिलता है। इसमें विशेष भोजन, महत्वपूर्ण स्थानों का दौरा या सांस्कृतिक कार्यक्रमों में भाग लेना शामिल हो सकता है।

होली: रंगों और भाईचारे का त्योहार

होली, जिसे रंगों के त्योहार के रूप में भी जाना जाता है, भारत में मनाए जाने वाले सबसे जीवंत और उत्साहपूर्ण त्योहारों में से एक है। यह वसंत के आगमन का प्रतीक है और बुराई पर अच्छाई की जीत का जश्न मनाता है। यह एक फसल उत्सव भी है। होली सर्दी और वसंत के मौसम में मनाई जाती है, जो प्रकृति के कायाकल्प का प्रतीक है। यह ठंड, सुप्त मौसम के अंत और एक रंगीन, जीवंत अवधि की शुरुआत का प्रतीक है। एक रंग-बिरंगे और खुशियों भरे त्योहार का महत्वपूर्ण दिन है जो भारत में मनाया जाता है। यह त्योहार फाल्गुन महीने की पूर्णिमा तिथि को आता है। होली का आयोजन अधिकतर लोगों के परिवारों और दोस्तों के साथ होता है। इस खास दिन लोग विभिन्न रंगों के गुलाल और अबीर से एक-दूसरे को रंगते हैं। साथ ही, विशेष खाद्य सामग्री जैसे गुझिया, मिठाई, ठंडाई भी बनती है। हर कोने से खुशियों की गूंज सुनाई देती है और लोग एक-दूसरे के साथ खुशियों का उत्सव मनाते हैं। होली का महत्व इसमें है कि यह विभिन्न समुदायों और वर्णों के लोगों को एक साथ लाता है और उन्हें एकता और भाईचारे की भावना से जोड़ता है। यह त्योहार सामूहिक उत्सव की भावना को प्रकट करता है और लोगों को खुशियों से भर देता है।

होली की जड़ें हिंदू पौराणिक कथाओं से गहराई से जुड़ी हुई हैं। यह राक्षस राजा हिरण्यकशिपु पर भगवान विष्णु के भक्त प्रह्लाद की विजय का स्मरण कराता है। यह भगवान कृष्ण और राधा के बीच प्रेम का भी जश्न मनाता है, जो प्रेम और भक्ति के दिव्य मिलन को उजागर करता है। बुराई पर अच्छाई की जीत का प्रतीक अलाव जलाया जाता है। लोग आग के चारों ओर इकट्ठा होते हैं, प्रार्थना करते हैं और आने वाले समृद्ध वर्ष के लिए आशीर्वाद मांगते हैं। यह सामाजिक बाधाओं को तोड़ता है और एकता और समानता का जश्न मनाता है। होली एक ऐसा समय है जब समुदाय जश्न मनाने के लिए एक साथ आते हैं। पड़ोस सभाओं, सांस्कृतिक कार्यक्रमों और जुलूसों का आयोजन करते हैं, जिससे एकता के बंधन और मजबूत होते हैं और यह क्षमा और मेल-मिलाप का समय है। लोग पिछली शिकायतों को दूर करते हैं, रिश्तों को सुधारते हैं, और एक साफ स्लेट के साथ नई शुरुआत करते हैं।

ईद-उल-फितर, रमज़ान के ख़त्म होने की खुशी का जश्न

ईद-उल-फितर, जिसे अक्सर ईद के रूप में जाना जाता है, दुनिया भर में मुसलमानों द्वारा मनाए जाने वाले सबसे महत्वपूर्ण इस्लामी त्योहारों में से एक है। यह उपवास और आध्यात्मिक चिंतन के पवित्र महीने रमजान के अंत का प्रतीक है। ईद-उल-फितर एक ख़ुशी का अवसर है जिसका गहरा धार्मिक और सांस्कृतिक महत्व है।

ईद-उल-फ़ितर रमज़ान के बाद आने वाले महीने शव्वाल के पहले दिन मनाया जाता है। यह खुशी का समय है क्योंकि मुसलमान उपवास, प्रार्थना और आत्म-अनुशासन का एक महीना पूरा करते हैं। ईद-उल-फितर

ताकत और आत्म-नियंत्रण के लिए अल्लाह के प्रति आभार व्यक्त करने का समय है। ईद दावत और भोग का पर्याय है। परिवार और दोस्त विस्तृत भोजन का आनंद लेने के लिए एक साथ आते हैं, जिसमें अक्सर विशेष व्यंजन शामिल होते हैं जो क्षेत्र के अनुसार अलग-अलग होते हैं। मिठाइयाँ, विशेष रूप से खजूर और बाकलावा जैसी मिठाईयां, आमतौर पर साझा की जाती हैं। बच्चे उत्सुकता से बड़ों से ईदी (उपहार, अक्सर पैसे) पाने का इंतजार करते हैं। ईद-उल-फितर इस्लामी मूल्यों और दुनिया में मुस्लिम समुदाय के महत्व की गहन अभिव्यक्ति के रूप में कार्य करता है।

रक्षा बंधन, भाई-बहन के प्यार और सुरक्षा का उत्सव

रक्षा बंधन, जिसे अक्सर राखी भी कहा जाता है, एक प्रिय हिंदू त्योहार है जो भाईयों और बहनों के बीच के बंधन का जश्न मनाता है। यह भारत और दुनिया भर के हिंदू समुदायों के बीच गहरा सांस्कृतिक और भावनात्मक महत्व रखता है। रक्षा बंधन का शाब्दिक अर्थ है "सुरक्षा का बंधन"। इस दिन, बहनें प्यार और सुरक्षा के प्रतीक के रूप में अपने भाइयों की कलाई पर एक पवित्र धागा बांधती हैं, जिसे "राखी" के नाम से जाना जाता है। बदले में, भाई अपनी बहनों की रक्षा करने का वचन देते हैं और उन्हें उपहार देते हैं। यह वादा उनकी बहनों की भलाई के प्रति उनकी प्रतिबद्धता की हार्दिक अभिव्यक्ति है। रक्षा बंधन भाई-बहनों के बीच संबंध को मजबूत करता है। यह उनके लिए एक दूसरे के प्रति अपना प्यार, कृतज्ञता और प्रशंसा व्यक्त करने का दिन है। यह त्योहार भाईयों और बहनों द्वारा साझा किए जाने वाले अनूठे और स्थायी बंधन का उत्सव है। रक्षा बंधन की परंपरा की जड़ें ऐतिहासिक और पौराणिक हैं। ऐसा कहा जाता है कि मुगल काल के दौरान, चित्तौड़गढ़ की रानी कर्णावती ने सम्राट हुमायूँ को राखी भेजी थी जब उनका राज्य खतरे में था। सम्राट उसके भाव से प्रभावित होकर उसकी सहायता के लिए आए। हिंदू पौराणिक कथाओं में, देवी द्रौपदी ने भगवान कृष्ण की कलाई के चारों ओर अपनी साड़ी का एक टुकड़ा बांधा था, जो उनके शुद्ध और सुरक्षात्मक बंधन का प्रतीक था। यह एक ऐसा दिन है जो प्रेम, सुरक्षा और पारिवारिक एकता के मूल्यों का प्रतीक है। राखी उस समर्थन और देखभाल की एक ठोस याद दिलाती है जो भाई-बहन जीवन भर एक-दूसरे को देते हैं।

ओणम एकता, फसल और केरल की सांस्कृतिक समृद्धि का जश्न मना रहा है

ओणम दक्षिण भारतीय राज्य केरल में मनाए जाने वाले सबसे महत्वपूर्ण त्योहारों में से एक है। यह दस दिवसीय फसल उत्सव है जो पौराणिक राजा महाबली की वापसी की याद दिलाता है, जो अपनी परोपकारिता और न्यायपूर्ण शासन के लिए जाने जाते थे। अंततः उन्हें वामन के रूप में भगवान विष्णु द्वारा पाताल लोक में भेज दिया गया। ओणम राजा महाबली की वार्षिक यात्रा का स्वागत करने के लिए मनाया

जाता है, जिनके बारे में माना जाता है कि वे इस दौरान केरल लौटेंगे। ओणम सिर्फ एक धार्मिक या सांस्कृतिक कार्यक्रम नहीं है, बल्कि एक उत्सव है जो जाति, पंथ और धर्म से ऊपर उठकर सभी पृष्ठभूमि के लोगों को एकजुट करता है। यह महोत्सव कथकली, मोहिनियाट्टम, तिरुवातिरा और पुलिकली जैसे पारंपरिक कला रूपों का प्रदर्शन करता है। ये प्रदर्शन उत्सव में जीवंतता और कलात्मक प्रतिभा जोड़ते हैं। ओणम के सबसे प्रतिष्ठित पहलुओं में से एक पूक्कलम का निर्माण है, जो फूलों से बना एक जीवंत और जटिल डिजाइन है। परिवार अपने घरों के बाहर सबसे सुंदर पुक्कलम बनाने के लिए प्रतिस्पर्धा करते हैं। ओणसद्या एक भव्य, पारंपरिक शाकाहारी दावत है जो केले के पत्तों पर परोसी जाती है। इसमें चावल, सांबार, अवियल, पायसम सहित विभिन्न व्यंजन शामिल हैं। यह ओणम उत्सव का एक अभिन्न अंग है।

साँप नौका दौड़, जिसे वल्लमकली के नाम से जाना जाता है, ओणम उत्सव का मुख्य आकर्षण है। नाविकों की टीमें, अक्सर सजावटी रूप से सजी हुई नावों में, केरल के बैकवाटर पर रोमांचक दौड़ में प्रतिस्पर्धा करती हैं। इन दौड़ों में बड़ी भीड़ उमड़ती है और यह सौहार्द और प्रतिस्पर्धा की भावना का प्रमाण है। ओणम के दौरान विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रम और प्रदर्शन होते हैं, जो केरल के विविध कला रूपों का प्रदर्शन करते हैं। इनमें कथकली प्रदर्शन, पारंपरिक नृत्य, संगीत गायन और मनोरंजन के अन्य रूप शामिल हैं। ओणम खरीदारी का भी समय है, लोग नए कपड़े, सामान और घरेलू सामान खरीदते हैं।

गुरुपर्व सिखों का प्रमुख त्योहार

गुरुपर्व सिखों के प्रमुख त्योहारों में से एक है, जिसे सिख समुदाय उत्साह और धूमधाम के साथ मनाता है। यह त्योहार गुरु नानक देव जी के जन्मदिन को याद करने के लिए मनाया जाता है और भारतीय कलैंडर के अनुसार कार्तिक महीने के पूर्णिमा तिथि को आता है। सिख समुदाय इस दिन अपने गुरुओं को श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिए गुरुद्वारे जाते हैं। वहां पर कीर्तन, अरदास, लंगर और विभिन्न धार्मिक कार्यक्रम होते हैं। सिख समुदाय के लोग इस दिन अपने धर्मिक ग्रंथ 'गुरु ग्रंथ साहिब' के बारे में उपदेश और ज्ञान प्राप्त करते हैं। गुरुपर्व का महत्व यह है कि यह उपासना का एक अवसर है जो शिक्षा, धर्म और एकता के सिद्धांतों को प्रमाणित करता है। यह समाज को साथ लाने और सद्गुणों को अपनाने का एक अद्वितीय मौका है।

स्वतंत्रता और एकता के प्रतीक राष्ट्रीय त्योहार

राष्ट्रीय त्योहार प्रत्येक नागरिक के दिलों में एक विशेष स्थान रखते हैं, क्योंकि वे किसी राष्ट्र की सामूहिक भावना और साझा इतिहास का प्रतीक हैं। 2 अक्टूबर को मनाई जाने वाली गांधी जयंती राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की जयंती है। यह उनकी शिक्षाओं, अहिंसा के दर्शन और भारत के स्वतंत्रता संग्राम में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका का सम्मान करने का दिन है। यह दिन उन सिद्धांतों को बढ़ावा देने के लिए है जिनके लिए गांधीजी खड़े थे, जैसे सत्य, अहिंसा, सादगी और मानवता की सेवा। स्वैच्छिक कार्य, स्वच्छता अभियान और सामुदायिक सेवा परियोजनाएं आम हैं। स्वतंत्रता दिवस का मुख्य आकर्षण नई दिल्ली के लाल किले पर प्रधानमंत्री द्वारा तिरंगे झंडे को फहराना है, जिसके बाद राष्ट्रगान गाया जाता है और औपचारिक सलामी दी जाती है। 15 अगस्त को मनाया जाने वाला स्वतंत्रता दिवस 1947 के उस दिन की याद दिलाता है जब भारत को ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन से आजादी मिली थी। यह अत्यंत राष्ट्रीय गौरव और खुशी का दिन है।

26 जनवरी को मनाया जाने वाला गणतंत्र दिवस, 1950 के उस दिन की याद दिलाता है जब भारत का संविधान लागू हुआ था, जिसने आधिकारिक तौर पर भारत को एक संप्रभु, समाजवादी, धर्मनिरपेक्ष और लोकतांत्रिक गणराज्य घोषित किया था। मुख्य कार्यक्रम नई दिल्ली के मध्य में होता है, जहाँ भारत के राष्ट्रपति राष्ट्रीय ध्वज फहराते हैं और सैन्य परेड़ की सलामी लेते हैं। यह परेड भारत के सशस्त्र बलों की ताकत के साथ-साथ विभिन्न राज्यों और क्षेत्रों के सांस्कृतिक प्रदर्शन को भी प्रदर्शित करती है।

दिवाली, ईद, होली, ओणम जैसे त्योहार और स्वतंत्रता दिवस और गणतंत्र दिवस जैसे राष्ट्रीय उत्सव अत्यधिक महत्व रखते हैं, पूरे देश में अनगिनत अन्य क्षेत्रीय और समुदाय विशिष्ट त्योहार मनाए जाते हैं। ये त्योहार न केवल प्रत्येक क्षेत्र की अनूठी विरासत को दर्शाते है बल्कि समुदायों के बीच आपसी सम्मान बनाने में भी मदद करते हैं। हमारी विविध पृष्ठभूमियों के बावजूद, हम सभी एक बड़े, सामूहिक संपूर्ण भारतीय राष्ट्र का हिस्सा हैं। "एकजुट होकर हम मजबूत खड़े होते हैं, विभाजित होने पर हम गिर जाते हैं", एकता हमारे रास्ते में आने वाली किसी भी प्रतिकूलता का सामना करने में सक्षम है। यह हमारी सबसे बड़ी संपत्ति है, और यही भारत को प्रगति और विकास के पथ पर आगे बढ़ाती है। भारत में जन्म लेना वास्तव में एक विशेषाधिकार है। भारत की विविधता, सांस्कृतिक समृद्धि और अपने धर्म का पालन करने और त्योहार मनाने की स्वतंत्रता भारतीय के रूप में हमारी पहचान के महत्वपूर्ण पहलू हैं। अपनी विरासत और जिन स्वतंत्रताओं का हम आनंद लेते हैं उन पर गर्व करना एक अद्भुत भावना है। यह हमें उन मूल्यों की सराहना करने और उनकी रक्षा करने की याद दिलाता है जो भारत को अद्वितीय बनाते हैं। आइए इस भावना को कायम रखें। आइए खुशियाँ फैलाएँ और अपने प्यारे राष्ट्र के लिए समृद्ध और सामंजस्यपूर्ण भविष्य की दिशा में काम करें।

जय हिंद!

धन्य है यह जीवन

श्रीमती प्रभा एल
सहायक लेखा अधिकारी

यह मेरी माँ की कहानी है। केवल कहानी ही नहीं, उनकी जीवन गाथा है, जिन्होंने अपने लिए कभी कुछ नहीं सोचा, कभी कुछ नहीं रखा। जो भी किया, सब अपने परिवार के लिए किया। पढ़ते समय वे बहुत अच्छे से पढ़ीं क्योंकि उन्हें पता था कि उन्हें अपने पिताजी को सहारा देना है। वे छोटी सी उम्र से ही बहुत जिम्मेदार थीं। घर की सबसे बड़ी बेटी होने के कारण अतिरिक्त प्रेम के साथ उन्हें अतिरिक्त जिम्मेदारी भी मिली। उनसे छोटी चार बहनें और एक भाई थे। मेरी नानी की तबीयत अधिकतर ख़राब रहती थी। परिवार में मेरी माँ, उनके पाँच भाई बहन, माता-पिता, दादीजी एवं उनके पर-दादाजी थे। इतने लोगों का खाना पीना एवं बच्चों की शिक्षा मेरे नानाजी की मामूली सी कमाई से ही होता था। जब मेरे नानाजी ने अपना घर खरीदा तब हर महीने पंद्रह रुपये उनकी तनख्वाह से कट जाते थे। वह घर मेरे लिए आज भी बहुत प्रिय जगह है।

मेरी अम्मा पढ़ने में बहुत अधिक होशियार नहीं थी। लेकिन पढ़ना उनके लिए एक आवश्यकता थी। उन्हें पता था कि पढ़ने के बाद ही वे अच्छी नौकरी कर सकेंगी। इसलिए वे दिन रात एक करके पढ़ीं और प्रथम दर्जे में उत्तीर्ण हुई। साथ ही हिंदी में दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा में विद्वान परीक्षा भी उत्तीर्ण की। उन्होंने अपनी जीविका अपने जीवन के 18वें वर्ष में एक सरकारी सहायता प्राप्त विद्यालय में हिंदी शिक्षक के रुप में प्रारंभ की। वे प्रतिदिन एक पीले रंग की साड़ी पहन कर विद्यालय जाया करती थी, जिसके कारण दसवीं कक्षा के बालक, जो देखने में उनसे भी बड़े लगते थे, मंजक्किली कहकर उनका मज़ाक बनाया करते थे। विद्यालय से

वापस आते समय वे उप शिक्षण भी किया करती थी। इस तरह लगभग दस वर्ष तक उन्होंने अपने पिताजी को आर्थिक सहारा दिया। तब तक उनकी दो बहनों की भी सरकारी नौकरी लग चुकी थी। मेरी माँ भी तब तक सरकारी कोट्टनहिल विद्यालय में अध्यापिका बन गई थीं। तत्पश्चात उनका विवाह मेरे पिताजी से हुआ। कुछ समय बाद मेरा और मेरे भाई का जन्म हुआ। पिताजी का स्वास्थ्य ख़राब रहने के कारण उन्हें अपनी नौकरी छोड़नी पड़ी। मेरे पिताजी का संयुक्त परिवार था। और बीच बीच में बहुत से रिश्तेदार भी घर आते रहते थे। इसी बीच घर का काम, पिताजी की सेहत का ध्यान, हम बच्चों का पालन-पोषण, हमारी पढ़ाई, अपने ससुराल के ताने, पिताजी का क्रोध और न जाने कितनी ही बड़ी से बड़ी समस्याओं को उन्होंने अपनी मुस्कान के पीछे छिपाकर रखा। मुझे याद है, जो पैसे अम्मा को वेतन के रूप में मिलते थे, वे उन्हें पिताजी को दे दिया करती थी। पिताजी घर का खर्चा देखते थे और अम्मा को प्रति दिन बस और चाय के लिए दो रुपये देते थे। पिताजी कपड़ों की एक दुकान में लेखाकार थे। उनका वेतन भी बहुत कम था, पर अम्मा ने उन्हें कभी नीचा दिखाने का प्रयास नहीं किया।

विद्यालय में कभी पार्टी होती तो वह खाना वे हमारे लिए घर ले आती थीं। मैं लगभग बीस साल तक यही समझती रही कि अच्छे कपड़े पहनना, सिर में फूल लगाना, हाथों में मेहँदी लगाना, मीठा खाना, यह सिर्फ बच्चों का अधिकार है। परंतु फिर यह एहसास हुआ कि हमारा यह मनोरंजन मेरी अम्मा का त्याग है।

समय बीता, हम बड़े हुए, मेरी शादी हुई। शादी के कुछ समय बाद मेरी एक बेटी हुई। उन्होंने मेरी बेटी की भी बहुत अच्छी देखभाल की। उन्होंने मेरी बेटी को अच्छे गीत सुनाए, कहानियाँ सुनाई, अच्छे पकवान खिलाए, समय-समय पर उसकी सहेली बनकर उसका मन बहलाया और उसके सभी राज़ रखे। वह एक जादूगर थीं, पता नहीं हम सब पर अपना जादू कैसे करती थीं। जब भी उनकी बहनों के जीवन में, मेरे जीवन में या मेरी बेटी के जीवन में कोई भी समस्या आई तो वे उसके आगे चट्टान की भाँति खड़ी रहीं और अपनी सुंदर मुस्कुराहट और शांत बातों से सारी समस्याओं को सुलझा दिया।

कोरोना महामारी के दूसरे साल में हमारी अम्मा हमसे सदा के लिए दूर हो गईं। और उनकी वह प्यारी सी मुस्कुराहट और सुंदर सा चेहरा हमसे हमेशा-हमेशा के लिए अलग हो गया। अपना संपूर्ण जीवन दूसरों के लिए जीने वाली अम्मा के जाने के बाद हमारे जीवन से मानो प्रकाश सदा के लिए विदा हो गया। मेरे पिताजी के जीवन का यह सबसे बड़ा दुख था। परन्तु आज भी लगता है जैसे अम्मा मेरे पास ही हैं और अपनी उसी जीवंत मुस्कान के साथ कह रही हों, "बेटा परेशान मत हो, मैं हूँ ना तुम्हारे साथ।"

पर्यावरण दिवस

सुश्री श्रुति शर्मा
सहायक लेखा अधिकारी

रोती धरती की पुकार है, जिस पर हमारे कर्मों का भार है
बड़ बोली इस दुनिया से, ऐसी उम्मीदें हजार है
उम्मीदें ऐसी, जिस पर हमारे भविष्य का दारोमदार है
और भविष्य ऐसा, जहां कल कल नदियों की धार बहे
उसकी तलहटी में, कंकड़ आर पार रहे ।
जहां शीतल पवन झर झर करें, जहां मिट्टी की सोंधी सुगंध रहे,
जहां चिड़िया बागों बागों में थिरके, गगन चूमकर आंगन में भी झूमे,
जहां वन्यजीवों का घर न उजड़े, हाथी शेर सड़क से न गुजरे,
जहां वसंत की आगाज़ लेकर, कोयल डाली डाली जाकर कूहके,
जहां समुंद्र की लहरों से, कछुए मछली तट पर न बिखरे,
जहां किसी गाय के पेट से प्लास्टिक के ढेर न निकले ।
तो क्यों न सहेज कर रख ले, इस प्रकृति को
आने वाले कल के लिए, आने वाले अपनों के लिए
ये कटते वृक्ष, ये सूखती नदियां
ये सिमटते पर्वत, एक रोज यूं ही खत्म हो जाएंगे ।
आज हम कुछ कर सकते हैं
इस रोती हुई प्रकृति के आंसू
हम पोंछ सकते हैं
एक वक्त के बाद, प्रकृति के सारे आंसू सूख जाएंगे

पर आंसू होंगे, हमारी आंखों में

जिसे चाह कर भी, हम पोंछ नहीं पाएंगे

हम पुकारेंगे प्रकृति को अपनी मदद के लिए

पर मौत की खामोशी ओढ़े, वो बेजान पड़ी

बस यूं ही देखती रहेगी।

क्या आप भी चाहते है, हमारा भविष्य

हमारे बच्चों का भविष्य

यूं ही काले प्रदूषित वातावरण में ओझल हो जाए

खाना और पानी के बदले

प्लास्टिक के कण भोजन में आए

हम अपने बच्चों के रंगीन भविष्य को

बेरंगी दुनिया में नहीं बदल रहे हैं

इन्ही हाथों से,

जिन हाथों ने इनके सपने सजोने का वादा किया है

तो क्या आज हम एक छोटा सा संकल्प ले सकते है

प्रकृति से जुड़े रहने का, उसकी सेवा करने का

फिर वो दिन भी आयेगा,

जब मानव प्रकृति की गोद में चैन की सांस ले पाएगा।

और अपनी आने वाली पीढ़ी को

सतत विकास की तरकीब भी सिखाएगा ।।

जय हिंद ।। जय प्रकृति ।।

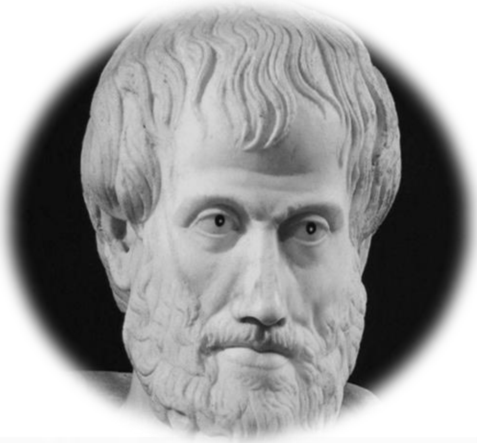

अरस्तू का तर्कशास्त्र

श्री पारस कुमार शिवा
सहायक लेखा अधिकारी

तर्क की बात हो और अरस्तू का नाम न आये यह संभव ही नहीं है। आज के विज्ञान और दर्शन शास्त्र की नींव रखने के लिए जिस तर्क का उपयोग होता है वह अरस्तू की ही देन है। यहां तक कि पाश्चात्य भाषाओं में जिस तरह तर्क का उपयोग होता है और जो पाश्चात्य भाषाओं को कई मायनों में पूर्वी भाषाओं से भिन्न बनाता है उसमें अरस्तू के तर्क को देखा जा सकता है।

अरस्तू का सारा तर्कशास्त्र उस कसौटी को आधार मानता है जिसे आज की भाषा में "सिलोगिज्म" भी कहते हैं। इसमें कुछ चीजों को मान लिया जाता है और फिर उनके संदर्भ में कुछ तथ्य सत्य या असत्य प्रमाणित किए जाते हैं।

अरस्तू का मुख्य जोर किसी सत्य को दो विपरीत बातों में विभाजित करने पर था जो आज भी हमें तर्क करने पर दिखता है। मसलन जैसे ही हम "अच्छे का विपरीत" सोचते हैं, हमारे दिमाग में बुरा आता है। तो क्या एक व्यक्ति अगर अच्छा नहीं है तो वह बुरा ही होगा ? हमें सच को काले या सफेद रंग में देखने के बजाय इंद्रधनुषी रंगों के आलोक में देखना चाहिए।

किसी भी तथ्य को दो विपरीत छोरों में बांटने से अच्छा है उसे बीच में रखकर देखा जाए। उदाहरण के लिए अगर हम कहें कि एक व्यक्ति अच्छा गाना नहीं गाता तो तुरंत हमारा मस्तिष्क यह निर्णय कर लेता है कि वह बुरा गाता है पर हमारे दिमाग में यह नहीं आता है कि वह कितना बुरा गाता है क्योंकि हमारी शिक्षा पद्धति में इस बारे में कोई बात ही नहीं होती। इसी तरह दूसरा उदाहरण यह है कि अगर हम कहें कि एक खिलाड़ी अच्छा फुटबॉल खेलता है तो हमें इसका कुछ भी पता नहीं चलता कि वह कितना अच्छा खेलता है क्योंकि हमारी भाषाओं में ऐसा कोई तरीका ही नहीं जिससे हमें इस तरह कहे गए किसी भी तथ्य की मात्रा का बोध हो।

अरस्तू प्रदत्त तर्क और भाषाओं में तर्क के इस विवरण से मनुष्यों के बारे में बताने में सबसे ज्यादा समस्या हुई है। मसलन हम कहें कि एक स्त्री सुंदर नहीं है तो हमारे दिमाग में कुरूप शब्द आता है पर क्या इस वाक्यांश में यह कहा गया है कि वह स्त्री कुरूप है। हमारा मस्तिष्क एक विपरीत तर्क करने में निपुण हो गया है और यह सब अरस्तू की ही देन है।

अरस्तू के दर्शन ने पश्चिम के पूरे दर्शन और विज्ञान के विकास में एक बहुत अहम भूमिका निभाई है। उसी मार्ग पर चलते-चलते आज विज्ञान यहां तक पहुंच पाया है परंतु हम इसकी कमियों को भी नजरअंदाज नहीं कर सकते। अतः चीजों और तथ्यों को गहराई से समझने के लिए हमें उन्हें काले और सफेद के बीच न बांटते हुए पूर्णता में देखना चाहिए।

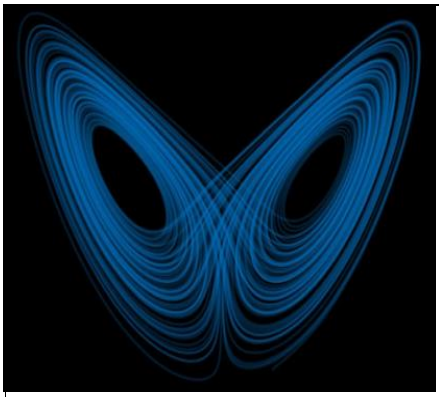

चक्रवृद्धि

श्री अम्लान नसकर
सहायक लेखा अधिकारी

चंद हफ्तों पहले, एक जीपीएफ अग्रिम केस मेरे पास आया, जिसमें वर्तमान वर्ष के ओपेनिंग बैलेंस और संबंधित जीपीएफ सदस्य के नवीनतम क्रेडिट कार्ड के शेष में कुछ तीस हज़ार का अंतर था। अब मैंने जीपीएफ मॉड्यूल में दर्ज प्रत्येक वर्ष के रिकॉर्ड की जांच की। कहीं भी कोई अनु प्रविष्टि (डुपलिकेट ऐंट्री) नहीं मिली। संपूर्ण कार्य-पत्रक में कोई प्रविष्टि विलुप्त भी नहीं थी। सब कुछ सही था। समस्त वर्ष के रिकॉर्ड मैंने दोबारा रीपोप्युलेट किये। कोई फायदा नहीं। अंत में मैंने क्रेडिट कार्ड विवरण की समीक्षा की। पता चला वी एल सी मॉड्यूल और क्रेडिट कार्ड विवरण में वर्ष 1998 के क्रेडिट जमाराशि में कुछ सौ रुपयों का अंतर है। यह कोई एरिअर रहा होगा जिसका लेखांकन मॉड्यूल मे नहीं किया गया होगा। गौरतलब यह था कि यह कुछ सौ रुपयों ने 2023 तक आकर तीस हज़ार का बखेड़ा कर दिया था।

चक्रवृद्धि लेखांकन एवं बैंकिग जगत में एक अत्यंत शक्तिशाली साधन है। चक्रवृद्धि के माध्यम से हमारी जमा पूंजी और वैश्विक अर्थव्यवस्था में बढ़ोतरी होती है। हालांकि, जहां चक्रवृद्धि जमापूंजी को बढ़ाती है, वहां कर्जदारों को दशकों दबा भी सकती है।

यदि बुद्धिमानी से उपयोग किया जाए, तो चक्रवृद्धि ब्याज महंगाई के कारण होने वाली धन हानि को कम कर सकता है, महंगाई के विरुद्ध एक बाँध बन सकता है। दूसरी ओर, आप चक्रवृद्धि के इस प्रभाव का उपयोग करते हुए, अपने ऋणों का समय से पहले भुगतान करके, ब्याज भुगतान पर बचत भी कर सकते हैं।

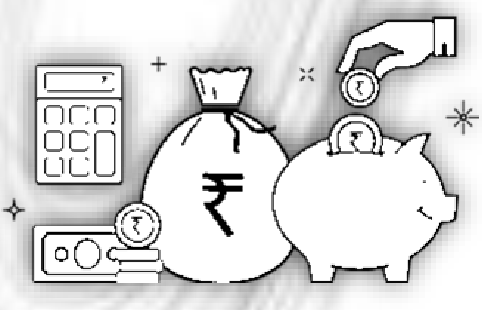

चक्रवृद्धि ब्याज सूत्र में सबसे प्रमुख है समय। समय ही वर्ष दर वर्ष पूंजी मे तीव्र वृद्धि लाता है। खज़ाना उन्हीं के हाथ आता है जो असमंजस में भी लगे रहते है। चाहे शेयर बाजार हो या कैरियर, ख्याति उन्हीं की होती है जिसने रोज पिछले दिन से खुद का और सुधार किया, और लम्बे समय तक किया। इसलिये, जिंदगी के इस खेल में दूरदर्शिता मायने रखती है। हमारा हर काम उस अंत के उपयोग आना चाहिये जिसके लिये हम सब लड़ रहे। गणित में बटरफ्लाई इफ़ेक्ट सिद्धांत का निष्कर्ष है कि एक स्थिति में एक छोटे से परिवर्तन के फलस्वरूप बाद की स्थिति में बड़े अंतर हो सकते हैं। यह परिवर्तन जब प्रारंभिक समय में किये जाये तो इसके असर उतने ही विशिष्ट होते हैं।

चक्रवृद्धि हर मानव प्रयास और विद्या में मौजूद है। पंडितों ने मौजूदा शास्त्रों का अध्ययन किया और पुस्तकें लिखीं और फिर उनके बाद उनसे प्रेरित पंडितों ने और भी गहरी पुस्तकें लिखीं। मानव का जन्म अफ़्रीका में दो लाख साल पहले हुआ। दस हज़ार साल पहले, खेती का विकास हुआ। साढ़े सात हज़ार साल

पहले, सभ्यता का। चार सौ साल पहले, गैलीलियो ने दूरबीन से सौरमंडल देखा। 1969 में मनुष्य ने चंद्रमा पर पैर रखा और मात्र चौदह साल बाद, 1983 में इंटरनेट का आविष्कार हो गया।

चक्रवृद्धि ब्याज बटरफ्लाई इफ़ेक्ट की एक अभिव्यक्ति है। छोटे-छोटे शब्द दूसरों पर बड़ा प्रभाव डाल सकते हैं। वह मोरकॉम की ट्यूरिंग के साथ बालपन में घनिष्ठ मित्रता ही थी जिसने उसकी असामयिक मृत्यु के बाद, ट्यूरिंग को उनके भविष्य के प्रयासों में प्रेरित किया एवं द्वितीय विश्व युद्ध की अवधि को दो साल तक कम करने और करोड़ों लोगों की जान बचाने में मदद की। इसीलिए, हमें सचेत रहना चाहिए कि हम दूसरों से क्या कह रहे हैं और उनके साथ कैसा व्यवहार कर रहे हैं। प्रत्येक क्रिया अंतरिक्ष-समय के विस्तार में कई तरंगें पैदा करती है और प्रत्येक तरंग का हम पर उल्टा प्रभाव पड़ता है, जो हमारा भविष्य तय कर सकता है।

एक अज्ञात द्वीप की यात्रा

सुश्री राजी राजन
सहायक लेखा अधिकारी

सुबह 4 बजे मेरे मोबाइल के अलार्म ने मुझे जगा दिया और मुझे अपनी आँखें खुली रखना मुश्किल हो गया। मेरी नींद उनमें अटकी हुई थी और अलविदा कहने में झिझक हो रही थी। अचानक मुझे याद आया कि यह 5 सितंबर है और परिवार के साथ कोल्लम दौरे पर जाने का दिन है। मैंने वास्तविक स्थान का नाम याद करने की कोशिश की, जो सुनने में कुछ-कुछ 'पेरिंगनम' जैसा लगता था, लेकिन याद नहीं आ सका और इसके लिए मैंने अपनी याददाश्त को दोषी ठहराया। मेरे दोस्तों और उनके परिवारों के साथ यात्रा के उत्साह ने नींद उड़ा दी और मैं घर पर परिवार के बाकी सदस्यों की ज़रूरतों को पूरा करने के लिए रसोई में चली गई, जो अपनी अन्य व्यस्तताओं के कारण दौरे में शामिल नहीं हो सके।

यात्रा हमारे चर्च, सीएसआई, तोषुक्कल के परिसर से सुबह 5.30 बजे शुरू होनी थी और हम 5.15 बजे वहां पहुंच गए। कुछ सदस्य पहले ही आ चुके थे और बाकी लोग आ रहे थे। अधिकांश चेहरे परिचित थे और मुझे ऐसा लग रहा था जैसे मैं अपने परिवार के साथ हूँ। रोशनी में नहाया हुआ सिर ऊंचा करके खड़ा चर्च मुझे 170 साल पहले के दिनों और उन महान लोगों की याद दिलाता है जिन्होंने इस अद्भुत चर्च को बनाने के लिए कड़ी मेहनत की थी। मुझे इसका हिस्सा बनकर गर्व महसूस हुआ।

सुबह 5.30 बजे तक, सभी लोग आ चुके थे और बेहतर सीटें लेने के लिए टूरिस्ट बस 'आर्या टूर्स एंड ट्रैवल्स' में चढ़ने के लिए दौड़ पड़े। लेकिन, यात्रा के संयोजक ने घोषणा की कि बैठने की व्यवस्था पहले से की गई थी और सभी को उसी के अनुसार सीट लेनी थी। कुछ ही देर में सभी लोग अपनी सीटों पर आराम से बैठ गए और यात्रा शुरू हो गई।

बंद खिड़की के छेद से अंदर आने वाली ठंडी हवा अपने साथ चमेली की मीठी खुशबू और दिल की गहराइयों से शांति और खुशी का एहसास लेकर आई। सूरज अभी तक समुद्र के पार अपने बिस्तर से नहीं निकला था और बाहर देखने के लिए पर्याप्त रोशनी नहीं थी। डीवीडी स्क्रीन पर प्रदर्शित फिल्म 'भास्कर द रास्कल' के चुटकुले और जारी हंसी के सिलसिले ने मेरा ध्यान अपनी ओर खींचा। हालांकि फिल्म काफी दिलचस्प थी, कुछ देर बाद मेरे पेट में भूख सताने लगी और सोचने लगा कि कब मुझे खाने के लिए कुछ मिलेगा। संयोजक ने मानो जवाब देते हुए ब्रेड, केला और मिनरल वाटर बांटना शुरू कर दिया, यह एक बड़ी राहत थी और उसके बाद मैंने फिल्म पर ध्यान केंद्रित किया, कहानी वास्तव में अच्छी थी और इसके अंत में, हम उतरने के लिए 'अष्टमुडी' पहुँचे।

हमें अपने गंतव्य के लिए नाव पकड़ने के लिए सुबह 8 बजे तक वहां पहुंचना था, लेकिन हम 15 मिनट की देरी से पहुंचे और नाव छूट गई। लेकिन यह वास्तव में एक छिपा हुआ आशीर्वाद था, क्योंकि हमें अष्टमुडी झील की प्राकृतिक सुंदरता की प्रशंसा करने के लिए पर्याप्त समय मिला, जो सुबह की धूप में सुनहरे कालीन की तरह दिखती थी। हमने व्यस्त मछुआरों को अपने सुबह के प्रयासों का फल लेकर वापस लौटते देखा। ताज़ी 'करिमीन' और ऐसी अन्य मछलियों को देखकर मुँह में पानी ला देने वाली फिश फ्राइज़ का ख्याल आ गया। नाव घाट पर करीब से नजर रखने पर, हमने पाया कि हजारों-हजार छोटी मछलियाँ कुछ टुकड़ों की उम्मीद में वहां इकट्ठा हो गई थीं।

सीटी की आवाज़ से पता चला कि नाव आ गई है और मैं नाव पर चढ़कर खिड़की की सीट पर बैठने में कामयाब हो गया। वहाँ अन्य यात्री भी थे, जो विभिन्न मिशनों पर मुख्य भूमि से अन्य द्वीपों की यात्रा कर रहे थे। हर जगह बहुत सारे खूबसूरत दृश्यों के साथ नाव यात्रा शानदार थी। नाव ने पानी में लहरें उठायीं जो दूर तक गईं और लुप्त हो गईं। 15 मिनट के बाद, हम अपनी मंजिल के करीब पहुंच गए और जिस जमीन को हमने छोड़ा था, उसका आकार छोटा होता दिख रहा था और अंदर की जमीन, जो पहले झाड़ी की तरह दिखती थी, अब बड़ी हो गई है।

जैसे ही हमने रिट्रीट सेंटर के शांतिपूर्ण परिसर में प्रवेश किया, मुझे एहसास हुआ कि वह स्थान वास्तव में 'पेरिंगलम' था, न कि 'पेरिंगनम' । 'मार्थोमा ध्यान तीरम' के नाम से मशहूर इस केंद्र में 1.5 एकड़ का एक बड़ा परिसर था जिसमें बहुत सारे आश्चर्य थे । इसकी दो सीमाएँ अष्टमुडी झील थीं और उनसे ठंडी हवा आ रही थी। रिट्रीट सेंटर में प्रवेश करते ही सबसे पहली चीज़ जिसने मेरा ध्यान आकर्षित किया वह एक तरफ बना 'प्रेयर माउंट' था और मैंने उस पर चढ़ने के बारे में सोचा। लेकिन सभी लोग मेस हॉल की ओर चले गये और मैं भी उनके पीछे-पीछे चला गया। मेस हॉल और रसोई घर पार्सोनेज से जुड़े हुए थे और उन्हें बहुत साफ रखा गया था। स्वादिष्ट नाश्ते के बाद जिसमें इडली, सांबर, चटनी, केला और चाय शामिल थी, हमने आसपास का भ्रमण शुरू किया। पूरी जगह को अच्छी तरह से बनाए रखा गया था और चारों ओर बहुत सारे बगीचे थे।

मुर्गीपालन में मुर्गी, टर्की, गिनी मुर्गी, बत्तख और ईमू शामिल थे जो सामान्य दृश्य नहीं हैं। और सीमाओं पर बने पिंजरों में विभिन्न प्रजातियों के कुत्ते थे, जिनमें से एक काले टेरियर ने मुझे आकर्षित किया। वहाँ पतंगें, खरगोश और कई अन्य पक्षी भी थे। परिसर के बाहर एक कोने पर एक साफ-सुथरी नाव बंधी हुई थी जो हमें दोपहर में नौकायन के लिए ले जाती थी और परिसर के अंदर 'पादक' नाम की एक बड़ी नाव लगी हुई थी। हममें से अधिकांश लोग अंदर चढ़ गए और तस्वीरें खिंचवाईं और मुझे आश्चर्य हुआ कि क्या नाव असली थी या केवल एक मॉडल थी। केंद्र में पहली मंजिल पर सभी सुविधाओं के साथ शयनगृह और एसी रूम था और मुख्य हॉल भूतल में था। उस हॉल से बुजुर्गों के लिए कुछ कमरे भी जुड़े हुए थे। मिलन समारोह का आयोजन मुख्य हॉल में किया गया था जहाँ हमने अतीत की मीठी यादें साझा कीं। सभी ने उत्साह के साथ खेलों में भाग लिया। समुद्र तट पर लहरों की तरह हॉल में हँसी की गड़गड़ाहट गूंज उठी। बैठक के बीच में चाय का विश्राम हुआ और चाय के बाद मैं वहां का नजारा देखने के लिए जल्दी से प्रार्थना स्थल की ओर चला गया। इसका निर्माण खूबसूरती से किया गया था, जिसके दोनों तरफ बगीचे थे और एक में व्हाटर लिली के साथ एक तालाब था। प्रार्थना पर्वत का प्रवेश द्वार ऐसा लग रहा था मानो उसके सामने कोई पेड़ गिरा हुआ हो। ऊपर की ओर जाने वाली सीढ़ियों के दोनों ओर अलग-अलग आकार की चट्टानें बिछाई गई थीं। ऊपर से झील का दृश्य अद्भुत था । सैकड़ों पक्षियों के झुंड को झील पर एक विशेष स्थान पर चक्कर लगाते देखा गया, शायद मछली पकड़ने के लिए वहां बिछाए गए जाल से कुछ पकड़

लिया हो। जगह-जगह बेंच और लैंप पोस्ट लगाए गए थे, ताकि कोई वहां प्रार्थना का शांतिपूर्ण समय बिता सके। जैसे ही चाय के विश्राम का समय समाप्त हुआ, मैं जल्दी से बैठक हॉल में वापस आ गया।

उस ध्यानतीरम के प्रभारी व्यक्ति ने हमें रिट्रीट सेंटर का संक्षिप्त विवरण दिया। उन्होंने कहा कि छह वर्ग किलोमीटर का द्वीप मुनरोतुरुत्तु पंचायत का हिस्सा था और इसमें लगभग 600 परिवार रहते थे। दुर्भाग्य से इस द्वीप में अस्पताल की सुविधा या कॉलेज नहीं थे और उन्हें इसके लिए मुख्य भूमि पर निर्भर रहना पड़ता था। उन्होंने यह भी कहा कि जो 'पदक' हमने परिसर के कोने में देखा था वह असली था और इस 'ध्यानतीरम' के निर्माण के लिए सभी आवश्यक सामग्री को द्वीप में लाया गया था। अब चूँकि यह क्रियाशील नहीं है, इसलिए उन्होंने इसके महान पुराने दिनों को याद करने के लिए इसे वहाँ संरक्षित रखा है।

समय लगभग 1 बजे था और हम जल्दी से मेस हॉल में वापस आ गये। चावल के साथ सांबर, दही करी, पत्तागोभी, अचार, पचड़ी और मछली करी परोसी गई। हालाँकि यह देखने में अच्छा लग रहा था, लेकिन यह उम्मीद के मुताबिक उतना स्वादिष्ट नहीं था। आख़िरकार कोई भी हर बार सर्वश्रेष्ठ पाने की उम्मीद नहीं कर सकता। परिसर में घूमने में कुछ और समय बिताने के बाद, हम नाव के अंदर गए और अपनी नौका यात्रा शुरू करने का बेसब्री से इंतजार करने लगे। हम दोपहर 2 बजे पेरिंगलम से निकले और अष्टमुडी झील में डेढ़ घंटे तक चुपचाप तैरते रहे। रास्ते में हम विभिन्न आकृतियों की हाउस बोट, छोटी डोंगियाँ और मछली पकड़ने वाली नावें देख सकते थे। रास्ते में पाए जाने वाले अधिकांश पेड़ों के ठूंठों पर विभिन्न पक्षी जैसे स्नेक बर्ड, सारस, किंगफिशर और कई अन्य पक्षी बैठे हुए थे। कुछ पेड़ चारों तरफ फूलों से लदे हुए थे और उन्होंने अपने नीचे झील पर फूलों का कालीन बिछा रखा था। जैसे हमारे जीवन में खुशियाँ आती-जाती रहती हैं और कुछ समय बाद वापस लौट आती हैं, वैसे ही शानदार दृश्य हमारे पास दौड़ते हुए आए, फिर वापस आने के लिए चले गए। हालाँकि नौकायन यात्रा लगभग 3.30 बजे समाप्त हो गई, लेकिन झील की अनंत सुंदरता हमारे दिलों की कैमरे की आँखों में कैद हो गई।

हमारी बस हमें कोल्लम के समुद्र तट पर ले जाने के लिए अष्टमुडी जंक्शन पर हमारा इंतजार कर रही थी, जो वहां से 20 मिनट की दूरी पर था। रास्ते में हमें केले के टुकड़े परोसे गए और यह पेट के लिए एक सांत्वना थी। समुद्र तट पर काफी भीड़ थी और लोग अपने-अपने हिसाब से अलग-अलग चीजें चुनने में लगे हुए थे। कुछ लोग अकेले बैठे थे और लहरों को आते-जाते हुए देख रहे थे, जो मेरा भी पसंदीदा शौक है। बच्चे पतंग उड़ाने, रेत के महल बनाने या गुब्बारों या गेंदों से खेलने में व्यस्त थे। युवा लहरों की गहराई में जाकर अपने साहस का प्रदर्शन कर रहे थे, जबकि कुछ अपने प्रियजनों का हाथ पकड़कर साथ-साथ चल रहे थे।

गुब्बारे, पतंग और मूंगफली बेचने वाले बच्चों का ध्यान आकर्षित करने के लिए उनके आसपास घूम रहे थे। बुजुर्ग, जो वहाँ अकेले बैठे थे, अपने अतीत या शायद अपने भविष्य के विचारों में खोए हुए लग रहे थे। समुद्र तट हमेशा से मेरी कमजोरी रहे हैं और मुझे वहां घंटों समय बिताने में कोई आपत्ति नहीं है। हालाँकि आसमान में बादल छाए हुए थे और सूरज उनके पीछे छिप गया था, आसमान पर चित्रित अद्भुत रंग भगवान के कार्यों की याद दिलाते थे।

शाम 6 बजे तक हमने अपनी वापसी की यात्रा शुरू कर दी, हमारी आँखों में ढेर सारी अच्छी यादें और खूबसूरत दृश्य थे। चूँकि हममें से अधिकांश लोग भूखे थे, हम हल्का जलपान करने के लिए शाम 6.30 बजे पास के जंक्शन पर उतरे और शाम 7 बजे यात्रा जारी रखी। 'वडक्कन सेल्फी' नाम की एक फिल्म दिखाई गई; इसका मुख्य पात्र इस पीढ़ी के आम युवाओं का प्रतिनिधित्व करता है। हालाँकि शुरुआत में यह काफी दिलचस्प था, लेकिन थकान के कारण बीच में मुझे झपकी आ गई थी। हालाँकि, रात 9.15 बजे हमारे चर्च वापस पहुँचने से ठीक पहले फिल्म खत्म हो गई थी। हालांकि थके हुए और नींद में, सभी ने ढेर सारी अच्छी यादें संजोकर खुशी-खुशी अलविदा कहा।

एक छोटा कदम, बड़ा बदलाव

सुश्री श्रुति शर्मा
सहायक लेखा अधिकारी

एक बहुत ही अनुभवी और ज्ञानी साधु थे। अपनी तपस्या पूरी करके वो बगल के गांव में भिक्षाटन के लिए गए। उन्होंने वहां देखा लोग बस अपना उल्लू सीधा करने में लगे हैं। उन्हें बाकी दुनिया से कोई मतलब नहीं हैं।

एक दिन साधुजी को लगा मुझे इन लोगों को आइना दिखाना होगा और उन्होंने गांव वालों को बुलाया और कहा - यहां पास के गांव में एक भंडारे का आयोजन किया गया है, खीर बनाने के लिए 50 लीटर दूध की जरूरत है। अगर आप लोग एक एक लोटा भी दूध दे देंगे तो ये ज़रूरत पूरी हो जाएगी। यहां एक बड़ा-सा ड्रम रखा आ है, रात को सब लोग इसमें दूध डालकर इसे भर दें। सुबह हम इसे बगल के गांव वालों को सौंप देंगे। सब लोग साधु जी की बातों को ध्यान से सुन रहे थे और सब ने सहमति भी जताई और वापस अपने घर चले गए।

रात हुई मोहन लाल अपनी पत्नी से बातें कर रहा था। दूध हम क्यों दें, बगल के गांव का भंडारा है, एक काम करते है, ड्रम में एक लोटा पानी डाल देते हैं। सब तो दूध ही डाल रहे हैं, हमारे एक लोटा पानी डालने से क्या होगा। और रात को उसने ड्रम में एक लोटा पानी डाल दिया। उसके बगल के पड़ोसी भी यही बातें कर रहे थे कि अगर हम दूध के बदले एक लोटा पानी डाल दें तो क्या फर्क पड़ेगा बाकी सब तो दूध ही डाल रहे हैं। इस तरह पूरा गांव यही सोच रहा था कि हमारे एक लोटा पानी डालने से क्या होगा, बाकी सब तो दूध ही डाल रहे हैं।

ड्रम काफी बड़ी थी और उसमें दूध डालने के लिए सिर्फ छोटी छेद बनाई गई थी। रात को गांव वालों ने ड्रम को भर दिया। पर उन्हें ये पता नहीं था उनके एक लोटे दूध के बदले पानी ने ड्रम को पानी पानी कर दिया था।

सुबह साधुजी आए, सब गांव वाले भी इकट्ठा हुए। साधु जी ने ड्रम का पूरा ढक्कन खोलने को कहा और ड्रम की जब पूरी ढक्कन खुली तो सबकी मुंह भी खुली रह गई। ड्रम में एक बूंद भी दूध नहीं था। सब आश्चर्य से एक दूसरे को देख रहे थे और सोच रहे थे मैंने तो सिर्फ एक लोटा पानी डाला था। उन्हें अपनी गलती का एहसास होने लगा। तभी साधु जी ने उनकी तरफ देखा और कहा हमारा एक छोटा कदम बड़े बदलाव का कारण बन सकता है। यह कदम सकारात्मक या नकारात्मक हो सकता है। सबके बारे में सोचने की जगह यदि हम अपने कर्मों को सही करें तो अपने और समाज को एक बेहतर जीवन प्रदान कर सकते हैं।

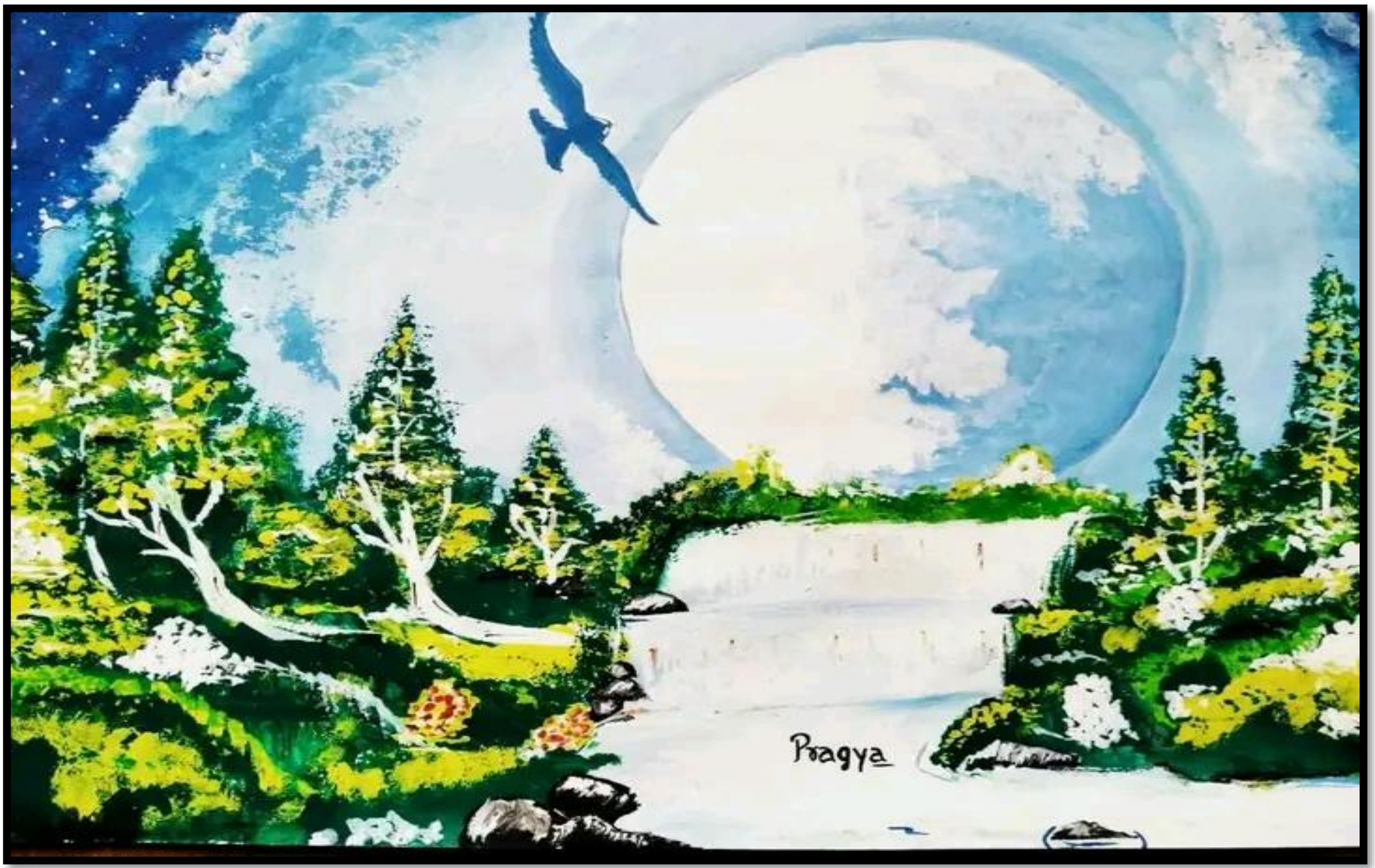

चित्रकार : सुश्री प्रज्ञा मौर्या, कनिष्ठ हिंदी अनुवादक

लत

सुश्री राजी राजन
सहायक लेखा अधिकारी

कुछ लोग अपने अतीत को भूलने के लिए
नशीली दवाओं का उपयोग करते हैं
कुछ लोग इसका उपयोग यह साबित करने
के लिए करते हैं कि वे मजबूत हैं
कुछ लोग सांसारिक सुखों के लिए
इसकी ओर रुख करते हैं
लेकिन एक बार जब आप इसका इस्तेमाल कर लेते हैं,
तो आप हमेशा के लिए फंस जाते हैं।
एक घातक कैंसर की तरह जो भीतर फैलता है
और आपको मार डालता है
एक घिनौने कीड़े की तरह,
जो पके और स्वादिष्ट फल को खा जाता है
जंगल की आग की तरह,
जो चारों ओर सब कुछ जला देती है
नशा अंदर से नष्ट कर देता है और आपको कब्र में भेज देता है।
नशा खलनायक है जो रिश्तों को तोड़ देता है
और अपने प्रिय की जान लेने से भी नहीं हिचकिचाते
यह सबसे प्रिय मित्र को सबसे बड़ा शत्रु बना देता है
और यह परिवारों को बिना किसी दया के तोड़ देता है।
आपकी लत भगवान पर भरोसा रखने की होनी चाहिए
ताकि आप मजबूत बनें और नशे को न कहें।
नशे के शिकार लोगों की मदद के लिए हाथ बढ़ाएँ
उन्हें जीवन से वापस लड़ने के लिए मजबूत करना।
एक दूसरे से प्रेम करना ही तुम्हारी लत होनी है
और प्रकृति और सभी प्राणियों से प्रेम करना।
आइए चारों ओर शांति का प्रकाश फैलाएं
और नशा मुक्त दुनिया बनाने के लिए हाथ मिलाएं।

भारतवर्ष में हिंदी भाषा का महत्व

सुश्री रेणुका जोशी
कनिष्ठ हिंदी अनुवादक

हमारा देश भारत कई संस्कृतियों एवं भाषाओं का एक अनमोल मिश्रण है। इस देश के प्रत्येक राज्य की एक मातृभाषा है। प्रत्येक व्यक्ति अपनी मातृभाषा का सम्मान करता है या यूं कहें कि प्रत्येक व्यक्ति अपनी मातृभूमि एवं मातृभाषा से एक ही तरह का लगाव महसूस करता है। भारत में ऐसी अनेक बोलियों और भाषाओं में हिंदी भाषा का विशालकाय जाल है। परंतु इन सभी भाषाओं में हिंदी भाषा अपना अलग अस्तित्व बनाए हुए है। विश्व की प्राचीनतम भाषाओं में से एक संस्कृत भाषा से हिंदी भाषा का सृजन हुआ है। हिंदी उत्तर भारत में बहुत अधिक प्रचलित है परन्तु यह विडंबना ही है कि उत्तर भारत की इतनी प्रचलित भाषा होने के बाद भी दक्षिण भारत में यह भाषा अपनी छाप नहीं छोड़ पाई। दक्षिण भारत में हिंदी भाषा से कहीं अधिक प्रचलित है अंग्रेज़ी भाषा। हमें इस बात पर बहुत विचार करने की आवश्यकता है कि हम अपने राष्ट्र की भाषा की जगह उस भाषा को अधिक महत्व देने लगे हैं जो हमारे आक्रमणकारियों ने लागू की थी। जिससे वे हमारे देश में अपनी जैसी मानसिकता वाले लोग पैदा कर सकें और स्वतंत्रता के बाद भी हमारे देश को अपना गुलाम बनाए रख सकें। भारत को आवश्यकता है अपने पराए की पहचान करने की एवं इस षडयंत्र को समझने की। आजकल लोगों का रुझान विदेशी भाषाओं जैसे अंग्रेज़ी, फ्रेंच, मेंडेरिन, स्पेनिश आदि में है। हमारा अपना देश भी साहित्यिक खजाने से भरा हुआ है। हिंदी, तमिल, तेलुगू जैसी भाषाओं के साहित्यिक भंडार का मुकाबला तो विश्व की किसी और भाषा का साहित्य कर ही नहीं सकता। परन्तु आज के युग में लोगों को शेक्सपियर का नाम याद है पर कालिदास को शायद ही कोई जानता हो। हम भेड़चाल में चलते हुए अंग्रेज़ी लेखकों को तो पढ़ते हैं पर अपनी ही मिट्टी के रत्नों जैसे मुंशी प्रेमचंद, रामधारी सिंह दिनकर, सुमित्रानंदन पंत आदि को एक भूली बिसरी याद बना चुके हैं। विचार करने योग्य बात यह है कि जब एक विदेशी भाषा पूरे भारत को जोड़ने का कार्य कर सकती है तो क्यों न यह कार्य हमारी अपनी किसी भाषा का हो। यदि हिंदी भाषा से संपूर्ण भारत जुड़ना शुरू होगा तो यह प्रत्येक भारतवासी के लिए गर्व की बात होगी। यह काम केवल सरकार का ही नहीं अपितु हर भारतवासी का है कि वह हिंदी भाषा के महत्व को समझे और उसे आत्मसात करे न कि किसी विदेशी भाषा की तरह उसका बहिष्कार करे। देश का भविष्य तभी उज्ज्वल होगा जब देश की भाषा उन्नति करेगी। जिस तरह आज अंग्रेज़ी की अंतर्राष्ट्रीय पहचान है, हमारा उद्देश्य भी हिंदी को वैसी ही एक पहचान दिलाने का होना चाहिए। हिंदी को अंतर्राष्ट्रीय पहचान तभी दिलाई जा सकती है जब हमारे देश में इसे पहचान मिले। हिंदी भारत की भाषा है। हिंदी हमारा गौरव है। हमारा उद्देश्य हिंदी को जनभाषा एवं राजभाषा बनाने का है एवं हम इस उद्देश्य को पूरा करने के लिए आजीवन प्रयासरत रहेंगे।

जय हिंद ! जय हिंदी ! जय भारत !

दुनिया और भूमंडलीय तापन

श्री एम टी विजयन
सहायक लेखा अधिकारी

आधुनिकीकरण का सबसे बड़ा अभिशाप बन चुका है भूमंडलीय तापन।

पुराने ज़माने में इंसान अपने खान-पान, कपड़े और मकान के लिए प्रकृति में उपलब्ध पेड़-पौधों, फल सब्जियों आदि का इस्तेमाल करता था, लेकिन समय बीतते-बीतते मनुष्य अपने जीवन में सुख सुविधा और खुशी व आराम लाने के लिए कई तरह के उपाय ढूंढ़ने लगा। इन परिश्रमों के परिणामस्वरूप, यूरोप के इंग्लैंड, फ्रांस, जर्मनी आदि देशों में जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में सुधार और आधुनिकीकरण के लिए भिन्न-भिन्न तरह के नए और आधुनिक उपकरणों का आविष्कार हुआ। खेती के काम के लिए ट्रैक्टर, टिलर फसलों की सिंचाई के लिए बिजली से चलने वाले पंपसेट आदि कई उपकरणों का आविष्कार हुआ। कपड़ा उद्योग के लिए आधुनिक मशीनों का निर्माण हुआ। इस प्रकार दुनिया का आधुनिकीकरण होता गया।

इस आधुनिकीकरण के फलस्वरूप, लोहे, सीमेंट, इस्पात, कपड़ों, मोटर गाड़ियों आदि के निर्माण के लिए बड़े-बड़े कारख़ाने बनाए जाने लगे। परिवहन की सुविधाओं के लिए सड़क, रेलवे आदि का भी निर्माण हुआ। पुस्तकें अख़बार आदि छपने के लिए आधुनिक प्रिंटिंग प्रेस का भी निर्माण हुआ। मरीजों के इलाज़ के लिए बड़े-बड़े अस्पताल बने। शिक्षा के क्षेत्र में भी आधुनिकीकरण हुआ, लेकिन इन बड़े कारखानों से बाहर आने वाले धुंएँ और रसायन के उत्सर्जन के कारण हमारा वातावरण प्रदूषित होता जा रहा है। धरती, जल, वायु सब प्रदूषित होता जा रहा है। इससे मनुष्य की ही नहीं दुनिया के सभी जीव-जंतुओं की हानि होती जा रही है।

भूमंडलीय तापन के कारण हिमालय व आर्कटिक जैसे क्षेत्रों में बर्फ पिघल रही है, जिसके कारण नदी, समुद्र आदि में पानी बढ़ता जा रहा है। भूमंडलीय तापन का सबसे प्रमुख कारण कारख़ानों से निकलने वाला धुंआ और रसायन है। वनों की कटाई या वनोन्मूलन से भी इसके प्रभाव में वृद्धि हो रही है। हमारी वन संपदा के लुप्त होने से वातावरण में कार्बन-डाई-ऑक्साइड की मात्रा में वृद्धि हो रही है, जिससे धरती का औसत तापमान बढ़ता जा रहा है।

यदि हम इस धरती और सभी जीव-जंतुओं की रक्षा चाहते हैं तो भूमंडलीय तापन को कम करना अनिवार्य है। वृक्षारोपण व प्रदूषण कम करके ही हम धरती माँ को बचा सकते हैं।

मिठास, कुछ अनमोल लम्हों की कहानी

श्री एन दिनकरन
वरिष्ठ उप महालेखाकार

आटा घूमता है,
रसोई के गर्म आलिंगन में
आटा, चीनी, अंडे मिलकर
सजाते हैं एक मधुर संगीत,
निर्माण की महाकविता...
एक आनंदमय परिणाम।

ओवन के अनछुए गर्म स्पर्श से,
बनता है एक केक, सुनहरे किनारे,नरम क्रंब
फिलिंग और फ्रॉस्टिंग के साथ
वनीला की खुशबू,चॉकलेट का स्वाद
प्रत्येक स्लाइस एक धरोहर
एक आनंदप्रद दृश्य।

तारों की तरह सजे हुए सपने,
खुशियां और उल्लास
विवाही पर्व हो या सालगिरह,
या फिर हो कोई जन्मदिन
हर साल केक लाता है,
खुशियों का एक नया तोहफा
फ्राइड पूड़ियां, सुनहरा रंग
खाद्य कला, एक शुद्ध आनंद।

फॉनडेंट की फुसकारों से,
बटरक्रीम की लहरों तक
हर केक कहता है किस्से,
जीवन की मीठी यादों के
हर एक बाइट में सिखाता है
पल का आनंद लेना।

केक के आलिंगन में,
पा लेते हैं हम स्वाद
प्रेम और अनुग्रह का,
तो चलो मनाते हैं
जीवन के हर क्षण को, उत्सव की तरह
केकों के साथ... कृतज्ञता के साथ...

बच्चों द्वारा मोबाइल फोन इस्तेमाल करने का नकारात्मक प्रभाव

सुश्री प्रीता वी एस
सहायक लेखा अधिकारी

लगभग सभी परिवारों को बच्चों द्वारा मोबाइल फोन का उपयोग करने की समस्या का सामना करना पड़ रहा है। बच्चों द्वारा मोबाइल फोन का उपयोग उन्हें फायदे की बजाए नुकसान पहुँचाता है। अधिक समय मोबाइल फोन का उपयोग करने वाले बच्चों में आत्मसम्मान की कमी और चिंता देखी गई है। सबसे बड़ा खतरा नींद की कमी है। बच्चों द्वारा मोबाइल फोन का इस्तेमाल करने से होने वाले नुकसान बहुत ज्यादा हैं।

फेसबुक, व्हाट्सएप आदि युक्त मोबाइल फोन उपयुक्त उपकरण हैं, जो बच्चों के व्यवहार निर्माण में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे। फेसबुक की अधिकांश सामग्रियों को निश्चित रूप से छोटे बच्चों की पहुंच से दूर रखने की जरूरत है। बच्चे फेसबुक और यू-ट्यूब पर उपलब्ध बॉक्सिंग मैच देखने को लेकर बहुत उत्साहित रहते हैं। अक्सर बच्चे अपने दैनिक जीवन में ऐसी प्रथाओं का पालन करने की कोशिश करते हैं, जिससे समस्याएं पैदा होती हैं। मोबाइल फोन के माध्यम से उपलब्ध अनुप्रयोगों में अनावश्यक एकाग्रता के कारण छात्रों में भी अपनी पढ़ाई में रुचि की कमी दिखाई देती है।

मोबाइल फोन के अत्यधिक इस्तेमाल से बच्चों के दिमागी विकास में कमजोरी पैदा होती है। मोबाइल फोन के सीमित उपयोग से मोबाइल फोन से निकलने वाली इलेक्ट्रो मैग्नेटिक विकिरण के प्रभाव को कम किया जा सकता है। माता-पिता, अपने बच्चों के प्रति अपने स्नेह के कारण बच्चों को मोबाइल फोन का उपयोग करने से रोकने में झिझकते हैं। जो माता-पिता बच्चों को मोबाइल फोन का उपयोग करने से रोकने की कोशिश करते हैं, वे अपने बच्चों के अड़ियल रवैये के कारण हमेशा अपनी कोशिशों में असफल हो जाते हैं। कई मामलों में, बच्चों को खाना खाने में सक्षम बनाने के लिए, उन्हे मोबाइल फोन का उपयोग करने की अनुमति दे दी जाती है। बच्चों में मोबाइल फोन की लत एक आम बात हो गई है, मीडिया में ऐसे कुछ मामले सामने आए हैं जहाँ नशे की लत वाले बच्चे ने आत्महत्या कर ली है। मोबाइल फोन का प्रयोग करने से जबरदस्ती रोका गया। इससे स्थिति की गंभीरता का पता चलता है। बच्चों द्वारा मोबाइल फोन का इस्तेमाल करने में माता-पिता का बहुत योगदान है। माता-पिता अधिकतर समय बच्चों के सामने ही मोबाइल फोन का इस्तेमाल करते हैं। वे अपनी मोबाइल फोन ऐसी जगह रखते हैं जहाँ बच्चे आसानी से पहुँच सकें।

उन्हें अपने मामलों या काम में परेशान न करने के लिए, वे बच्चों को मोबाइल फोन ऐप देखने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। माता-पिता को अक्सर अपने बच्चों के साथ बैठने का समय नहीं मिल पाता है जिससे उनका ध्यान मोबाइल फोन पर जाता है। बच्चों को मोबाइल फोन के इस्तेमाल से रोकने का सबसे अच्छा तरीका है कि उनके समय का उपयोग संपूर्ण पाठ्यचर्या संबंधी गतिविधियों में किया जाए, खेलकूद या बच्चों के लिए खाली समय में किताबें पढ़ने या परिवार के साथ बाहर घूमने में किया जाए। बच्चों को मोबाइल फोन देखने से रोकने के लिए परेशान करके उन्हें अनुशासित करने की कोशिश करने के बजाय, उनका ध्यान पहले बताई गई चीजों की ओर लगाया जा सकता है। लगातार और निरंतर ध्यान भटकाने से निश्चित रूप से बच्चों को मोबाइल फोन में उलझने से बचाने में मदद मिलेगी। माता-पिता को भी घर के अन्य लोगों या रिश्तेदारों को यह निर्देश देने का प्रयास करना चाहिए कि वे बच्चों को मोबाइल फोन से खुश न करें।

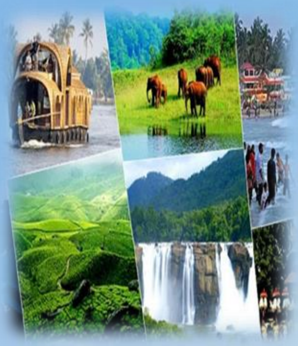

नई दिल्ली से केरल

श्री छोटूलाल मीणा
सहायक लेखा अधिकारी

कभी-कभार आप ऐसी स्थिति में पहुँच जाते हैं जहाँ आप के दोनों हाथों में लड्डू तो हैं लेकिन आप खा नहीं सकते। ठीक वैसी ही स्थिति मेरे साथ उत्पन्न हो गई जब मेरा सी ए जी (एएओ अकाउंट्स-2021) का स्टेट अलोकेशन आया और मुझे पीएजी (ए एंड ई), केरल, तिरुवनंतपुरम अलोकेट किया गया। मैं वर्ष 2019 से ही रक्षा मंत्रालय में कनिष्ठ सचिवालय सहायक के रूप में नई दिल्ली में कार्यरत था जो मेरे घर से लगभग 500 कि.मी. दूर था। दिल्ली से मुझे घर जाने में लगभग 10-12 घंटे लगते थे जो अक्सर मैं रात्रि में सफर किया करता था जिससे मुझे ऑफिस समय पर पहुँचने में कोई परेशानी नहीं होती थी। सीजीएल -2021 से ऑफिसर की पोस्ट मिली तो बहुत खुशी हुई लेकिन जैसे ही मैंने घर से केरल की दूरी (लगभग 2500 किमी.) देखी तो वह खुशी आधी हो गयी। उस पूरी रात मुझे नींद नहीं आई। मेरी पत्नी को तो पता ही नहीं था कि केरल इतनी दूर है। जब उसे गूगल मैप पर दिखाया तो वह भी चिंता में पड़ गयी। इसके बाद मैंने अपने ऑफिस में वरिष्ठों से सलाह ली तो बहुत लोगों ने तो कहा कि मत जाओ इतना दूर इधर दिल्ली में ही ठीक है, मैं भी असमंजस में था कि जाऊं या न जाऊं केरल। लेकिन जब मैंने अपने ही

ऑफिस में ऑडिट के लिए आए हुए सीएजी के अधिकारियों से राय ली तो उन्होंने पूछा कि तुम्हें जितनों से भी केरल न जाने की सलाह मिली उनमें से कितने अधिकारी थे। तो मैंने कहा कोई नहीं। तब ऑडिट में आए हुए अधिकारियों ने कहा कि हमारी यह सलाह है कि तुम बिना किसी चिंता के एजी ऑफिस केरल ज्वॉइन कर लो ।

अब यहाँ से मेरा सफर शुरु होता है मेरे गांव सिंगोली (राजस्थान) से तिरुवनंतपुरम का। मैंने 04 अगस्त 2023 का नई दिल्ली से तिरुवनंतपुरम का ट्रेन का टिकट बुक कर लिया था। मेरे वर्तमान ऑफिस से मुझे टेक्निकल रिज़ाइन दिनांक 04 अगस्त 2023 की तारीख का प्राप्त करने तक मुझे अपना सरकारी आवास खाली करने, सभी सामान घर भिजवाने तथा आवश्यक कागजी कार्रवाई करने में एडमिन, एस्टेट ऑफिस आदि के कई चक्कर लगाने के कारण मैं पहले से ही थक गया था। जैसे ही मुझे 04 अगस्त की शाम को टेक्निकल रिज़ाइन पत्र मिला मैं खाना खाकर आर के पुरम (नई दिल्ली) से नई दिल्ली जंक्शन के लिए रवाना हो गया । नई दिल्ली रेलवे स्टेशन पहुँचते समय बहुत तेज बारिश होने लगी और मेरे पास दो भारी बैग सामान था। सोच रहा था अभी तो स्टेशन भी नहीं पहुँचा फिर भी इतना परेशान हो गया हूँ अभी तो नई दिल्ली से तिरुवनंतपुरम लगभग 3000 किमी. की दूरी यानी 50 घंटे का सफर कैसे तय कर पाउंगा। पहली बार मैं घर से इतनी दूर जा रहा था। जैसे-तैसे हिम्मत करके केरल एक्सप्रेस के अपने डिब्बे में अपनी सीट पर पहुँचा और अपना सामान रख दिया। अगर दो मिनट भी लेट पहुँचता तो फिर मेरी ट्रेन छूट जाती । मुझे बहुत परेशानी होती क्योंकि मुझे सोमवार को ज्वॉइन करना जरूरी था।

जैसे ही मैं अपनी सीट पर पहुँचा तो एक लड़का पहले ही मेरी सीट पर बैठा था। मुझे याद आया कि मेरी सीट तो आरएसी में बुक थी और करंट स्टेटस देखने पर पता चला कि मुझे तो आरएसी वाली सीट मिली जिस पर उस लड़के और मुझे दोनों को शेयरिंग में यात्रा करनी थी। मैंने उस लड़के से पूछा भाई तुम कहाँ तक चलोगे तो उसने बताया कोयंबटूर तक। यानी कि लगभग 2 दिन हमें साथ ही यात्रा करनी थी। दिल्ली से ग्वालियर तक, रात्रि 12 बजे तक तो ऊपर वाली खाली सीट पर सो गया। जब उस सीट पर ग्वालियर से पैसेंजर आ गया तो मैं नीचे अपनी आरएसी वाली सीट पर आ गया। खुशकिस्मती से वह लड़का शरीर से पतला था तो हमें एक सीट पर दो जनों को सोने में कोई परेशानी नहीं आई। सुबह उठे तो गाड़ी भोपाल पहुंच चुकी थी। गाड़ी जैसे जैसे मध्यप्रदेश में आगे बढ़ी तो घने जंगल, ऊंचे पहाड़, हरियाली आदि के कारण ट्रेन से बाहर देखने में बहुत आनंद आ रहा था।

दिल्ली से ट्रेन में बैठते वक्त मैंने नाशपाती, सेब, केला, बिस्किट, नमकीन खरीदकर बैग में रख लिए ताकि ट्रेन में नाश्ता न भी मिले या खाना लेट मिले तो मैं इनसे अपनी भूख मिटा लूं। सुबह उठकर मैंने मुंह धोकर, ब्रश कर, सेब और केले का नाश्ता किया और केटरिंग वालों से चाय ले ली।

मैं ट्रेन में स्लीपर कोच में बैठा था लेकिन ट्रेन में इतनी भीड़ थी कि ऐसा लग रहा था मानो मैं सामान्य श्रेणी के डिब्बे में बैठा हूं। हमारे यहां अगर किसी ने ट्रेन में टिकट ले ली तो वह ऐसे सोचता है कि मानो उसने पूरी ट्रेन ही खरीद ली। अब वह जहाँ चाहे बैठ सकता है अगर किसी ने उसे रोका तो फिर हंगामा हो जाएगा। ऐसा शायद या तो भीड़ से बचने के लिए या फिर अज्ञानतावश क्योंकि बहुतों को पता ही नहीं होता कि जनरल टिकट मतलब सामान्य श्रेणी के डिब्बे में ही बैठना होता है। पहले मैं सोचता था कि लोग फालतू में एसी का टिकट क्यूं लेते हैं, जब भीड़ को देखा तो समझ आया कि अगर शांति और सुरक्षित, बिना लड़ाई झगडे के यात्रा करनी है तो एसी का टिकट बुक करना ही अच्छा होता है।

5 अगस्त की दोपहर 2 बजे ट्रेन पूरा मध्यप्रदेश पार कर महाराष्ट्र के नागपुर शहर पहुँच गई। जैसे ही ट्रेन रुकने पर, ट्रेन में संतरे बेचने वालों की लाईन लग गई मैं समझ गया, यह नागपुर शहर ही होना चाहिए। शाम को चार बार खाने के ऑर्डर लेने वाले आए तो मैंने भी खाने का ऑर्डर कर दिया और वे खाना लेकर आ गए कुछ ही समय में। मैंने खाना खाया और थोड़ी देर के लिए खिड़की के पास बैठकर बाहर शाम के मौसम को निहारते हुए मंद गति से गाने सुन रहा था। कुछ देर बाद अंधेरा हो गया और मैं अपनी चादर ओढ़कर सो गया।

6 अगस्त की सुबह उठा तो ट्रेन महाराष्ट्र को पार कर तमिलनाडु राज्य में प्रवेश कर चुकी थी। जैसे जैसे ट्रेन केरल की ओर बढ़ रही थी वैसे वैसे ट्रेन में बैठने वाले और बाहर दिखने वाले व्यक्तियों और आसपास में बोली पहनावा खानपान आदि की चीजों में परिवर्तन दिखाई पड़ रहा था। सेलम, तमिलनाडु में मैंने खाने के लिए समोसा लिया, खाने पर पता चला कि उसमें आलू तो है ही नहीं सिर्फ प्याज है। धीरे धीरे एहसास होने लगा कि घर से बहुत दूर जा रहा हूं। हम कुछ खाने की चीज खरीदतें तो (मैं और मेरे साथ सफर कर रहा अमन) आपस में मिल बाँट कर खाते। अमन 10000 रुपये प्रतिमाह की तनख्वाह पर कंपनी के लिए बहुत दूर दूर सैंपल देने जाता है और वह अभी चाय का सैंपल देने कोयंबटूर आया था। तो उसके बारे में सोचा तो थोड़ा मन हल्का हुआ कि मेरे से बहुत बुरी स्थिति में बहुत से लोग हैं जो कम तनख्वाह में मुश्किल काम कर रहे हैं।

शाम 4 बजे कोयंबटूर आया और अमन अपना बैग लेकर उतर गया। मैंने उसका नंबर लिया और उसे बाय करके मेरी ट्रेन आगे बढ़ गई। जैसे जैसे आगे बढ़े चावल की खेती और नारियल के पेड़ बहुतायत में दिखने लगे। जैसे ही हमने केरल राज्य में प्रवेश किया हमारी ट्रेन थोड़ी धीरे हो गई और बाहर प्राकृतिक ग्रीनरी, ट्रेन के ट्रैक के दोनों ओर सघन होती जा रही थी। रात के 10 बजे मेरी ट्रेन तिरुवनंतपुरम पहुँचने वाली थी। मैंने अपने साथी महेश से पहले ही रुकने और कमरे की व्यवस्था के लिए बात

कर ली थी। लेकिन मेरी ट्रेन, बीच में वंदे भारत ट्रेन की क्रॉसिंग होने की वजह से दो घंटे लेट हो गई। रात 12:10 बजे मैं तिरुवनंतपुरम सेंट्रल रेलवे स्टेशन पहुँचा। मेरे मित्र महेश ने कहा कि मैं अपनी लोकेशन भेज रहा हूं, तुम टैक्सी करके वहां आ जाओ। जैसे ही मैं पहली टैक्सी करके आगे पहुँचा आगे महेश खड़ा था। हम सामान लेकर कमरे में गए थोड़ी देर बातचीत की और सो गए।

7 अगस्त, 2023 की सुबह को मैं जल्दी उठा क्योंकि मुझे ऑफिस में जॉइनिंग की आवश्यक कार्रवाई के लिए सुबह 9 बजे ऑफिस पहुँचना जरूरी था। सुबह जैसे ही ऑफिस पहुँचे तो एडमिन में रिपोर्ट करने के लिए बोला गया। ऑफिस का स्टाफ बहुत ही कॉर्पोरेटिव था। मेडिकल के लिए उन्होंने जल्द ही हमें एक स्टाफ के साथ जनरल हॉस्पिटल भेजकर हमारा मेडिकल करवाया। उसके बाद जॉइनिंग के लिए हमसे आवश्यक ओरिजनल प्रमाण पत्र और अंकतालिका मांगी गई तो मैंने उन्हें सभी प्रमाणपत्र दे दिए। मुझे एजी ऑफिस केरल के ऑफिस का माहौल बहुत अच्छा लगा। यहाँ के लोग बहुत ही सरल, हँसमुख, मदद के लिए तत्पर और बेहद अनुशासित हैं। सड़क पर दोपहिया वाहनों में छोटे बच्चों से लेकर बड़े व्यक्ति तक हेलमेट लगाते हैं। सभी यातायात के नियमों का पालन करते हैं। यहाँ ऑफिस में कैंटीन की सुविधा बहुत अच्छी है जिससे हमें ऑफिस से खाना समय पर मिल जाता है।

यहाँ आकर मेरे यहाँ बहुत से दोस्त भी बन गए। सुबह ऑफिस आते ही कार्ड पंचिंग कर नाश्ता करना, फिर चाय और लंच, फिर ऑफिस में अपनी सीट पर काम और दिन कब बीत जाता है पता ही नहीं चलता। धीरे धीरे यहाँ मन लगने लगा है। कभी कभी मन दुखी भी हो जाता है जब घर की याद आती है तो फिर विकास दिव्यकीर्ति सर की बात को याद कर मन को हल्का करते हैं। विकास दिव्यकीर्ति सर कहते हैं, "जो मिल गया सो मिट्टी है और जो नहीं मिला वो सोना है।" अर्थात व्यक्ति कभी कभी नहीं बल्कि बहुत बार जो चीजें उसे मिली हैं उनकी कद्र न कर जो चीज नहीं मिली उस पर इतना चिंतित होते हैं कि अपना जीवन दु:खदायी बना लेते हैं। इसलिए मैने जो चीजें मेरे पास है उनकी कद्र करना सीख लिया है। जिससे मेरी दैनिक दिनचर्या में भी मानसिक दबाव कम हुआ है। और मेरे यहां केरल में भी सब कुछ बहुत अच्छा चल रहा है। अब लग रहा है कि मेरा दिल्ली छोड़कर केरल आने का फैसला सही साबित हो रहा है। अगर मैं वहीं से सोचकर इतनी दूरी का कहकर परेशान होता रहता तो मैं *"Kerala-God's Own Country"* में रहने का मौका गंवा देता।

जीवन एक दौड है

सुश्री आरती कुमारी
सहायक लेखा अधिकारी

'थ्री इडियट्स' फिल्म का एक डायलॉग है, "जीवन एक दौड़ है, अगर आप तेजी से नहीं दौड़ेंगे तो लोग आपको कुचल देंगे और आपसे आगे निकल जायेंगे।"

आज हम में से अधिकांश लोग जीवन की इस तथाकथित 'रैट रेस' में आगे दौड़ने की कोशिश कर रहे हैं लेकिन ज्यादातर लोग इस दौड़ में फंस जाते हैं और कभी इससे आगे नहीं बढ़ पाते। 'रिच डैड पूअर डैड' के लेखक रॉबर्ट कियोसाकी ने जीवन की इस दौड़ का नाम "द रैट रेस" रखा है।

"रैट रेस" क्या है?

हम अपने जीवन को शुरू से देखें तो पायेंगे कि बच्चा पैदा होता है, स्कूल जाता है और घर पर सब बोलते हैं कि तुम्हे अच्छे मार्क्स लाने हैं ताकि अच्छी नौकरी मिले। फिर बच्चा एक दिन कॉलेज में चला जाता है और आखिरकार उसे डिग्री मिल जाती है। जो उसे उम्र के 22 साल तक बहुत सारे "रेस" जीत कर हासिल होती है। बच्चे को लगता है कि उसने डिग्री पाने की रेस को जीत लिया और अब उसे डिग्री मिल गई है। अब तो उसकी लाइफ सेट हो जाएगी।

बच्चों की जो प्रोग्रामिंग की गई है, उसके अनुसार बच्चा एक बहुत सेफ, सिक्योर और अच्छी सैलरी वाली जॉब तलाश करता है। फिर थोड़ी परेशानी के बाद एक दिन उसे एमएनसी कंपनी में या सरकारी नौकरी मिल जाती है। वह कमाने लगता है। अब उसके पास क्रेडिट कार्ड के ऑफर्स आने लगते हैं और वो शॉपिंग करना शुरू करता है, क्योंकि पैसे आने लगे हैं। नई बाइक, कार, मोबाईल, कपड़े, जूते और भी बहुत कुछ खरीदने लगता है। फिर कुछ समय बाद उसकी शादी हो जाती है। शादी के बाद खर्चे और ज्यादा बढ़ जाते हैं। और जब परिवार बढ़ता है तो और ज्यादा मेहनत करनी पड़ती है। अच्छे और बढ़ते वेतन के साथ ही साथ आय कर, होम लोन, पर्सनल लोन मेंटेनेंस का खर्च और दूसरे बिलों के भुगतान करने के बाद हैरानी होती है कि बढ़े हुए वेतन के बावजूद उनके हाथों में थोड़े से ही पैसे बचते हैं। लोग इसी सब में फंस जाते हैं और भूल जाते हैं "रैट रेस" के बाहर भी कोई जिंदगी है।

रैट रेस" से बाहर निकलने के लिए हमें फाइनेंशियल एजुकेशन यानी एकाउंट्स और निवेश को सीखना और समझना पड़ता है, पर इन कामों को बहुत उबाऊ माना जाता है।

"रैट रेस" का हिस्सा न बने और अपनी जिंदगी को फाइनेंशियली फ्री होकर जियें।

संध्या का समय

सुश्री लक्ष्मिप्रिया टी जी
सहायक लेखा अधिकारी

संध्या का समय है,

दिन समाप्त हो गया है

सूर्य की किरणों ने आसमान में

गुलाबी रंग भर दिया है

पंछी इस गुलाबी आसमान में उड़ते हुए

चल दिए अपने घोंसलों की ओर,

दिन समाप्त हो गया है ...

जब भी सोचूं संध्या के बारे में

यही बात आती है मन में

कि यह है अंत दिन का

हाँ, सत्य है ...

यह दिन के समापन का समय है,

मगर इसके साथ

यह रात का आरंभ भी है ।

सूर्य हम सबसे विदा लेकर चला गया,

परन्तु चंद्रमा और अनेक तारे

अपनी चमक से

आसमान को हैं जगमगा रहे ।

शाम होने पर पक्षी चले जाते हैं

अपने-अपने घोंसलों में,

मगर ऐसे भी हैं पंछी और जीव,

जो निकलते हैं केवल रात में।

दिन होता है सुंदर पर

रात का भी होता है अपना सौंदर्य,

बस नज़र चाहिए

इसे पहचानने के लिए।

जीवन में हमेशा स्मरण रहे इस बात का

अगर कुछ समाप्त हुआ है

तो कुछ आरंभ भी हुआ है

इस समाप्ति को लेकर न हो उदास,

जियो इस आरंभ को अपनाकर

तभी रहेगी उम्मीद,

जीवन में आगे बढ़ने की।

एक दोस्त के बिछड़ने का दर्द

सुश्री नलिनी मेनोन
सहायक लेखा अधिकारी

एक दोस्त को खोना, यह दर्द गहरा

दिल के करीब था, वह था हमारे साथ।

सपनों की दुनिया में हम हंसते थे साथ-साथ

पर जिंदगी की ये राहें, ले गई उन्हें दूर,

हमारी बिछड़ने की बातें, बन गई आवाज़।

वो पल याद आते हैं, हर रोज रात,

जब हम दोस्तों के साथ, करते थे बात।

उनकी मुस्कान, उनकी बातें, बीती जिंदगी के साथ

वो दोस्त हमारे दिल के करीब, थे हमारे पास।

पर जब वो चले गए, ये जीवन हुआ शून्य,

आंसूओं की बूंदे, बन गई हमारी आंखों से गिरने का बहाना।

एक दोस्त को खोना, यह दर्द गहरा,

पर उनकी यादों में, बितायेंगे हम हर लम्हा।

रात एक सफ़र

श्री जिनू अब्राहम
वरिष्ठ लेखाकार

रात एक सफ़र जो लगा चले जा रहा है
अनगिनत खयालों में हमें ले बहे जा रहा है
सोने की कोशिश में हम कहीं दूर निकल गए
पीछे मुड़ के देखा तो कहीं दूर निकल गए
वापस लौटने का मन किया तो पाँव नहीं उठे
और किसी तरह जो उठाया पाँव को
तो दिल कहीं और, हम कहीं और चल दिए
बहुत कोशिश की दोनों को एकजुट करने की
लेकिन नहीं, उन्होंने तो ठान ली थी
कि दो दिशाओं में चलेंगे एक डगर अनजान थी
तो दूसरी जानी पहचानी दिल को किस ओर मोडें,
यही असमंजस था लेकिन कहाँ ये दिल भी माने
चला उस ओर था जहाँ न लोग अपने थे न डगर अपनी थी
बहुत यादों को संजोया था निकल गया हाथ से रेत की तरह
ढह गया सपनों का महल और रह गया खंडहर
फिर से बनाने की कोशिश में हूँ एक छोटा सा घोंसला
हिम्मत नहीं रह गयी अब उस परिंदे की तरह
जो तूफान से लड़ के भी, बनाती है अपनी नींव
चलो रात का सफ़र आया है ख़त्म होने को
एक नई सुबह की शुरूआत करें
क्या पता आने वाली सुबह एक नई रोशनी लेकर आए
खत्म करें रात के सफ़र को और चलें उस उजाले की ओर
जो लेकर आया है नए सपने जिनको संजोना है एक बार और .....

चटोरन

श्री आकाश मिश्रा
कनिष्ठ हिंदी अनुवादक

*थरथराती ठण्ड में
ठिठुरते हुए
वह एक-एक कर
पत्तलों को चाट रही थी,
ताकि जीने की अभिलाषा
पूरी कर सके।*

*जीवन के सांय काल में भी
उसकी आदत गई नहीं
बर्तन को चाटने की
कुछ खाकर
कुछ औरों में बाँटने की।*

*कोई मर्ज नहीं है
जो सहायक हो सके
उसे इस दर्द को सहने में
तो कोई हर्ज नहीं है फिर
उसे चटोरन कहने में।*

हिंदी को मातृभाषा बनाएँ

सुश्री रेणुका जोशी
कनिष्ठ हिंदी अनुवादक

चलो साथ में जुड़ते जाएं

अपना एक नया काफिला बनाएं

साथ ले सभी भाषाएं अपनी

हिंदी को राष्ट्रभाषा बनाएं

अनंत बोलियाँ अनंत राग हैं

अंग्रेज़ी से फिर क्यों लगाव है

वतन जब प्यारा हिंद हमारा

जन में हिंदी की गाथा पहुंचाएं

चलो साथ में जुड़ते जाएं

अपना नया एक काफिला बनाएं

हम सब की पहचान है हिंदी

भारत माँ की शान है हिंदी

देश को और आगे ले जाएं

हिंदी का एक स्वर्ग बनाएं

चलो साथ में जुड़ते जाएं

अपना नया एक काफिला बनाएं

पदोन्नत्ति और लक्ष्य

श्री जयकुमार भास्करन
वरिष्ठ लेखा अधिकारी

"जब आपकी चाहत बहुत गहरी हो तो ब्रह्माण्ड भी उस लक्ष्य को प्राप्त करने में आपकी सहायता करता है।"

पाउलो कोएल्हो

सैंतीस साल के बाद तृश्शूर शाखा से त्रिवेन्द्रम के मुख्य कार्यालय में फरवरी के महीने में मुझे स्थानांतरण मिला। ढ़लती उम्र में घर छोड़कर जाना खुशी से ज्यादा पीड़ा देती है, मगर सरकारी सेवा में यह अनिवार्य है और इस पीड़ा को सहन करना धर्म।

आवास ढूंढ़ते-ढूंढ़ते एक पुरानी सी इमारत की ओर किसी ने रास्ता दिखाया। पुराना सा लॉज जिसकी दीवारें खुद अपनी उम्र बता रही थीं। पतले गलियारे से खाली कमरे की ओर जाते हुए अपनी किस्मत को खुब कोसा। आँखों में दो बूँद आँसू भी आये, पर यह तो होना ही था। पदोन्नति के बाद यह पहला स्थानांतरण था। कार्यालय का नया माहौल, अपरिचित लोग, नये नौजवान, लगता था पहली बार नौकरी मिली है और वह भी सेवानिवृति की उम्र में। पदोन्नत्ति के कारण कुछ ज्यादा इज्जत मिल रही थी, जिसकी कई सालों से बिल्कुल भी आदत नहीं थी। कभी-कभी जिन्दगी इतनी बदल जाती है कि लगता है 'हम रहे न हम, तुम रहे न तुम'।

पहला दिन अपने आप को संभालने में निकल गया पर दूसरे दिन कार्यालय से निकलने के बाद महसूस हुआ कि बाहर कुछ ज्यादा बदला नहीं है। सैतीस साल के भीतर कुछ इमारतें जरूर खड़ी कर दी गयी हैं परन्तु सचिवालय के सामने पुलिस का घेरा, हड़ताल, नारेबाजी, भाषण इत्यादि में अभी तक कोई बदलाव नहीं आया है। किसी तरह पुलिस की लाठी चार्ज से बचकर लॉज के आँगन में पहुँचा, तभी मेरे साथी ने चौंकाने वाली एक बात बताई। इसी लॉज में कभी भारत के पूर्व राष्ट्रपति श्री अब्दुल कलाम रहते थे। इस लॉज के पास के सभी होटलों में उनकी तस्वीरें बड़ी इज्जत से रखी हुई हैं।

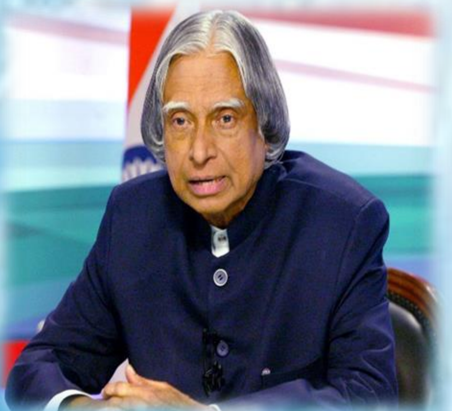

कल जहां इस लॉज के तंग गलियारे से नफरत सी महसूस हो रही थी, आज उससे थोड़ा गर्व महसूस हो रहा था। जहाँ मैं चल रहा हूँ वहाँ कभी पूर्व राष्ट्रपति चल चुके हैं। गलियारे में फैले हुए मकड़ी के जाल आज गंदगी से ज्यादा मकड़ी का सराहनीय काम लग रहा था। बिस्तर पर लेट कर धुंधले छत को ताकते हुए घर की याद आई। शुक्रवार अभी चार दिन दूर है। 290 कि.मी. दूर पहुँचने में अभी 96 घंटे बाकी हैं । बहुत दूर लग रही थी मंजिल। तभी श्री अब्दुल कलाम की याद आयी। इसी लॉज के किसी कमरें में धुंधले छत की ओर ताक कर मेरी तरह श्री कलाम भी कभी लेटे

होंगे। फर्क केवल इतना था कि मेरा सपना 96 घंटे और 290 कि.मी. दूर था और उनका सपना करोड़ों मील अंतरिक्ष के बेशुमार सितारों पर पहुँचने का था। परिस्थितियाँ कुछ भी हो सपनों को साकार करने की इच्छा मनुष्य को कहाँ से कहाँ पहुँचा देती हैं। श्री अब्दुल कलाम इसका सबसे बड़ा उदाहरण हैं। आम गरीब नागरिक से वैज्ञानिक और फिर भारत के सर्वश्रेष्ठ नागरिक या राष्ट्रपति, पर कभी इस भार को उन्होंने सर पर नहीं लिया और सबका दिल जीत लिया।

पदोन्नत्ति प्राप्त करने वाले हर व्यक्ति पर प्रभाव डालने वाली यह घटना श्री अब्दुल कलाम अक्सर सुनाते थे। अंतरिक्ष में भेजा गया एक रॉकेट जब समुद्र में जा गिरा और इस असफलता की जिम्मेदारी उस समय भारतीय अन्तरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) के प्रमुख श्री सतीश धवन ने अपने ऊपर ली और जब अगली बार इसमें सफलता प्राप्त हुई, तब इसका सारा श्रेय अपनी वैज्ञानिक टोली को दिया। श्री अब्दुल कलाम नेतृत्व और मैनेजर का अंतर बताने के लिए अक्सर यह उदाहरण देते थें। क्या पदोन्नत्ति हमें केवल एक मैनेजर बनाती है या वाकई में एक टोली की सफलता और असफलता को साथ लेकर आगे बढ़ने की प्रेरणा देती है, यह गहरे चिंतन का विषय है।

रोज कार्यालय जाना और शाम को लौटना और लॉज में खाली बैठना, एक ऊबी हुई दिनचर्या बन गई। इसी दौरान नज़र सचिवालय के सामने हड़ताल पर बैठे एक नौजवान पर पड़ी। 6-7 साल पहले, इसका भाई पुलिस हिरासत में मारा गया था। पुलिस का कहना था कि उसने हिरासत में आत्महत्या कर ली थी। याद आया अखबारों में कुछ दिनों के लिए यह बड़ी खबर थी। मानव अधिकार, स्वयं सेवी संगठन, विपक्ष के नेता सब वारदात के खिलाफ आवाज उठा चुके थें। धीरे-धीरे शायद सब उब चुके थे। आज यह युवक कई सालों से अपने भाई की तस्वीर लगाकर सचिवालय के सामने अपनी लड़ाई लड़ रहा है। सच्चाई वक्त के साथ फीकी पड़ चुकी है और शायद कभी सामने न आएगी, परन्तु इस युवक के दृढ़ निश्चय की दाद देनी पड़ेगी। बहुत कुछ करने की इस उम्र में उसने अपने कीमती पल अपने मृत भाई को न्याय दिलाने में लगा दिया है। न्याय और नियम कभी-कभी विपरीत मोड़ ले लेते हैं। सबको लगता है कि न्याय कुछ ऐसा होना चाहिए था परंतु नियम न्याय करने की अनुमति नहीं देता। एक सफल सरकारी अफसर वही है जो बीच का रास्ता ढूंढ कर समस्या का हल कर सके। कानून के उलझे हुए दांव-पेंच में सरकारी फाइलें आगे नहीं बढ़ पाती और कभी-कभी उम्मीदों की मृगतृष्णा में किसी की जिंदगी खत्म हो जाती है।

कई सालों बाद कार्यालय में आयी नई पीढ़ी से मुलाकात हुई। भारत के अन्य प्रदेशों से आई युवा पीढ़ी कुछ यहां आकर खुश है और कुछ अपने परिवार से बिछड़ने के दुख में है। हमारी पीढ़ी से ज्यादा गतिशील यंत्रों में ज्ञान और अपनी आजीविका को ऊंचाइयों पर ले जाने का उत्साह है। उनसे यही कहना है कि हमारी पीढ़ी का सूरज धीरे-धीरे ढल रहा है। आगे इस कार्यालय को ले जाने की क्षमता हम से ज्यादा आप में है। आप नियमों का पालन जरूर कीजिए पर जो सहानुभूति के योग्य हो उसे अनदेखा मत कीजिए, क्योंकि हम भी कार्यालय के बाहर निकलते ही एक आम आदमी है।

सुवर्ण यादें

सुश्री जेसिंथा मॉरिस
सहायक पर्यवेक्षक

मैं बिल्कुल नहीं भूलूंगी
महालेखाकार के कार्यालय में सैंतीस सालों का सेवाकाल
केवल तेईस वर्ष की आयु में
क्लर्क टाइपिस्ट का पदभार संभाला ...
मेरे जीवन का पृष्ठ भाग
प्रधान पृष्ठ में व्यतीत किया
इस बड़े कार्यालय में शादी करके परिवार बनाया
सबकी सहायता की ...
बच्चों को अच्छी तरह पढ़ाया
परिवार बनाया, घर बनाया
खुशियां मनाई, सबको योग्य बनाया
ये मेरे श्रेष्ठ काम ...

मंदिर के समान पवित्र है
अनीति या अधर्म कुछ नहीं,
काम करने में कोई आलस नहीं
स्वर्ग जैसा महत्वपूर्ण है मेरा ऑफिस ...
स्वतंत्रता दिवस, गणतंत्र दिवस,
ओणम, होली या नया साल
सब दिनों को खास तरीके से मनाते
भाई-बहन के साथ मजा करते ...
मुझे एक लेखिका बनाया
बीस किताबें हुई प्रकाशित
मन को शक्ति दी, ऊर्जा दी
मेरे प्यारे ऑफिस, महनीय ऑफिस ने ....

हिंदी के प्रयोग के लिए वर्ष 2023-24 का वार्षिक कार्यक्रम

क्र.सं.	कार्य विवरण	"क" क्षेत्र	"ख" क्षेत्र	"ग" क्षेत्र
1.	हिंदी में मूल पत्राचार (ई-मेल सहित)	1. क क्षेत्र से क क्षेत्र को **100%** 2. क क्षेत्र से ख क्षेत्र को **100%** 3. क क्षेत्र से ग क्षेत्र को **65%** 4. क क्षेत्र से क व ख क्षेत्र **100%** के राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय/ व्यक्ति	1 ख क्षेत्र से क क्षेत्र को **90%** 2 ख क्षेत्र से ख क्षेत्र को **90%** 3 ख क्षेत्र से ग क्षेत्र को **55%** 4.ख क्षेत्र से क व ख क्षेत्र **90%** के राज्य/संघ राज्यक्षेत्र के कार्यालय/व्यक्ति	1 ग क्षेत्र से क क्षेत्र को **55%** 2 ग क्षेत्र से ख क्षेत्र को **55%** 3 ग क्षेत्र से ग क्षेत्र को **55%** 4. ग क्षेत्र से क व ख क्षेत्र **55%** के राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय/व्यक्ति
2.	हिंदी में प्राप्त पत्रों का उत्तर हिंदी में दिया जाना	**100%**	**100%**	**100%**
3.	हिंदी में टिप्पण	**75%**	**50%**	**30%**
4.	हिंदी माध्यम से प्रशिक्षण कार्यक्रम	**70%**	**60%**	**30%**
5.	हिंदी टंकण करने वाले कर्मचारी एवं आशुलिपिक की भर्ती	**80%**	**70%**	**40%**
6.	हिंदी में डिक्टेशन/की बोर्ड पर सीधे टंकण (स्वयं तथा सहायक द्वारा)	**65%**	**55%**	**30%**
7.	हिंदी प्रशिक्षण (भाषा, टंकण, आशुलिपि)	**100%**	**100%**	**100%**
8.	द्विभाषी प्रशिक्षण सामग्री तैयार करना	**100%**	**100%**	**100%**
9.	जर्नल और मानक संदर्भ पुस्तकों को छोड़कर पुस्तकालय के कुलअनुदान में से डिजिटल सामग्री अर्थात् हिंदी ई-पुस्तक, सीडी/डीवीडी, पैनड्राइव तथा अंग्रेजी और क्षेत्रीय भाषाओं से हिंदी में अनुवाद पर व्यय की गई राशि सहित हिंदी पुस्तकों की खरीद पर किया गया व्यय।	**50%**	**50%**	**50%**
10.	हिंदी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं में काम करने की सुविधायुक्त इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों जिनमें कंप्यूटर भी शामिल है, की खरीद	**100%**	**100%**	**100%**

11.	वेबसाइट द्विभाषी हो	**100%**	**100%**	**100%**
12.	नागरिक चार्टर तथा जन सूचना बोर्ड आदि द्विभाषी रूप में प्रदर्शित किए जाएं ।	**100%**	**100%**	**100%**
13.	(i) मंत्रालयों/विभागों और कार्यालयों के अधिकारियों (उ.स./निदे./सं.स.) तथा राजभाषा विभाग के अधिकारियों द्वारा अपने मुख्यालय से बाहर स्थित कार्यालयों का निरीक्षण (कार्यालयों का प्रतिशत)	**25%** (न्यूनतम)	**25%** (न्यूनतम)	**25%** (न्यूनतम)
	(ii) मुख्यालय में स्थित अनुभागों का निरीक्षण	**25%** (न्यूनतम)	**25%** (न्यूनतम)	**25%** (न्यूनतम)
	(iii) विदेश में स्थित केंद्र सरकार के स्वामित्व एवं नियंत्रण के अधीन कार्यालयों/उपक्रमों का संबंधित अधिकारियों तथा राजभाषा विभाग के अधिकारियों द्वारा संयुक्त निरीक्षण		वर्ष में कम से कम एक निरीक्षण	
14.	राजभाषा संबंधी बैठकें			
	(क) हिंदी सलाहकार समिति		वर्ष में 2 बैठकें	
	(ख) नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति		वर्ष में 2बैठकें (प्रति छमाही एक बैठक)	
	(ग) राजभाषा कार्यान्वयन समिति		वर्ष में 4 बैठकें (प्रति तिमाही एक बैठक)	
15.	कोड, मैनुअल, फॉर्म, प्रक्रिया साहित्य का हिंदी अनुवाद	**100%**	**100%**	**100%**
16.	मंत्रालयों/विभागों/कार्यालयों/बैंकों/उपक्रमों के ऐसे अनुभाग जहां संपूर्ण कार्य हिंदी में हों ।	**40%**	**30%**	**20%**
			(न्यूनतम अनुभाग) सार्वजनिक क्षेत्र के उन उपक्रमों/निगमों आदि, जहां अनुभाग जैसी कोई अवधारणा नहीं है, "क" क्षेत्र में कुल कार्य का 40%, "ख" क्षेत्र में 25% और "ग" क्षेत्र में 15% कार्य हिंदी में किया जाए ।	

राजभाषा

राजभाषा संकल्प, 1968

"जब तक संविधान के अनुच्छेद 343 के अनुसार संघ की राजभाषा हिंदी रहेगी और उसके अनुच्छेद 351 के अनुसार हिंदी भाषा का प्रसार, वृद्धि करना और उसका विकास करना ताकि वह भारत की सामासिक संस्कृति के सब तत्वों की अभिव्यक्ति का माध्यम हो सके, संघ का कर्तव्य है:

यह सभा संकल्प करती है कि हिंदी के प्रसार एंव विकास की गति बढ़ाने के हेतु तथा संघ के विभिन्न राजकीय प्रयोजनों के लिए उत्तरोत्तर इसके प्रयोग हेतु भारत सरकार द्वारा एक अधिक गहन एवं व्यापक कार्यक्रम तैयार किया जाएगा और उसे कार्यान्वित किया जाएगा और किए जाने वाले उपायों एवं की जाने वाली प्रगति की विस्तृत वार्षिक मूल्यांकन रिपोर्ट संसद की दोनों सभाओं के पटल पर रखी जाएगी और सब राज्य सरकारों को भेजी जाएगी।

1. जबकि संविधान की आठवीं अनुसूची में हिंदी के अतिरिक्त भारत की 21 मुख्य भाषाओं का उल्लेख किया गया है, और देश की शैक्षणिक एवं सांस्कृतिक उन्नति के लिए यह आवश्यक है कि इन भाषाओं के पूर्ण विकास हेतु सामूहिक उपाए किए जाने चाहिए :

   यह सभा संकल्प करती है कि हिंदी के साथ-साथ इन सब भाषाओं के समन्वित विकास हेतु भारत सरकार द्वारा राज्य सरकारों के सहयोग से एक कार्यक्रम तैयार किया जाएगा और उसे कार्यान्वित किया जाएगा ताकि वे शीघ्र समृद्ध हो और आधुनिक ज्ञान के संचार का प्रभावी माध्यम बनें।

2. जबकि एकता की भावना के संवर्धन तथा देश के विभिन्न भागों में जनता में संचार की सुविधा हेतु यह आवश्यक है कि भारत सरकार द्वारा राज्य सरकारों के परामर्श से तैयार किए गए त्रि-भाषा सूत्र को सभी राज्यों में पूर्णत कार्यान्वित करने के लिए प्रभावी किया जाना चाहिए :

   यह सभा संकल्प करती है कि हिंदी भाषी क्षेत्रों में हिंदी तथा अंग्रेजी के अतिरिक्त एक आधुनिक भारतीय भाषा के, दक्षिण भारत की भाषाओं में से किसी एक को तरजीह देते हुए, और अहिंदी भाषी क्षेत्रों में प्रादेशिक भाषाओं एवं अंग्रेजी के साथ साथ हिंदी के अध्ययन के लिए उस सूत्र के अनुसार प्रबन्ध किया जाना चाहिए।

3. और जबकि यह सुनिश्चित करना आवश्यक है कि संघ की लोक सेवाओं के विषय में देश के विभिन्न भागों के लोगों के न्यायोचित दावों और हितों का पूर्ण परित्राण किया जाए।

   यह सभा संकल्प करती है कि-

   क. कि उन विशेष सेवाओं अथवा पदों को छोड़कर जिनके लिए ऐसी किसी सेवा अथवा पद के कर्त्तव्यों के संतोषजनक निष्पादन हेतु केवल अंग्रेजी अथवा केवल हिंदी अथवा दोनों जैसी कि स्थिति हो, का उच्च स्तर का ज्ञान आवश्यक समझा जाए, संघ सेवाओं अथवा पदों के लिए भर्ती करने हेतु उम्मीदवारों के चयन के समय हिंदी अथवा अंग्रेजी में से किसी एक का ज्ञान अनिवार्यत होगा; और

   ख. कि परीक्षाओं की भावी योजना, प्रक्रिया संबंधी पहलुओं एवं समय के विषय में संघ लोक सेवा आयोग के विचार जानने के पश्चात अखिल भारतीय एवं उच्चतर केन्द्रीय सेवाओं संबंधी परीक्षाओं के लिए संविधान की आठवीं अनुसूची में सम्मिलित सभी भाषाओं तथा अंग्रेजी को वैकल्पिक माध्यम के रूप में रखने की अनुमति होगी।"

हिंदी दिवस एवं तृतीय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन, पुणे, महाराष्ट्र

केंद्रीय गृह राज्य मंत्री की अध्यक्षता में 14 व 15 सितंबर, 2023 को श्री शिवा छत्रपति खेल संकुल, पुणे, महाराष्ट्र में हिंदी दिवस, 2023 एवं तृतीय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन का आयोजन किया गया। 14 सितंबर को प्रातः 10 बजे माननीय केंद्रीय गृह राज्य मंत्री श्री अजय कुमार मिश्रा जी ने सम्मेलन का उद्घाटन किया। इस अवसर पर कंठस्थ 2.0 एवं ई-ऑफिस इंटेग्रेशन का लोकार्पण किया गया और राजभाषा कीर्ति पुरस्कार 2022-23 एवं राजभाषा गौरव पुरस्कार 2022-23 के विजेताओं को पुरस्कार वितरित किए गए। यह उल्लेखनीय है कि भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक के कार्यालय को राजभाषा कीर्ति पुरस्कार में 300 से अधिक कार्मिकों वाले मंत्रालयों/विभागों की श्रेणी में प्रथम पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

उद्घाटन सत्र के उपरांत निम्नलिखित विषयों पर सत्र आयोजित किए गए –

1. राजभाषा@2047 : विकसित भारत की भाषायी परिदृश्य
2. हिंदी के विकास में मीडिया की भूमिका
3. रोज़गार के बढ़ते अवसर : हिंदी के परिप्रेक्ष्य में
4. भारतीय भाषाओं से सशक्त होती हिंदी
5. नराकास : राजभाषा कार्यान्वयन का प्रभावशाली मंच
6. सर्वसुलभ, सर्वसमावेशी एवं सर्वव्यापी भाषा – हिंदी
7. भारतीय सिनेमा और हिंदी

15 सितंबर 2023 को अपराहन 05.00 बजे आयोजित समापन सत्र के साथ अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन 2023 संपन्न हुआ।

महालेखाकार (ले व ह), केरल के प्रधान कार्यालय एवं शाखा कार्यालयों में हिंदी दिवस/स्पाह/पखवाड़ा समारोह के आयोजन की रिपोर्ट

प्रधान कार्यालय, तिरुवनंतपुरम

प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I) एवं प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II), केरल के प्रधान कार्यालयों में दिनांक 14.09.2023 से 29.09.2023 तक हिंदी पखवाड़ा समारोह मनाया गया।

हिंदी दिवस का पालन एवं राजभाषा प्रतिज्ञा

14 सितंबर 2023 को हिंदी दिवस का पालन करते हुए अधिकारियों/कर्मचारियों द्वारा राजभाषा प्रतिज्ञा ली गई।

प्रतियोगिताओं का उद्घाटन

18.09.2023 (सोमवार) पूर्वाह्न 10.30 बजे प्रतियोगिताओं का उद्घाटन समारोह आयोजित किया गया। श्री लालू पी के, वरिष्ठ उप महालेखाकार, श्री बिजू जोसफ, वरिष्ठ उप महालेखाकार एवं श्रीमती षेबा पी एच, उप महालेखाकार द्वारा भद्रदीप प्रज्जलित करके प्रतियोगिताओं का शुभारंभ किया गया।

प्रतियोगिताएँ

अधिकारियों/कर्मचारियों के लिए 18.09.2023 से 22.09.2023 तक निम्नलिखित प्रतियोगिताएँ आयोजित की गई।

(1)	निबंध लेखन
(2)	टिप्पण एवं आलेखन
(3)	प्रशासनिक हिंदी
(4)	अंग्रेजी से हिंदी में और विलोमतः अनुवाद
(5)	कथा रचना
(6)	कविता रचना
(7)	कविता पाठ
(8)	आशुभाषण
(9)	हिंदी गीत एकल – महिला
(10)	हिंदी गीत एकल – पुरुष
(11)	समूह गान
(12)	प्रश्नोत्तरी
(13)	अंताक्षरी

राजभाषा जागरूकता कार्यक्रम

26.09.2023 (मंगलवार) को पूर्वाह्न 10.30 बजे से अपराह्न 12.30 बजे तक अधिकारियों के लिए राजभाषा जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया। श्रीमती रंजिनी के आर, सहायक निदेशक (राजभाषा), मुख्य पोस्टमास्टर जनरल कार्यालय, केरल परिमंडल, तिरुवनंतपुरम द्वारा इस कार्यक्रम का संचालन किया गया।

समापन सम्मेलन

हिंदी पखवाड़ा 2023 का समापन सम्मेलन दिनांक 29.09.2023 को आयोजित किया गया। श्री लालू पी के, वरिष्ठ उप महालेखाकार द्वारा सभा का स्वागत किया गया। डॉ बिजू जेकब, प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II), केरल द्वारा अध्यक्षीय भाषण दिया गया। इस अवसर पर श्री लालू पी के, वरिष्ठ उप महालेखाकार, श्रीमती यशोदा, वरिष्ठ उप महालेखाकार एवं श्री बाषा मोहम्मद बी, उप महालेखाकार द्वारा प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार वितरित किए गए। तदुपरांत कार्यालय के कर्मचारियों द्वारा गीत प्रस्तुत किए गए। श्रीमती यशोदा, वरिष्ठ उप महालेखाकार के धन्यवाद ज्ञापन के साथ समारोह संपन्न हुआ।

पुरस्कार वितरण

प्रतियोगिताओं के विजेता

पुरस्कार	विजेता का नाम (श्री/श्रीमती)	पदनाम
	(1) निबंध लेखन	
प्रथम पुरस्कार	पारस कुमार शिवा	सहायक लेखा अधिकारी
द्वितीय पुरस्कार	विशाल आर्या	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
तृतीय पुरस्कार	शांति के	सहायक लेखा अधिकारी
	(2) टिप्पण एवं आलेखन	
प्रथम पुरस्कार	मेरी जया जोस	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
द्वितीय पुरस्कार	कृष्णकला पी आर	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
तृतीय पुरस्कार	संतोष मीना	सहायक लेखा अधिकारी
	(3) प्रशासनिक हिंदी	
प्रथम पुरस्कार	जोण तोमस के	वरिष्ठ लेखापरीक्षक
द्वितीय पुरस्कार	छोटू लाल मीना	सहायक लेखा अधिकारी
तृतीय पुरस्कार	सुमित कुमार	लेखाकार
	(4) अंग्रेज़ी से हिंदी में और विलोमत: अनुवाद	
प्रथम पुरस्कार	जोण तोमस के	वरिष्ठ लेखापरीक्षक
द्वितीय पुरस्कार	श्रुति शर्मा	सहायक लेखा अधिकारी
तृतीय पुरस्कार	छोटू लाल मीना	सहायक लेखा अधिकारी
	(5) कथा रचना	
प्रथम पुरस्कार	उषा बेरटी	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
द्वितीय पुरस्कार	अनुराग शुक्ला	लेखापरीक्षक
तृतीय पुरस्कार	अविनाश नाथ	लेखापरीक्षक
	(6) कविता रचना	
प्रथम पुरस्कार	पारस कुमार शिवा	सहायक लेखा अधिकारी
द्वितीय पुरस्कार	अनुराग शुक्ला	लेखापरीक्षक
तृतीय पुरस्कार	श्रुति शर्मा	सहायक लेखा अधिकारी
	(7) कविता पाठ	
प्रथम पुरस्कार	उषा बेरटी	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
द्वितीय पुरस्कार	सुशीला पी वी	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
तृतीय पुरस्कार	रश्मि आर नायर	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
	(8) आशुभाषण	
प्रथम पुरस्कार	अभिषेक कुमार	लेखाकार
द्वितीय पुरस्कार	पारस कुमार शिवा	सहायक लेखा अधिकारी
तृतीय पुरस्कार	अविनाश नाथ	लेखापरीक्षक

(9) हिंदी गीत एकल – महिला		
प्रथम पुरस्कार	शोभा कुमार बी	सहायक लेखा अधिकारी
द्वितीय पुरस्कार	राजी राजन	सहायक लेखा अधिकारी
तृतीय पुरस्कार	निशा राजेंद्रन	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
(10) हिंदी गीत एकल – पुरुष		
प्रथम पुरस्कार	अरुण सी भास	साहायक पर्यवेक्षक
द्वितीय पुरस्कार	अनुराग शुक्ला	लेखापरीक्षक
तृतीय पुरस्कार	जोण तोमस के	वरिष्ठ लेखापरीक्षक
(11) समूह गान		
प्रथम पुरस्कार	**शैनी जोस एवं टीम**	
	शैनी जोस, सहायक पर्यवेक्षक	कुञ्ञूञम्मा, पर्यवेक्षक
	रजीना वी आर, सहायक लेखा अधिकारी	षीना राणी, वरिष्ठ लेखाकार
	राजी राजन, सहायक लेखा अधिकारी	
द्वितीय पुरस्कार	**उषा बेरटी एवं टीम**	
	उषा बेरटी, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	निशा राजेन्द्रन, सहायक ले.प. अधिकारी
	निशा, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	अरुण सी भास, सहायक पर्यवेक्षक
	बाट्टन जोर्ज, सहायक ले.प. अधिकारी	
तृतीय पुरस्कार	**शोभा कुमार एवं टीम**	
	शोभाकुमार बी, सहायक लेखा अधिकारी	एल प्रसन्नाकुमारी, सहायक पर्यवेक्षक
	कृष्णकुमार के, वरिष्ठ लेखापरीक्षक	अभिषेक कुमार, लेखाकार
	जोण तोमस के, वरिष्ठ लेखापरीक्षक	
(12) प्रश्नोत्तरी		
प्रथम पुरस्कार	षाजी वी एस	वरिष्ठ लेखापरीक्षक
	लैना सी एन	वरिष्ठ लेखापरीक्षक
द्वितीय पुरस्कार	संतोष मीना	सहायक लेखा अधिकारी
	लोकेश कुमार मीना	सहायक लेखा अधिकारी
तृतीय पुरस्कार	विजय कुमार	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
	भावना सोनी	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
(13) अंताक्षरी		
प्रथम पुरस्कार	अभिषेक कुमार	लेखाकार
	विकास कुमार	डी ई ओ
द्वितीय पुरस्कार	विनीत कुमार	वरिष्ठ लेखाकार
	आशीष कुमार	वरिष्ठ लेखापरीक्षक
तृतीय पुरस्कार	विशाल आर्या	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
	भावना सोनी	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

हिंदी पखवाड़ा समारोह 2023 : शाखा कार्यालय, तृश्शूर

शाखा कार्यालय, तृशूर में दिनांक 14.09.2023 से 29.09.2023 तक लेखापरीक्षा एवं लेखा व हकदारी स्कंधों के संयुक्त तत्वाधान में हिंदी पखवाड़ा समारोह 2023 मनाया गया।

14 सितंबर 2023 को हिंदी दिवस के रूप में मनाया गया। हिंदी पखवाडा समारोह तथा प्रतियोगिताओं का उद्घाटन भी इसी दिन हुआ। समारोह का शुभारंभ प्रार्थना के साथ हुआ। श्री आकाश मिश्रा, कनिष्ठ हिंदी अनुवादक ने हिंदी की प्रोत्साहन भरी पंक्तियों के साथ समारोह का संचालन किया। श्रीमती गेळी कृष्णा, हिंदी अधिकारी (ले व ह) ने अपने स्वागत भाषण में राजभाषा हिंदी को गति देने के लिए समस्त कर्मचारी-वृंद को प्रेरित किया। श्री सी अच्युतमेनोन सरकारी कॉलेज, कुट्टनेल्लूर में प्रोफेसर एवं हिंदी विभागाध्यक्ष श्रीमती डॉ आशा इस अवसर पर मुख्य अतिथि रहीं। उन्होंने दीप प्रज्ज्वलित करके कार्यक्रम का उद्घाटन किया। डॉ आशा ने कर्मचारियों में राजभाषा जागरूकता पैदा करने के लिए अपने वक्तव्य में ज़ोर दिया तथा हिंदी की महत्ता को बताते हुए कर्मचारियों का ज्ञानवर्द्धन किया। माननीय गृह मंत्री जी श्री अमित शाह द्वारा हिंदी दिवस के अवसर पर दिया गया संदेश कर्मचारियों को श्री ओमप्रकाश डोई, वरिष्ठ हिंदी अनुवादक द्वारा प्रसारित किया गया। श्री भोमेन्द्र सिंह, कनिष्ठ हिंदी अनुवादक ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

हिंदी पखवाडे के दौरान हिंदी में छ: प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं। जिनमें टिप्पण व आलेखन, अनुवाद, हिंदी निबंध, हिंदी गीत (पुरुष-महिला) एवं हिंदी प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिताएं थीं। हिंदी गीत (पुरुष-महिला) एवं हिंदी प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिताएं अतिथि निर्णायक-मण्डली की निगरानी में संपन्न हुआ। कार्यालय के कर्मचारियों ने इन प्रतियोगिताओं में अशेष उत्साह के साथ भाग लिया।

समापन समारोह दिनांक 29.09.2023 को अपराह्न 02.00 बजे श्री बीजू जोसफ, वरिष्ठ उप महालेखाकार (ले व ह) की अध्यक्षता में संपन्न हुआ। समापन समारोह का शुभारंभ प्रार्थना के साथ हुआ। श्री आकाश मिश्रा, कनिष्ठ हिंदी अनुवादक ने मंच का संचालन किया। श्री विष्णु एस पी, कनिष्ठ हिंदी अनुवादक ने स्वागत भाषण दिया। श्री बिजू जोसफ, वरिष्ठ उप महालेखाकार (ले व ह) ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कर्मचारियों को अपने दैनिक काम-काज में राजभाषा हिंदी का प्रयोग करने का आह्वान किया। श्री राहुल पी, उप महालेखाकार (लेखापरीक्षा-1) इस हिंदी पखवाडा समारोह के संयोजक रहें तथा उन्होंने कार्यालय के कर्मचारियों को हिंदी का प्रचार ऐसे आयोजनों तक सीमित न रखकर अपने दैनिक जीवन का भाग बनाने के प्रेरणादायी उद्धरणों के साथ आशीर्वाद भाषण दिया। कार्यक्रम के दौरान श्री भोमेन्द्र सिंह, कनिष्ठ हिंदी अनुवादक द्वारा विजेताओं के नाम की घोषणा की गई। श्री बीजू जोसफ, वरिष्ठ उप महालेखाकार (ले व ह) एवं श्री राहुल पी, उप महालेखाकार (लेखापरीक्षा-1) ने विविध प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार प्रदान किए। इस अवसर पर हिंदी गीत प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार विजेता श्री सदानंदन ने हिंदी गीत गाए। श्रीमती षीबा ने हिंदी फिल्मी गीत गाकर सभा का मनोरंजन किया। श्रीमती गोपिका ने हिंदी शीर्षक से संबंधित कविता का पाठ किया। श्रीमती गेळी कृष्णा, हिंदी अधिकारी (ले व ह) ने समारोह में सहयोग देने वाले सभी पदधारियों का आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम अपराह्न 3:30 बजे संपन्न हुआ।

प्रधान महालेखाकार के कार्यालय,
केरल, शाखा तृशूर
OFFICES OF THE PRINCIPAL ACCOUNTANTS GENERAL,
KERALA, BRANCH THRISSUR
हिंदी पखवाड़ा समारोह
HINDI FORTNIGHT CELEBRATION
समापन समारोह
VALEDICTORY FUNCTION

प्रतियोगिताओं के विजेता

पुरस्कार	विजेता का नाम (श्री/श्रीमती)	पदनाम
(1) निबंध लेखन		
प्रथम पुरस्कार	अंजना रवि	लेखापरीक्षक
द्वितीय पुरस्कार	वी बिजु श्रीधर	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
तृतीय पुरस्कार	जोजु एफ्रैम	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
(2) टिप्पण एवं आलेखन		
प्रथम पुरस्कार	सिंधु यू पी	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
द्वितीय पुरस्कार	वी बिजु श्रीधर	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
तृतीय पुरस्कार	अंजना रवि	लेखापरीक्षक
(3) अंग्रेज़ी से हिंदी में और विलोमत: अनुवाद		
प्रथम पुरस्कार	वी बिजु श्रीधर	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
द्वितीय पुरस्कार	सिंधु यू पी	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
तृतीय पुरस्कार	जोजु एफ्रैम	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
(4) हिंदी गीत एकल –पुरुष		
प्रथम पुरस्कार	सदानंदन के	सहायक पर्यवेक्षक
द्वितीय पुरस्कार	प्रसाद वी के	वरिष्ठ लेखाकार
तृतीय पुरस्कार	शिवदास	वरिष्ठ लेखाकार
(5) हिंदी गीत एकल – महिला		
प्रथम पुरस्कार	अंजना रवि	लेखापरीक्षक
द्वितीय पुरस्कार	नीनू एम डी	वरिष्ठ लेखापरीक्षक
तृतीय पुरस्कार	मंजू सी	वरिष्ठ लेखापरीक्षक
(12) प्रश्नोत्तरी		
प्रथम पुरस्कार	वी बिजु श्रीधर	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
	नीनू एम डी	वरिष्ठ लेखापरीक्षक
द्वितीय पुरस्कार	जोजु एफ्रैम	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
	नितिन के	लेखापरीक्षक
तृतीय पुरस्कार	अंजना रवि	लेखापरीक्षक
	आर्या एस	लेखापरीक्षक

हिंदी सप्ताह समारोह 2023 : शाखा कार्यालय, कोषिकोड़

शाखा कार्यालय, कोषिकोड़ में हिंदी सप्ताह समारोह 2023 का उदघाटन 14.09.2023 को सुबह 11 बजे मनोरंजन क्लब हॉल में प्रधान महालेखाकारों के कार्यालय लेखापरीक्षा और ले व ह के द्वारा संयुक्त रूप से भव्य तौर पर आयोजित किया गया। समारोह का शुभारंभ श्री विजयन एम टी, सहायक लेखा अधिकारी, के सुपुत्र मास्टर निरंजन द्वारा गाई गई प्रार्थना से हुई। श्री विजयन एम टी, सहायक लेखा अधिकारी ने सभा का स्वागत किया। हिंदी समारोह 2023 का उद्घाटन श्री लीलाधरन पी वी, वरिष्ठ लेखा अधिकारी ने राजभाषा सीखने और उसमें कार्य करने के बारे में प्रेरक भाषण देकर किया। इस अवसर पर श्री राजेष सी, वरिष्ठ लेखा अधिकारी और श्रीमती सुजाता पी, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी उपस्थित थे और समारोह के परिचय के प्रतीक के रूप में दोनों अधिकारियो द्वारा दीप प्रज्ज्वलित किया गया। श्री राजन सी, वरिष्ठ लेखा अधिकारी, श्री बालतिलकन टी पी, सहायक लेखा अधिकारी, श्री गोपिनाथ पी, सेवानिवृत्त सहायक पर्यवेक्षक ने हिंदी गाने गाए। श्री दिलषित गिरीष पी, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी ने धन्यवाद जापन किया।

निबंध लेखन, अनुवाद और टिप्पण व आलेखन प्रतियोगिताओं का आयोजन 15.09.2023 को किया गया था। प्रत्येक प्रतियोगिता में छः-छः प्रतिभागियों ने भाग लिया। लिखित प्रतियोगिताओं के संचालन और मूल्यांकन के लिए हमारे कार्यालय के सेवानिवृत्त वरिष्ठ लेखाकार श्री नंदकुमार पी को निर्णायक के रूप में आमंत्रित किया गया था। इसमें सभी कर्मचारियों की सक्रिय भागीदारी और सहयोग था।

प्रतियोगिताओं के विजेता

पुरस्कार	विजेता का नाम (श्री/श्रीमती)	पदनाम
(1) निबंध लेखन		
प्रथम पुरस्कार	विजयन एम टी	सहायक लेखा अधिकारी
द्वितीय पुरस्कार	बालतिलकन टी पी	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
तृतीय पुरस्कार	उषा गणपति पी पी	सहायक लेखा अधिकारी
(2) अनुवाद		
प्रथम पुरस्कार	विजयन एम टी	सहायक लेखा अधिकारी
द्वितीय पुरस्कार	श्री दिलषित गिरीश	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
तृतीय पुरस्कार	बालतिलकन टी पी	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
(3) टिप्पण एवं आलेखन		
प्रथम पुरस्कार	विजयन एम टी	सहायक लेखा अधिकारी
द्वितीय पुरस्कार	श्री दिलषित गिरीश	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
तृतीय पुरस्कार	ग्रेसी बाबु	सहायक लेखा अधिकारी

हिंदी दिवस समारोह 2023 : शाखा कार्यालय, एरणाकुलम

प्रधान महालेखाकार (ले व ह), केरल के शाखा कार्यालय, एरणाकुलम में 14.09.2023 को हिंदी दिवस समारोह 2023 का आयोजन किया गया। हिंदी दिवस समारोह से संबंध में 13.09.2023 को कार्यालय के कर्मचारियों के लिए दो प्रतियोगिताएं (पोस्टर डिजाइनिंग एवं प्रशासनिक शब्दावली) आयोजित की गई।

13.09.2023 को शाम 4.00 बजे श्री बिजु पी सी, वरिष्ठ लेखा अधिकारी द्वारा पोस्टर डिजाइनिंग प्रतियोगिता के विजेताओं की घोषणा की गई और श्री मनोज पी सी, वरिष्ठ लेखा अधिकारी द्वारा प्रशासनिक शब्दावली प्रतियोगिता के विजेताओं की घोषणा की गई।

14.09.2023 को पूर्वाह्न 11.00 बजे कार्यालय के कांफ्रेन्स हॉल में हिंदी दिवस समारोह का आयोजन किया गया । कार्यक्रम का संचालन श्रीमती रेणुका जोशी, कनिष्ठ हिंदी अनुवादक द्वारा किया गया । श्रीमती रेणुका जोशी, कनिष्ठ हिंदी अनुवादक द्वारा प्रार्थना से कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया । श्रीमती लक्ष्मिप्रिया, सहायक लेखा अधिकारी द्वारा सभा का स्वागत किया गया। श्री बिजु पी सी, वरिष्ठ लेखा अधिकारी द्वारा सभा में उपस्थित कर्मचारियों एवं अधिकारियों को राजभाषा प्रतिज्ञा दिलाई गई। कार्यक्रम के दौरान 13.09.2023 को आयोजित प्रतियोगिताओं के विजेताओं को नकद पुरस्कार से सम्मानित किया गया। श्रीमती प्रभा एल, सहायक लेखा अधिकारी द्वारा कार्यक्रम में उपस्थित सभी को धन्यवाद ज्ञापित किया गया । राष्ट्रगान से कार्यक्रम का समापन किया गया।

प्रतियोगिताओं के विजेता

पुरस्कार	विजेता का नाम (श्री/श्रीमती)	पदनाम
	(1) पोस्टर डिजाइनिंग	
प्रथम पुरस्कार	विद्या मोहनलाल	वरिष्ठ लेखाकार
द्वितीय पुरस्कार	लक्ष्मिप्रिया टी जी	सहायक लेखा अधिकारी
तृतीय पुरस्कार	अंड्रिया लूइज	वरिष्ठ लेखाकार
	(2) प्रशासनिक शब्दावली	
प्रथम पुरस्कार	लक्ष्मिप्रिया टी जी	सहायक लेखा अधिकारी
द्वितीय पुरस्कार	शोभनाकुमारी वी आर	सहायक पर्यवेक्षक
तृतीय पुरस्कार	प्रभा एल	सहायक लेखा अधिकारी

हिंदी दिवस समारोह 2023 – शाखा कार्यालय, कोट्टयम

प्रधान महालेखाकार (ले व ह) का कार्यालय, केरल के शाखा कार्यालय कोट्टयम में 14.09.2023 को हिंदी दिवस समारोह 2023 आयोजन किया गया । हिंदी दिवस समारोह के संबंध में 13.09.2023 को कार्यालय के कर्मचारियों के लिए दो प्रतियोगिताएँ (पोस्टर डिजाइनिंग एवं प्रशासनिक शब्दावली) आयोजित की गई ।

श्रीमती सेतुलक्ष्मी टी एस, वरिष्ठ लेखा अधिकारी द्वारा 13.09.2023 को शाम 4.00 बजे पोस्टर डिजाइनिंग एवं प्रशासनिक शब्दावली प्रतियोगिता के विजेताओं की घोषणा की गई।

14.09.2023 को पूर्वाह्न 11.00 बजे कार्यालय के कांफ्रेन्स हॉल में हिंदी दिवस समारोह का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का संचालन श्रीमती संध्या एस, हिंदी अधिकारी द्वारा किया गया। श्रीमती सिंधु सी सी, सहायक लेखा अधिकारी द्वारा प्रार्थना से कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया । श्री जयराम टी, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी द्वारा सभा का स्वागत किया गया। श्रीमती सेतुलक्ष्मी टी एस, वरिष्ठ लेखा अधिकारी द्वारा अध्यक्षीय भाषण एवं श्री डेन सी जार्ज, वरिष्ठ लेखा अधिकारी द्वारा आशीर्वाद भाषण दिया गया। श्रीमती सेतुलक्ष्मी टी एस, वरिष्ठ लेखा अधिकारी द्वारा सभा में उपस्थित सभी कर्मचारियों एवं अधिकारियों को राजभाषा प्रतिज्ञा दिलाई गई । कार्यक्रम के दौरान 13.09.2023 को आयोजित पोस्टर डिजाइनिंग एवं प्रशासनिक शब्दावली प्रतियोगिताओं के विजोताओं को नकद पुरस्कार से सम्मानित किया गया । श्री तंकच्चन टी, सहायक लेखा अधिकारी द्वारा कार्यक्रम में उपस्थित सभी को धन्यवाद ज्ञापित गया। राष्ट्रगान से कार्यक्रम का समापन किया गया।

प्रतियोगिताओं के विजेता

पुरस्कार	विजेता का नाम (श्री/श्रीमती)	पदनाम
(1) पोस्टर डिजाइनिंग		
प्रथम पुरस्कार	जिनु अब्राहम	सहायक पर्यवेक्षक
द्वितीय पुरस्कार	श्रीप्रसाद	वरिष्ठ लेखाकार
तृतीय पुरस्कार	जयिन एस	वरिष्ठ लेखाकार
(2) प्रशासनिक शब्दावली		
प्रथम पुरस्कार	जयिन एस	वरिष्ठ लेखाकार
द्वितीय पुरस्कार	सिंधु सी सी	सहायक लेखा अधिकारी
तृतीय पुरस्कार	डैस्सम्मा राजू	सहायक पर्यवेक्षक

ओणम

सम्मेलन हॉल

AG's OFFICE STAFF RECREATION CLUB
THIRUVANANTHAPURAM

THIRUVANANTHAPURAM

AG's OFFICE STAFF RECREATION CLUB
THIRUVANANTHAPURAM

01.04.2023 से 30.09.2023 की अवधि के दौरान सेवानिवृत्त अधिकारियों एवं कर्मचारियों की सूची			
क्र.सं.	नाम (श्री / श्रीमती)	पदनाम	सेवानिवृत्ति की तारीख
1.	रघुनाथन पी सी	वरिष्ठ लेखा अधिकारी	30.04.2023
2.	सीतारामन वी	वरिष्ठ लेखा अधिकारी	30.04.2023
3.	शिवदासन के के	वरिष्ठ लेखा अधिकारी	30.04.2023
4.	सजीव पी के	सहायक लेखा अधिकारी	30.04.2023
5.	प्रसन्ना कुमारी टी एस	सहायक लेखा अधिकारी	30.04.2023
6.	भास्करन ए के	पर्यवेक्षक	30.04.2023
7.	बालचंद्रन एम	पर्यवेक्षक	30.04.2023
8.	बीना एम सी	सहायक पर्यवेक्षक	30.04.2023
9.	अनिल कुमार जी	वरिष्ठ लेखा अधिकारी	31.05.2023
10.	जोय पालयूर	वरिष्ठ लेखा अधिकारी	31.05.2023
11.	वल्सला एम मेनोन	वरिष्ठ लेखा अधिकारी	31.05.2023
12.	अशोक कुमार एम आर	वरिष्ठ लेखा अधिकारी	31.05.2023
13.	जयदेव के पी	वरिष्ठ लेखा अधिकारी	31.05.2023
14.	ख़ासिम कीत्तडत्त	वरिष्ठ लेखा अधिकारी	31.05.2023
15.	जोर्ज के के	वरिष्ठ लेखा अधिकारी	31.05.2023
16.	ज़ेवियर पी जी	वरिष्ठ लेखा अधिकारी	31.05.2023
17.	विनोद कुमार बी	सहायक लेखा अधिकारी	31.05.2023
18.	शशि पी वी	सहायक लेखा अधिकारी	31.05.2023
19.	अजयकुमार पूवत्तुमचाल	सहायक लेखा अधिकारी	31.05.2023
20.	बालकृष्णन नेडुविलकंडी	सहायक लेखा अधिकारी	31.05.2023
21.	राधाकृष्णन ए वी	पर्यवेक्षक	31.05.2023
22.	अनिल कुमार के एस	पर्यवेक्षक	31.05.2023
23.	चंद्रन आर	सहायक पर्यवेक्षक	31.05.2023
24.	सतीश चंद्रन के	सहायक पर्यवेक्षक	31.05.2023
25.	सुंदरम के आर	सहायक पर्यवेक्षक	31.05.2023
26.	नागेंद्रन के	सहायक पर्यवेक्षक	31.05.2023
27.	राधा एस	सहायक पर्यवेक्षक	31.05.2023
28.	सिबी तोमस	सहायक पर्यवेक्षक	31.05.2023

29.	राधाकृष्णन सी के	सहायक पर्यवेक्षक	31.05.2023
30.	श्रीकुमार के आर	सहायक पर्यवेक्षक	30.06.2023
31.	शकर नाइक एस के	वरिष्ठ लेखा अधिकारी	30.06.2023
32.	वर्गीस मांगन	सहायक लेखा अधिकारी	30.06.2023
33.	जया एल	सहायक लेखा अधिकारी	30.06.2023
34.	जेस्सम्मा जोसफ	सहायक लेखा अधिकारी	30.06.2023
35.	मधुसूदनन के एम	सहायक लेखा अधिकारी	30.06.2023
36.	मधुसूदनन पी	सहायक लेखा अधिकारी	30.06.2023
37.	सुकुमारन के एम	पर्यवेक्षक	30.06.2023
38.	मोहनकुमार पी	सहायक पर्यवेक्षक	30.06.2023
39.	कविता सुरेश	सहायक पर्यवेक्षक	30.06.2023
40.	गीता ई के	वरिष्ठ लेखा अधिकारी	31.07.2023
41.	वेंकटरामन एम	वरिष्ठ लेखा अधिकारी	31.07.2023
42.	मात्यु पी जे	वरिष्ठ लेखा अधिकारी	31.07.2023
43.	संतोष पी एस	सहायक लेखा अधिकारी	31.07.2023
44.	गोपकुमारन तंपी के बी	सहायक लेखा अधिकारी	31.07.2023
45.	लक्ष्मणन के के	सहायक लेखा अधिकारी	31.07.2023
46.	राधाकृष्णन पी टी	सहायक लेखा अधिकारी	31.07.2023
47.	जयंती पी जी	सहायक लेखा अधिकारी	31.07.2023
48.	प्रेमनाथ एन वी	सहायक लेखा अधिकारी	31.07.2023
49.	शशिकुमार एम	पर्यवेक्षक	31.07.2023
50.	परमेश्वरन एन बी	सहायक पर्यवेक्षक	31.07.2023
51.	संतोष कुमार ई के	सहायक लेखा अधिकारी	31.08.2023
52.	रामकुमार एस पी	सहायक पर्यवेक्षक	30.09.2023

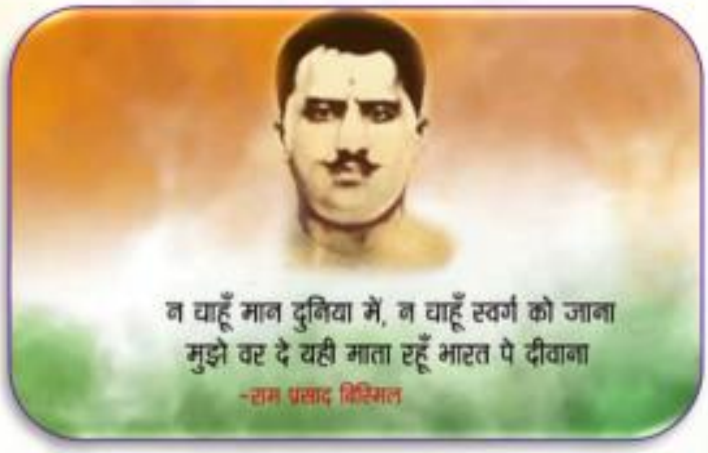

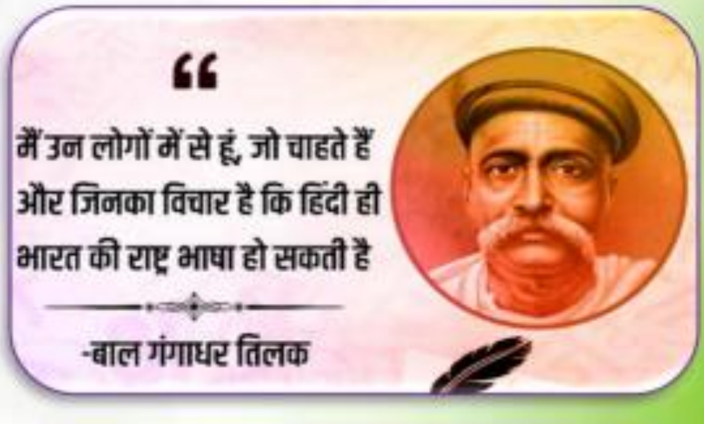

हिंदी सिर्फ हमारी भाषा नहीं,
हमारी पहचान भी है।
तो आइए हिंदी बोलें,
हिंदी सीखें और हिंदी सिखाएं।

आतिरप्पल्ली जल प्रपात, तृश्शूर

पालक्काड फोर्ट, पालक्काड़

निलंबूर टीक म्यूज़ियम, मलप्पुरम

समुद्र तट, कोषिकोड़

तामरश्शेरी चुरम, वयनाड़

तलश्शेरी फोर्ट, कण्णूर

बेकल फोर्ट, कासरगोड़

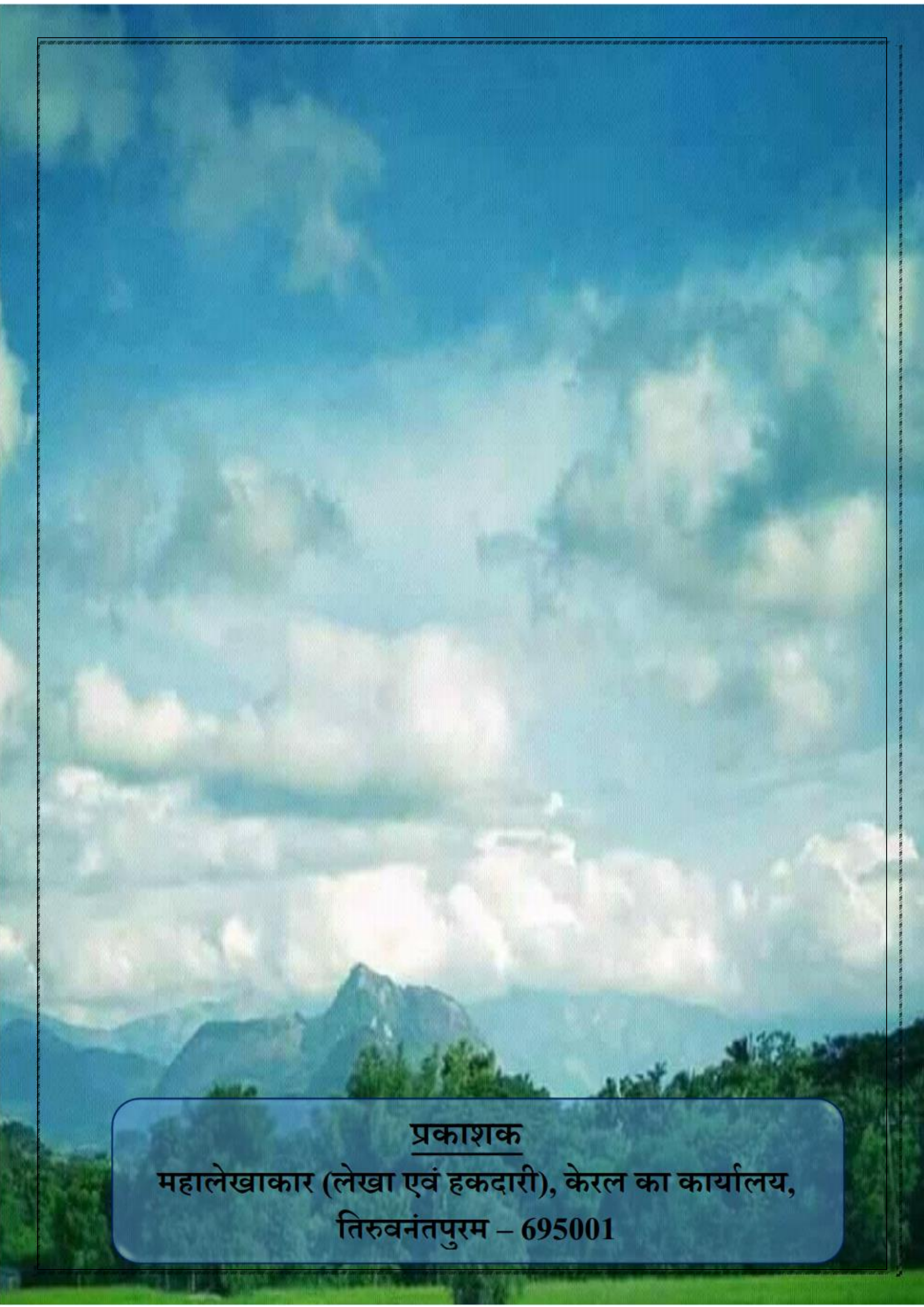

प्रकाशक

महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), केरल का कार्यालय,

तिरुवनंतपुरम – 695001